आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ||

सहज और सरल लक्ष्मीप्राप्ति का : अन्नपूर्णा शंख प्रयोग

वाणी, मन एवं मुख दोष निवारण हेतु : अनन्त चतुर्दशी सा.

बल, बुद्धि, शौर्य प्राप्ति हेतु : हनुमान सिद्धि प्रयोग

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
पूजनीया माताजी
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक
राजेश कुमार गुप्ता
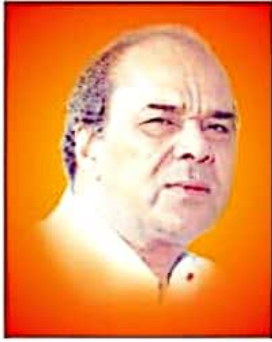
सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

आयुर्वेद

स्तोत्र

योग

उपहार दीक्षा
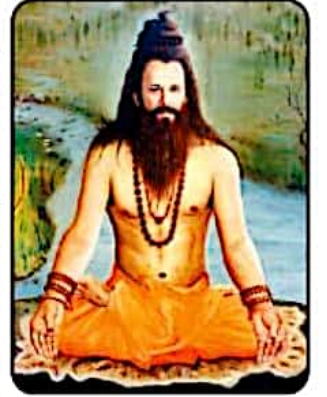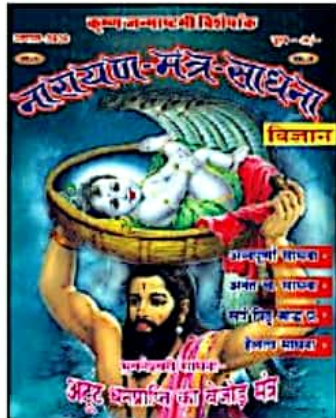
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
दीवान पब्लिकेशन प्राईवेट लिमिटेड
A-6/1, मायापुरी, फेस-1,
नई दिल्ली-110064
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय
हाई कोर्ट कॉलोनी जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)
एक प्रति 40/-
वार्षिक 405/-

सम्पर्क
सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-27354368, 011-27352248
नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039
WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

अभ्यर्थिनां नश शिरोत्तशानां,
सत्साधकानां ननु भागधेयं।
तन्नौमि निखिलेश्वर देवदेवं,
यस्मिन प्रसन्ने सकलार्थ सिद्धिः।।

भौतिक और आध्यात्मिक कामनाओं की पूर्ति हेतु श्री चरणों में झुके हुए श्रेष्ठतम साधकों के सौभाग्य रूप, देवाधिदेव गुरुदेव निखिल के श्री चरणों में भक्तिभावयुक्त प्रणामांजलि अर्पित करता हूँ। जिनकी प्रसन्नता से सिद्धियां स्वतः फलीभूत होती हैं। अन्य देवी-देवताओं की आराधना या उपासना से कुछ भी प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता, क्योंकि सभी शक्ति तत्वों में गुरु ही समाहित होकर चेतना पुंज को प्रदान करते हैं।

गुरु कृपा ही केवलम्

शंकराचार्य के पास गिरि नामक एक ब्राह्मण बालक उनकी सेवा में था। निरक्षर होते हुए भी गिरि अत्यन्त सेवाभावी, मृदुभाषी एवं विनीत था। वह पूर्ण मनोयोग से सेवा करता था। यद्यपि कि वह आचार्य के उपदेशों को समझ नहीं पाता था फिर भी ध्यानपूर्वक सुनता था।

एक दिन प्रवचन के समय आचार्य रुककर इधर-उधर देखने लगे। उन्होंने पूछा, आज गिरि दिखायी नहीं पड़ रहा है। इस पर कुछ शिष्यों ने कहा कि, नदी के किनारे कपड़ा साफ कर रहा होगा।

अपने आपको श्रेष्ठ समझने वाले कुछ पढ़े-लिखे शिष्यों ने व्यंग से कहा, कि गुरुदेव आप उपदेश दीजिए। गिरि तो अनपढ़ है वह तो समझ भी नहीं पायेगा फिर उसका इन्तजार क्यों कर रहे हैं? आचार्य ने कहा, कि उसे आने दो। भले ही वह कुछ न समझे, पर बड़ी लगन के साथ वह उपदेश सुनता है।

गिरि की गुरु-भक्ति एवं उसकी सेवा से आचार्य प्रसन्न थे। उस पर आचार्य की ऐसी कृपा हो गई, कि उसी क्षण वह सर्वविद्या का ज्ञाता हो गया। गुरु के वस्त्रों को साफ करने के बाद 'त्रोटक' छन्द में गुरु-महात्म्य परक एक स्तोत्र की रचना करते हुए तथा गुनगुनाते हुए गिरि आचार्य के समीप उपस्थित हुआ तथा उसी स्तोत्र का पाठ किया। अनपढ़ गिरि की इस प्रतिभा को देखकर सभी शिष्य आश्चर्यचकित रह गये। गुरु-कृपा से एक क्षण में ही उसने सब कुछ प्राप्त कर लिया। आगे चलकर यही गिरि 'त्रोटकाचार्य' के नाम से विख्यात हुआ, जो शंकराचार्य के चार प्रमुख शिष्यों में एक था तथा ज्योतिर्मठ का आचार्य बना।

सद्गुरुदेव की पुकार

जागो और आगे बढ़ो

जीवन पौरुष के साथ जीने के लिये प्राप्त हुआ है और यह पौरुष गुरु द्धारा प्रदत्त ज्ञान को पूर्ण रूप से पकड़ कर ही प्राप्त हो सकता है। सद्गुरु हर जीवन में साथ रहते हुए उस मार्ग पर ले जाते हैं जो पूर्णता का, पौरुष का मार्ग है। शिष्यों को चेतना देता हुआ यह ओजस्वी प्रवचन सद्गुरुदेव के अपने निराले अंदाज में

लक्ष्मी वदैव वदितं सदैव
पूर्णोवतां वं परिपूर्ण रूपं
आगच्छ मां भवतु वै परमं प्रसादं
ज्ञानं विचै क्षण वतां परमं च दिव्यं।

'विश्वामित्र संहिता' में महर्षि विश्वामित्र अपनी ओजस्वी वाणी में मगर अत्यंत नम्र शब्दों में भगवती लक्ष्मी की प्रार्थना करते हुए, चिन्तन करते हुए, नमन करते हुए कहते हैं कि

इसमें कोई संदेह नहीं रहा है कि मैं जिस विशिष्ट प्रयोग को प्रारंभ कर रहा हूँ उसे मैंने उर्ध्वचिता ज्ञान से प्राप्त किया है। इसलिए इस बात में तो कोई संदेह नहीं है कि तुम्हें अपने अष्ट स्वरूप में मेरे घर में स्थापित होना ही है। मगर प्रार्थना मेरी यह है कि सभी प्रकार से संपन्नता आने के बाद भी मुझ में अहं भाव नहीं आए, मुझ में कुमार्ग पर चलने की भावना नहीं पैदा हो, मैं सही अर्थों में उस धन का सदुपयोग करूं और जीवन में यश, सम्मान, प्रसिद्धि और पूर्वजों के गौरव को ऊंचाई की ओर अग्रसर कर सकूं। मैं ऐसा ही आशीर्वाद हे भगवती लक्ष्मी तुमसे चाहता हूँ।

मैं भी अपने शिष्यों को ऐसा ही आशीर्वाद प्रदान करता हूं कि उन्हें जीवन में पूर्णता एवं दिव्यता प्राप्त हो।

विश्वामित्र ने तंत्र और मंत्र के द्वारा जीवन में उच्चता एवं श्रेष्ठता को प्राप्त किया।

तंत्र का यह तात्पर्य नहीं है कि आप नंगे रहें या मुण्डों की माला पहन लें या श्मशान में बैठ जाएं या अपने ऊपर राख लपेट लें या शराब-सिगरेट पीएं। तंत्र का मतलब यह है ही नहीं। मेरे पूरे तांत्रिक जीवन में मैंने तो कभी कोई नशा नहीं किया।

तंत्र का तात्पर्य यह है कि अत्यंत व्यवस्थित तरीके से कार्य संपन्न हो। सिस्टमैटिक हो। हम प्रजातंत्र में रहते हैं, यह भी तंत्र है। जब प्रजा का राज्य सुचारु रूप से चले उसे प्रजातंत्र कहते हैं। अगर राजा का राज्य सुचारु रूप से चले उसे राजतंत्र कहते हैं और हम सही ढंग से लक्ष्मी को प्राप्त करें उसे लक्ष्मी तंत्र कहते हैं।

महर्षि विश्वामित्र ने ऊर्ध्वचेता रूप से लक्ष्मी तंत्र का निर्माण किया और अद्वितीय संपन्न बन सके।

उर्ध्वचेता का अर्थ है मनुष्य उस आध्यात्मिक उच्चता को प्राप्त कर सके जिसे पूर्णमद: पूर्णमिदं कहा गया है और मनुष्य का तात्पर्य है जो श्मशान की ओर हर कदम बढ़ा रहा है जब पैदा होता है मनुष्य तो उसका पहला कदम मृत्यु की ओर बढ़ता है। उसकी उम्र अगर चौसठ साल तेइस दिन है तो जन्म के दूसरे दिन चौसठ साल बाइस दिन होगी और धीरे-धीरे वह एक-एक इंच मृत्यु की ओर अग्रसर होगा। इसको मनुष्य कहते हैं।

मगर यह जीवन नहीं है। श्मशान की ओर जाने वाला जीवन नहीं कहलाता। जो पैदा हुआ है वह मृत्यु को प्राप्त होगा ही। मगर यह जरूरी नहीं है

क्योंकि मुझे बहुत अच्छी तरह ज्ञात है कि वशिष्ट अभी मरे नहींक्योंकि उनका नाम आपको और मुझको याद है। उनके बेटे का नाम मुझे याद नहीं, आपको भी नहीं। विश्वामित्र अभी मरे नहीं, अत्रि मरे नहीं, कणाद, पुलस्त्य, शंकराचार्य, भगवान बुद्ध, महावीर स्वामी मरे नहीं, विशुद्धानंद समाप्त हुए नहीं।

ये सभी जीवित हैं। जीवित का तात्पर्य है जिनकी कीर्ति जीवित रहती है, जिनका यश जीवित रहता है। जीवित कब रहता है? तब जब जीवन के पथ पर चलते-चलते कभी सद्गुरु मिल जाएं।

मगर उसमें भी दो स्थितियाँ हैं या तो तुम उसके पास से निकल जाओ, उसको नहीं पहचान सकोक्योंकि तुम्हारे पास वह दृष्टि तो है ही नहीं और तुम पास में से निकल कर श्मशान तक पहुंच सकते हो और तुम्हारे पिताजी के साथ ऐसा ही हुआ। उनको जीवन में कोई सद्गुरु जरूर मिले होंगे, यह हो ही नहीं सकता सद्गुरु से भेंट नहीं हुई हो। यह हो सकता है कि उन्होंने पहचानने में गलती कर दी हो और पास में से निकल गए हों और श्मशान में जाकर सो गए। तुम्हारे दादाजी के साथ भी यह घटना घटी, तुम्हारे परदादा के साथ भी यही घटना घटी और तुम्हारे साथ भी यही घटना घट सकती है।

मगर यदि बीच में कोई सद्गुरु मिल जाएं तो उनके चरण पकड़ लेना। मैंने शब्द प्रयोग किया है सद्गुरु, गुरु नहीं। गुरु वह कहलाता है जो छल भी कर सकता है, पाखंड भी कर सकता है, ढोंग भी कर सकता है। ऐसे गुरु तुम्हें प्रत्येक गली और मोहल्ले में मिल जायेंगे।

एक बार कुछ वर्ष पहले दिल्ली गए तो तुम्हारी माताजी ने कहा हरिद्वार जाकर स्नान कर आते हैं। कार में ले नहीं गया था तो बस में गए। बस में बैठे। कुछ पचास सौ किलोमीटर गए होंगे कि उस बस में एक अंगूठी बेचने वाला मिला। 'अंगूठी खरीद लो, महान तांत्रिक नारायण दत्त श्रीमाली की अंगूठी।'

इतना तो प्रचार है ही, थोड़े बहुत लोग तो नाम से जानते हैं ही चेहरे से बेशक न पहचानें। उस बस में कोई मुझे जानता नहीं था मैं बिल्कुल सामान्य अवस्था में बैठा था, धोती-कुर्त्ता, न कोई माला, न कोई त्रिपुंड। आम यात्री की तरह बैठा था। चाहता तो दिल्ली में दस कारें मंगा सकता था और वे शिष्य धन्य अनुभव करते कि गुरुजी मेरी कार में बैठे। मगर मैंने ऐसा करना उचित समझा नहीं।

मैं उसे देख रहा था। वह ग्यारह रुपये में एक अंगूठी बेच रहा था और कह रहा था इससे प्रत्येक मन की इच्छा पूर्ण होती है। यह नारायण दत्त श्रीमाली की तंत्र सिद्ध अंगूठी है।

मैंने कहा भईया इधर आना!

उसने कहा क्या है?

मैंने कहा एक अंगूठी दिखा, मेरी भी एक इच्छा है।

उसने कहा ग्यारह रुपये लगेंगे।

मैंने कहा ये अंगूठी तुम कहां से लाए।

उसने कहा नारायण दत्त श्रीमाली से लाया। उन्होंने सिद्ध करके दी है और उन्होंने कहा है कि जिसकी बहुत ज्यादा श्रद्धा हो उसको देना, अश्रद्धावान को मत देना। तुम्हें लेनी है या नहीं।

मैंने कहा एक अंगूठी मेरे नाम की निकाल दे, मेरी एक तकलीफ है। मेरी इच्छा पूरी तो होगी?

उसने कहा पूरी जरूरी होगी। नारायण दत्त श्रीमाली का नाम नहीं सुना?

मैंने कहा नाम तो सुना है मगर कभी देखने का मौका नहीं मिला।

उसने कहा तुमक्या देखोगे। बड़े आदमी हैं।

मैंने कहा तुमने तो देखा होगा।

वह बोला बिल्कुल। बहुत अच्छी तरह से मिलता हूं और उन्होंने मुझे अंगूठियां दी और कहा कि जिनको बहुत जरूरत हो उनको देना। तुम्हारी क्या मनोकामना है?

मैंने कहा मेरी पत्नी की तबीयत ठीक नहीं रहती।

तो उसने कहा पत्नी के लिए अलग लेनी पड़ेगी।

मैंने ग्यारह रुपये दिये, अंगूठी ली तो उस अंगूठी पर एन.डी. खुदा था बिल्कुल।

मैंने कहा हरिद्वार में तुम्हारी दुकान कहां है क्योंकि हरिद्वार तो जा ही रहे हैं और मंत्र सिद्ध कोई चीज हो तो खरीद लें।

उसने कहा हरिद्वार में उनका लड़का ओमप्रकाश है, उनकी दुकान से खरीद लेना।

मैंने पत्नी से पूछा यह चौथा लड़का ओमप्रकाश कहा से आ गया। तीन लड़कों के नाम मुझे भी याद हैं, यह चौथा लड़का कहां से आ गया? मैं सोचने लगा।

उसने कहा क्या सोच रहे हो?

मैंने कहा सोच तो बहुत कुछ रहा हूं, मगर दुकान कहां है ओम प्रकाश की।

उसने कहा आप हरिद्वार में, गऊघाट पर चले जाना। तुम्हें खरीदना क्या है?

मैंने कहा एक दो माला खरीदनी है। नारायण दत्त श्रीमाली का बहुत नाम सुना है। सुना है बहुत बड़े योगी हैं, तांत्रिक भी हैं। अगर उनके पास जाएं तो क्या मिल लेते हैं?

उसने कहा वे तुमसे मिलेंगे नहीं, चार-चार दिन पड़े रहना पड़ता है फिर मिलते हैं।

मैंने पूछा तुमने उन्हें देखा है?

उसने कहा देखा है, बिल्कुल देखा है, बार-बार पूछ रहे हो कोई सी.आई.डी. है?

मैंने कहा सी.आई.डी. तो नहीं है मगर मेरी बड़ी मिलने की इच्छा है। कैसे दिखते हैं?

वह बोला उनकी बड़ी सफेद दाढ़ी है और लंबी जटा है, धोती पहनते हैं, ऊपर कुछ नहीं पहनते हैं। तुम जाओगे तो पहले दिन नहीं मिलेंगे, लेकिन बैठे रहोगे तो मिलेंगे। मगर सौ रुपये दक्षिणा देनी पड़ेगी।

मैंने कहा उम्र कितनी है उनकी?

उसने कहा उम्र तो अस्सी-पिच्यासी साल की है। तुम्हें मिलना है तो हरिद्वार में उनके लड़के के पास चले जाना।

आज भी वह अंगूठी मेरे पास पड़ी है। मनोकामना मेरी पूरी होगी या नहीं होगी मगर ग्यारह रुपये तो मैंने भेंट चढ़ा दिये। इस संसार में कई लोग होंगे जो मेरे नाम से अंगूठियां बेच रहे होंगे।

पत्नी ने कहा आपने उसे फटकारा क्यों नहीं?

मैंने कहा मेरे नाम से इसका पेट भर रहा है, क्या फर्क पड़ता है। अब मैं कहता कि मैं नारायण दत्त श्रीमाली हूं, वह कहता आप प्रूफ दो। तू है ही नहीं, मैंने देखा है, तू झूठ बोल रहा है। अब मैं प्रमाण कहां से लाकर देता। वहां और कोई आदमी मेरा परिचित नहीं, दो चार शिष्य साथ हो तो मैं कहता भी।

कई लोग बुद्धिमान ज्यादा हैं, चतुर ज्यादा हैं। वे गुरु हो सकते हैं, सद्‌गुरु नहीं। गुरु छल कर सकता है। इसलिए विश्वामित्र कहते हैं कि गुरु नहीं, यदि उस रास्ते पर सद्‌गुरु मिल जाएं, तो उनके चरण पकड़ लें। सद्‌गुरु तो जीवन में एकाध ही कोई मिलेगा। गुरु बहुत मिल सकते हैं।

मेरे जीवन में तो कई बार ऐसा हुआ है। एक बार कोई मेरे नाम से आगरा के होटल में ठहरा और अखबार में विज्ञापन दिया कि प्रसिद्ध ज्योतिषी नारायण दत्त श्रीमाली मिलेंगे और हाथ देखने की फीस 51 रुपये होगी। यह कई वर्ष पहले की बात बता रहा हूं।

मैं इलाहाबाद से आगरा आया, कोई काम था। होटल में पहुंचा तो पता लगा कि वहां मेरे से पहले ही कोई नारायण दत्त श्रीमाली बन करके, महीने भर तक लोगों का भविष्य पढ़ करके, पैसा कमा कर चला गया। मैंने रजिस्टर में नाम लिखा नारायण दत्त श्रीमाली, तो मैनेजर बोला आप नारायण दत्त श्रीमाली नहीं हो।

मैंने कहा क्या मेरे मुंह पर लिखा है कि मैं नारायण दत्त श्रीमाली नहीं हूं?

उसने कहा साहब आप नहीं हो। आप फ्रॉड मत करो। नारायण दत्त श्रीमाली तो आज सुबह ही गए हैं यहां से। वे महीने भर होटल में ठहरे, बड़ी भीड़ थी, 51 रुपये में हाथ देखकर भूत, भविष्य, वर्तमान बताते थे।

तो मैंने कहा अच्छा कोई बात नहीं मेरा नाम नारायण दत्त श्रीमाली मत लिख, किशनलाल लिख। तो उसने कहा तो यों बोलो ना। नाम क्यों छिपाते हो? सच बोलने से कोई पाप लगता है। आ गए नारायण दत्त श्रीमाली बन करके।

खैर होटल में ठहर गए। वहां अमर उजाला निकलता है अखबार। उसके संपादक मेरे चेहरे से परिचित नहीं थे, नाम से परिचित थे। मैं अपना विज्ञापन देना चाहता था। उनका नाम डोरीलाल अग्रवाल था। मैंने उन्हें फोन किया कि मैं नारायण दत्त श्रीमाली बोल रहा हूं, आप मुझसे मिलिए।

उन्होंने कहा आप तो सुबह जाने वाले थे?

मैंने कहा मैं कहीं नहीं गया हूं।

वे मिलने के लिए आए। देखते ही वे बोले आप फ्रॉड कब से करते हैं?

मैंने कहा क्यों?

उन्होंने कहा मैं एस.पी. को फोन करके दो मिनट में आपको गिरफ्तार करवा सकता हूं।

मैंने कहा मैंने किसी की हत्या की है, कोई गलत काम कियाक्या?

उसने कहा आप नारायण दत्त श्रीमाली हैं?

मैंने कहा हां, मैं ही हूं नारायण दत्त श्रीमाली।

उसने कहा आज सुबह ही मैंने रवाना किया है उनको।

मैंने उनको हकीकत बताई कि असल में तो नारायण दत्त श्रीमाली तो मैं ही हूं। उसने कहा कोई प्रमाण है आपके पास।

मैंने कहा कोई सर्टिफिकेट तो नहीं है मगर यह किताब छपी है मेरी फोटो मिला लो।

वह बोला फोटो तो उनका भी मिलता था। फोटो लगता तो आपका ही है मगर यह चक्कर क्या है?

मैंने कहा चक्कर यह है कि दुर्भाग्य से मैं एक दिन लेट आ गया। पहले आता तो उस नारायण दत्त श्रीमाली से भी भेंट हो जाती। वो सुबह ही चले गए मैं दोपहर को पहुंचा। यही गड़बड़ हुई बस।

तो उन्होंने कहा वह तो बड़ा फ्रॉड निकला। महीने भर में कम से कम पचास हजार कमा कर गया होगा।

ऐसा बहुत बार हुआ मेरे जीवन में। इसलिए आप शिष्य भी मुझसे मिलें तो पहले कन्फर्म कर लें कि गुरुजी वही हैं या बदले हुए गुरुजी हैं। कई बार तो मुझे अपने आप पर डाउट होता है कि मैं वही हूं या नहीं हूं।क्योंकि मुझे तो राह चलते गुरुदेव मिल जाते हैं।

ऐसे गुरु बहुत हैं। मैं उनकी बात नहीं कर रहा। मैं कह रहा हूं सद्गुरुदेव। विश्वामित्र कहते हैं कि जीवन में रास्ते में अगर सद्गुरु मिल जाए तो हो सकता है कि तुम पास से निकल सकते हो बिना पहचाने। मगर यदि पहचान लो तो उनके पांव पकड़ लो। वह सद्गुरु होंगे तो उन्हें पूर्णता का ज्ञान होगा। नहीं होगा तो गुरु बन सकता है, सद्गुरु नहीं बन सकता।

गुरु पाखंड छल, ढोंग कर सकता है। गुरु लालच कर सकता है मगर सद्गुरु नहीं कर सकता। सद्गुरु होगा और केवल लंगोट लगाए भी होगा तो भी राजा उसके पैरों में झुकेगा। उसके पास बेशक पैसा नहीं हो मगर बड़े से बड़ा राज मुकुट उसके पैरों में झुक जाता है क्योंकि उसके पास ज्ञान की गरिमा होती है और हरिद्वार में या मथुरा में जो रहने वाले गुरु हैं उनको आप गाली भी दे दें तो वे मुस्कराऐंगे।
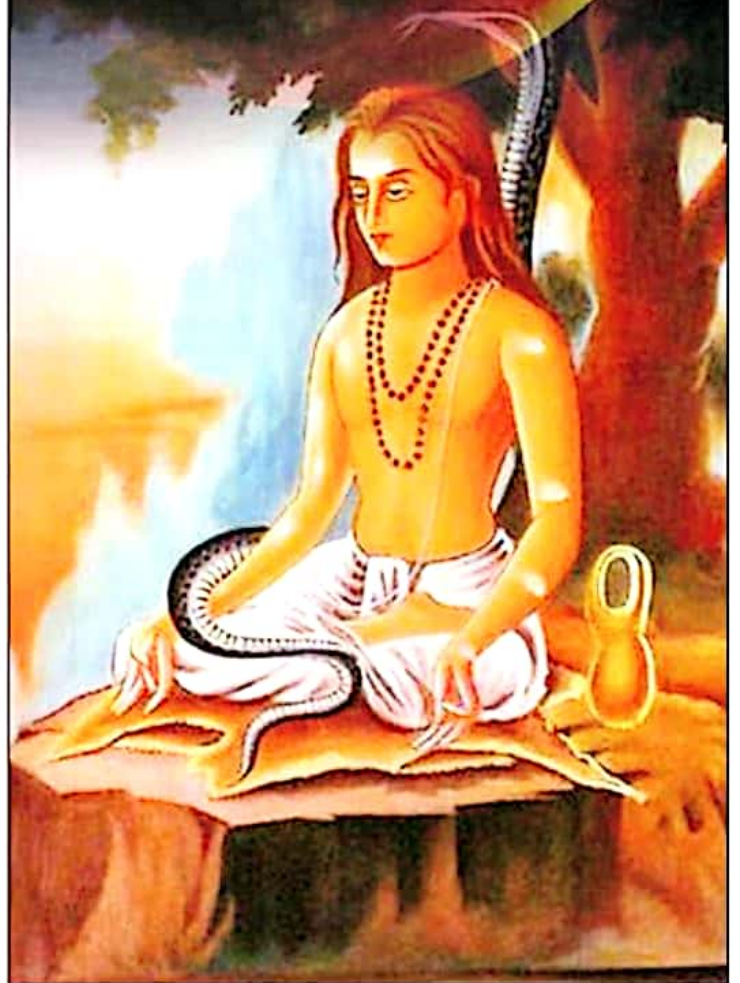
विश्वामित्र ने बहुत गहरी बात कही है कि यदि सद्गुरु मिल जाएं और यदि तुमने उनके पांव पकड़ लिए तो वे तुम्हें जीवन की दूसरी पगडंडी पर खड़ा कर देंगे। उस पगडंडी को छुड़ा देंगे जो श्मशान की ओर जाती है। जो दूसरी पगडंडी होगी वह

मृत्योर्मा अमृतं गमय

वह मृत्यु से अमृत्यु की ओर जाने वाली पगडंडी होगी। उस पगडंडी का तुम्हें ज्ञान नहीं हैक्योंकि इसका तुम्हारे पिताजी को भी ज्ञान था नहीं। इसलिए तुम्हें वे नहीं दे पाए। उनको जो कुछ ज्ञान था वही आपको दिया। उनको ज्ञान था संतान कैसे पैदा करनी चाहिए, दुकान कैसे चलानी चाहिए, डंडी कैसे मारनी चाहिए, झूठ कैसे बोलना चाहिए, सिगरेट कैसे पीनी चाहिए। उनको जो कुछ आता था बेचारों ने सिखा दिया। यह ज्ञान उनको नहीं था इसीलिये वह बता भी नहीं पाए।

और आज तुम प्रयत्न करो भी तो तुम्हारे पिता जी सोचेंगे यह जोधपुर जा कर बिगड़ जाएगा। वे कहेंगे तू जोधपुर मत जा। तू करताक्या है यह माला पहन करके सारा दिन बैठा रहता है? कुछ कमाएगा या भूखा मरेगा?

वे सही कह रहे हैं क्योंकि वे अपनी पगडंडी पर चल रहे हैं। मैं तुम्हें कह रहा हूं कि यह पगडंडी गलत है। यह पगडंडी तुम्हें सीधे श्मशान पहुंचाएगी आज से बीस पचास साल बाद और वहां जाकर तुम लेटोगे तो जो कफन होगा वह भी डोम उतार लेगा। उसे भी साथ ले जाने देगा नहीं।

इस रास्ते पर चलने में कोई आनंद नहीं है। जहां पर भी सद्गुरु मिल जाएं तो समझ लो भाग्य खुल गया। यह समझो पहले और फिर उनके पांव पकड़ लो, कस के पकड़ लो क्योंकि वह अपने पैर छुड़ा सकता है। इसलिए छुड़ा सकता हैक्योंकि वह बहुत माया करता है, बहुत सम्मोहन करता है, बहुत भ्रमित करता है और अपने आपको छिपाता है। क्योंकि वह सबको तो साथ लेकर चल नहीं सकता।

और तुम सोच में पड़ सकते हो कि कमाल ये गुरुजी हैं, इतनी सिद्धियां हैं फिर भी बीमार रहते हैं। ये कैसे गुरुजी हैं?

हमारी बुद्धि फिर हमें भ्रमित करती है। वह तुम्हारा हाथ सद्गुरु से छुड़ाने की कोशिश करेगी और सद्गुरु से हाथ छुड़ा लिया तो फिर तुम्हारी पगडंडी वही है श्मशान की ओर जाने वाली।

मैं तुम्हें बदल रहा हूं, एक दूसरी पगडंडी की ओर बढ़ाकर यदि हमारे शास्त्र प्रमाण हैं तो हम मृत्यु से अमृत्यु की ओर बढ़ सकते हैं। शास्त्र यह नहीं कहता कि मृत्यु की ओर बढ़।

सैकड़ों लोग मृत्यु से अमृत्यु की ओर बढ़ सके हैं और इस रास्ते पर एक पंद्रह साल का बालक बढ़ सकता है तो एक अस्सी साल का वृद्ध भी बढ़ सकता है। इसके लिए उम्र कोई बाधक नहीं होती।

यह जो तुम्हारे मेरे गुरु शिष्य के संबंध हैं इन्हें आप चाह कर भी नहीं हटा सकते और मैं प्रत्येक जीवन में तुमसे मिलता हूं, इसमें कोई दो राय नहीं है। पूर्ण सोलह कला एहसास करने वाला व्यक्ति अपने पिछले जीवन को देख सकता है, उसे पिछले जीवन को भी देख सकता है। मैं देख सकता हूं और जब देख सकता हूं तो तुम्हें पहचान भी लेता हूं और मैं एक-एक शिष्य को बहुत अच्छी तरह पहचानता हूं। जितनी अच्छी तरह तुम अपने आपको नहीं पहचानते उतना मैं तुम्हें पहचानता हूं और हर जीवन में मैंने तुम्हें इस पगडंडी पर बढाया है और तुम हर बार हाथ छुड़ा लेते हो।

जहां पर भी सद्गुरु मिल जाएं तो समझ लो भाग्य खुल गया। यह समझो पहले और फिर उनके पांव पकड़ लो, कस के पकड़ लो क्योंकि वह अपने पैर छुड़ा सकता है। इसलिए छुड़ा सकता हैक्योंकि वह बहुत माया करता है, बहुत सम्मोहन करता है, बहुत भ्रमित करता है और अपने आपको छिपाता है। क्योंकि वह सबको तो साथ लेकर चल नहीं सकता।

तुम्हारे पिछले पच्चीस जीवन का मेरे पास लेखा-जोखा है और मैं कोई छल नहीं कर रहा हूं। ऐसा कहने में मेरा कोई स्वार्थ नहीं है।

मगर तुम्हारे पच्चीस जन्मों का लेखा-जोखा तो मेरे पास है। मैंने तुम्हें हर बार आवाज लगाई है, हर बार उस पगडंडी पर खड़ा करने की कोशिश की है और हर बार तुम्हारे शत्रु तुम्हें पकड़कर दूसरी पगडंडी पर बढ़ा देते हैं। वे शत्रु कभी मां के रूप में आकर खड़े होते हैं, कभी बाप के रूप में आकर खड़े होते हैं कभी पति, कभी पुत्र, कभी बीमारी और कभी बुद्धि के रूप में। वे शत्रु आकर खड़े होंगे ही और वे आकर मेरा हाथ छुड़ा देंगे और आप उस रास्ते पर बढ़ जायेंगे। मैं आवाज दूंगा और देता हूं कि तुम गलत रास्ते पर बढ़ रहे हो, उस रास्ते पर चलने से कुछ पूर्णता नहीं मिल सकती, सफलता नहीं मिल सकती, मैं जिस रास्ते पर चल रहा हूं वह मेरा देखा हुआ है। जिस रास्ते पर तुम चल रहे हो उस पर तुम्हारे पूर्वज चले और कुछ प्राप्त नहीं कर पाए।

और इसका प्रमाण यह है कि तुम्हें अपने दादा का नाम पता है परंतु अपने परदादा का नाम पता नहीं। दो चार लोग अपने परदादा का नाम बता सकते हो मगर एक भी ऐसा नहीं जो परदादा के पिता का नाम बता दे। तुम्हें याद ही नहीं जबकि तुम्हारे पूर्वज हैं, कोई पराया आदमी नहीं। मतलब पिछले सौ साल पहले के व्यक्ति को भूल गए हम। तुम भी भुला दिए जाओगे।

और अगर इसको तुम सही जीवन समझते हो तो तुम सही रास्ते पर हो, तो तुम्हें मेरे पास आने की जरूरत नहीं है। फिर तुम अपना टाइम बरबाद करोगे, उससे कोई लाभ नहीं है।

मगर जिस रास्ते पर मैं तुम्हें चला रहा हूं वह समृद्धि का रास्ता भी है पूर्णता का रास्ता भी है, ऐश्वर्य का रास्ता भी है, श्रेष्ठता का रास्ता भी है। इसलिए श्रेष्ठता का रास्ता हैक्योंकि उस पर चल कर तुम हजारों-लाखों लोगों का कल्याण कर सकते हो। पैसे से नहीं कर सकते, धन से नहीं कर सकते और तुम्हारे पास अगर वह ज्ञान और चिंतन नहीं है तो तुम नहीं कर सकते ।

जब सिकंदर ने लूटा भारत को तो एक हजार हाथियों पर हीरे लदे थे, मोती और स्वर्ण मुद्राएं ऊंटों पर लदी थी और उनकी कतार थी। मगर उसके सेनापति सैल्यूकस ने कहा कि अगर आपने संन्यासी को नहीं देखा तो भारतवर्ष को नहीं देखा।

तो सिकंदर ने कहा अच्छा संन्यासी को पकड़ कर लाओ।

चार हठ प्रसिद्ध हैं बाल हठ, स्त्री हठ, राज हठ, संन्यासी हठ। राजा निश्चय कर ले कि ऐसा करना है तो करता ही है। संन्यासी भी परवाह ही नहीं करता किसी की और स्त्री भी एक बार सोच लें कि इसकी जिंदगी हराम करनी है तो करके ही रहती है।

अकबर ने बीरबल से कहा कौन-कौन सी हठ होती है?

बीरबल ने कहा चार हठ होती हैं बाल हठ, स्त्री हठ, संन्यासी हठ और राजा हठ।

अकबर ने कहा स्त्री हठ तो मैं जानता हूं, बेगम बहुत तंग करती है। संन्यासी और राजा हठ भी समझ में आती है, मगर यह बाल हठ क्या होती है? बालक मांगे जो दे दो। इसमें हठ क्या करेगी।

बीरबल ने कहा यह तो ठीक है मगर शास्त्रों में कहा है बाल हठ होती है।

तो अकबर ने कहा तुम बाल हठ दिखाओ। देख लेते हैंक्या होती है बाल हठ।

दूसरे दिन बीरबल ने एक छः साल के बालक को दरबार में बिठा दिया।

अबकर ने कहा बेटे तुम्हें क्या चाहिए?

उस बच्चे ने कहा बोतल चाहिए।

अकबर ने बोतल मंगवाई, उसको दे दी।

अकबर ने कहा बस, और क्या चाहिए।

बालक बोला हाथी चाहिए।

अकबर ने कहा दरबार में हाथी कैसे आएगा?

बालक बोला नहीं, नहीं मुझे हाथी चाहिए।

अकबर ने कहा कोई बात नहीं हाथी ले आओ।

महावत हाथी लेकर आया।

अकबर ने फिर कहा बस, और कुछ।

तो बालक बोला इस हाथी को बोतल में डालो।

अकबर बोला अरे बोतल में हाथी कैसे जाएगा।

बालक ने कहा नहीं बोतल में हाथी डालो।

और वह रोने लगा।

अकबर ने कहा मूर्ख यह नहीं हो सकता। वह और जोर से रोने लगा।

अकबर ने बहुत समझाया। मगर बालक नहीं माना। हारकर अकबर ने कहा बीरबल तुम सही कह रहे थे।

और मैं कह रहा हूं कि तुम भी हठ के बहुत पक्के हो। मैं कितना भी समझाऊं कि यह रास्ता गलत है, मैं तुम्हें पच्चीस जीवन से आवाज दे रहा हूं मगर तुम उसी रास्ते पर बढ़ते रहते हो।

और तुम मानो या न मानो तुम्हारे मेरे प्राणों के संबंध हैं, इसीलिए चाहे तुम आगरा रहो, दिल्ली रहो या बम्बई तुम्हें दौड़ कर मेरे पास आना ही पड़ता है। वहां रहते हुए भी तुम मेरे बिना रह नहीं सकते। तुम्हें मेरी याद आती है, एक फड़फड़ाहट होती है, एक तड़फ, एक बेचैनी होती है। तुम्हारे पांवों में बेड़ियां होती हैं, कभी धन की तकलीफ आती है, कभी व्यापार की तकलीफ आती होगी, कभी पत्नी बीमार पड़ती होगी। यह स्वाभाविक है। मगर फिर भी तुम मन से मुझे हटा नहीं सकते और मन से इसलिए नहीं हटा सकते, क्योंकि तुम्हारे मेरे कोई इसी जीवन के संबंध नहीं है। तुम्हारे मेरे कई जन्मों के संबंध है और जो मैं तुम्हें आज समझा रहा हूं वहीं पिछले जीवन में भी समझाया था।

मगर ज्योंहि तुम घर वापस जाते हो तो पिता कहते हैं तुम्हे क्या मिला वहाँ बता? क्या लेकर आया?

अब कोई एम.ए. की डिग्री तो है नहीं कि दिखाएं यह लाया। अब तुम क्या बताओगे कि यह मेरे पास ज्ञान है। ज्ञान का कोई वजन तो होता नहीं। वे उस चीज को नहीं समझ सकते क्योंकि उनकी पगडंडी अलग है। आप उनको कनविंस भी करना चाहेंगे तो नहीं कर पाएंगे। वे कहेंगे तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है, गुरु के पास जाकर तेरी बुद्धि नष्ट हो गई है। तू दुकान पर बैठ दो घंटे तो दो पैसे कमाकर खाएगा।

और तुम बैठ जाओगे तो फिर तुम्हारा रास्ता वही है श्मशान का। फिर मेरी आवाज, मेरा चीखना, चिल्लाना बेकार हो जाएगा। फिर तुम मरोगे, दो बार जन्म लेकर भटकते-भटकते मेरे पास ही आओगे। हरिद्वार, मथुरा भटक कर कहीं चैन नहीं मिलेगा और तुम फिर मेरे पास आओगे। मैं फिर तुम्हें बताऊंगा कि तुम गलत रास्ते पर

तुम्हारे पांवों में बेड़ियां होती हैं, कभी धन की तकलीफ आती है, कभी व्यापार की तकलीफ आती होगी, कभी पत्नी बीमार पड़ती होगी। यह स्वाभाविक है। मगर फिर भी तुम मन से मुझे हटा नहीं सकते और मन से इसलिए नहीं हटा सकते, क्योंकि तुम्हारे मेरे कोई इसी जीवन के संबंध नहीं है। तुम्हारे मेरे कई जन्मों के संबंध है और जो मैं तुम्हें आज समझा रहा हूं वहीं पिछले जीवन में भी समझाया था।

चल रहे थे।

यह बार-बार का झंझट खत्म होना चाहिए अब। यह सब हर बार नहीं चल सकता। इस बार ही जीवन में आर-पार होना चाहिए।

और मैं तुम्हें उस अमृत्यु के रास्ते पर चला सकता हूं। तुम दो साल तो मेरे साथ चल कर देखो और दो साल बाद तुम्हें लगे यह छल है, झूठ है तो छोड़ देना। पूरी जिन्दगी साथ नहीं चलना, दो साल में तुम्हें कुछ अनुभव हो तो तुम मत छोड़ना।

मैं हर क्षण तुम्हारे साथ रहता हूं और तुम्हारे मेरे प्राणों के संबंध हैं, शरीर के संबंध नहीं हैं। तुम, मेरे शरीर से पैदा नहीं हुए हो, न मैं तुम्हारे शरीर से कोई संबंध रखता हूं। न मैं तुम्हारा भाई हूं, न पिता हूं, न संबंधी हूं, न बेटा हूं। मगर मैं तुम्हारा गुरु हूं यह तुम नकार नहीं सकते।

इस जीवन की पगडंडी पर मैं भी तुम्हारी तरह गृहस्थ हूं और जो तुम्हारे गृहस्थ में समस्याएं हैं वे मेरे भी हैं और तुम्हारे तो शायद शत्रु होंगे पचास-पच्चीस मेरे तो कम से कम पचास हजार हैं जो आलोचनाएं करते हैं, बुरा भला कहते हैं। मगर शत्रुओं से घबराने से कुछ होगा नहीं। होगा तब जब तुम उस पगडंडी पर बढ़ोगे जो मैं तुम्हें दिखा रहा हूं।

उस पगडंडी पर बढ़ कर ही तुम एक सामान्य मनुष्य या नर से पुरुष बन सकते हो। शंकराचार्य से पूछा उनके शिष्य पाद पदम ने कि जीवन का श्रेष्ठ ध्येय क्या है, लक्ष्य क्या है?

और उन्होंने कहा मानव जब जन्म लेता है तो वह एक सामान्य नर होता है और उसे नर कहते हैं जो अपने समान एक और नर उत्पन्न कर दे। वह अधोगामी व्यक्तित्व होता है। वह चाहे तो साधना द्वारा, गुरु कृपा द्वारा ऊर्ध्वगामी बन सकता है।

ऊर्ध्वगामी बनने का अर्थ है पुरुष बनने की क्रिया। जिसमें पूर्ण पौरुष बल साहस और क्षमता हो वह पुरुष है। बहुत बड़ा अंतर है मनुष्य में और पुरुष में, नर में और पुरुष में।

अंतर यह है कि मनुष्य मरता है तो उसे अधिकार नहीं होता कि कोई विशेष गर्भ चुने।

हमारे पास मनुष्य लोक से ऊपर और भी अन्य लोक हैं, जैसा कि हमारे गायत्री मंत्र में कहा गया है

भुर्भव: स्व: तत्सवितुरवरेण्यं...

भू लोक, भुव: लोक, स्व: लोक, मह लोक, जन लोक, तप लोक, सत्य लोक ये सात लोक हैं और मनुष्य एक लोक से दूसरे, दूसरे से तीसरे, तीसरे से चौथे और यों सातवें लोक में पहुंच सकता है। कभी गायत्री मंत्र को समझने की जरूरत है उसको केवल रटने की जरूरत नहीं है, पच्चीस लाख का पुरश्चरण करने से कुछ नहीं हो सकता।

अगर आपके पास दिव्य दृष्टि है तो आप देखेंगे कि मरने के बाद सैकड़ों प्राणी विचरण करते रहते हैं। शायद मनुष्य तो भारत में 100 करोड़ ही हैं मगर वे दस अरब जीव हैं, प्राणी हैं और वे निरंतर इस खोज में हैं कि कोई गर्भ मिल जाए और उस समय जो भी गर्भ तैयार होता है जो भी गर्भ सामने होता है उसमें वह जन्म ले लेता है। उसके हाथ में चयन करने की क्रिया नहीं है। वह चाहे कि मैं विशेष गर्भ में जन्म लूं तो नर के पास वह क्रिया नहीं है।

मगर जब नर अपनी साधना के द्वारा पुरुष हो जाता है तो मृत्यु

योग के द्वारा जर्जर काया को बदला जा सकता है और वापस चिर यौवनमय बना जा सकता है। मेरी बात अटपटी लग सकती है और जहां तुम्हारी बुद्धि नहीं पहुंचती वह सब तुम्हारे लिए अटपटी बात है। तुम उतनी ही बात पर विश्वास करोगे जहां तुम्हारी बुद्धि पहुंचती है।

तो उसकी भी होगी ही। मेरा कुर्ता फट जाएगा तो मैं उसे बदलूंगा ही। शरीर भी जर्जर अवस्था में होता है तो समाप्त होता ही है। यह तो योग की एक बहुत उच्च पराकाष्ठा है कि उस शरीर को एक नया जीवन दे दे। आपने सांप को देखा होगा कि वह बिल्कुल पुरानी केंचुली उतार देता है और ताजी चमड़ी उस पर आ जाती है और आपकी भी चमड़ी छील दें तो दस दिन बाद ताजी चमड़ी आ जाएगी। उस चमड़ी के नीचे चमड़ी है। अब आपमें वह क्षमता नहीं कि आप ऊपर वाली चमड़ी को उतार कर फेंक सकें।

योग के द्वारा जर्जर काया को बदला जा सकता है और वापस चिर यौवनमय बना जा सकता है। मेरी बात अटपटी लग सकती है और जहां तुम्हारी बुद्धि नहीं पहुंचती वह सब तुम्हारे लिए अटपटी बात है। तुम उतनी ही बात पर विश्वास करोगे जहां तुम्हारी बुद्धि पहुंचती है।

अगर आज दादी जिंदा होती मेरी और मैं उसे कहता कि मनुष्य चांद पर पहुंच गया तो वह कहती तू पागल है। भगवान के ऊपर पांव थोड़े ही रख सकते हैं।

क्योंकि उनकी बुद्धि वहां पहुंच नहीं पा रही है और हम पढ़े लिखे हैं तो हम कहते हैं कि जैसे यह लोक है वैसे चंद्र लोक भी है। आदमी चंद्र लोक पर भी पहुंच सकता है। वे वायुयान के द्वारा पहुंचे, योगी अपनी साधना के द्वारा पहुंच सकता है। योगी अपने शरीर को सूक्ष्म करके पहुंच सकता है। मगर आप विश्वास करेंगे ही नहीं क्योंकि आपकी बुद्धि वहां तक नहीं पहुंचती मगर एक पुरुष, एक योगी जब तक चाहे किसी भी लोक में रह सकता है। दस साल, बीस साल, पचास साल और वह उस गर्भ का बराबर इंतजार करता रहता है जिसमें जन्म लेकर वह अद्वितीय बन सके। इसीलिए कृष्ण को जन्म लेने के 2500 वर्ष तक इंतजार करना पड़ा देवकी के गर्भ का और 2500 वर्ष तक वे उस प्राणी लोक में रहे चाहे भुवः लोक में रहे, चाहे स्वः लोक में रहे, चाहे जन, तप या सत्य लोक में रहे।

उनमें यह क्षमता थी कि मैं कौन से गर्भ में जन्म लूं और कृष्ण से ठीक 2500 वर्ष बाद वापस बुद्ध के रूप में जन्म लिया। आप देखिए। 2500 वर्ष का इतिहास चल रहा है। बराबर ढ़ाई हजार वर्षों के बाद एक युग परिवर्तन आता है।

बिल्कुल सही गर्भ चुनने से सही व्यक्तित्व बन सकता है, यह नर के हाथ में नहीं है गर्भ चुनना, तुम्हारे हाथ में नहीं है। मृत्यु के बाद में तुम्हें जो भी गर्भ मिल जाएगा उसमें जन्म लेना पड़ेगा। इसीलिए तुम्हें पिछला जन्म याद नहीं रहताक्योंकि तुम्हें पता ही नहीं कि तुमने कौन सा गर्भ चुना। वह तुम्हारे हाथ में ही नहीं है।

मगर पुरुष के हाथ में होता है कि वह मन चाहे गर्भ को चुने और वह जब तक चाहे रह सकता है। मनुष्य रूप में भी और किसी अन्य लोक में भी। अगर सिद्धाश्रम में जाकर रहना चाहता है तो रह सकता है और यदि भुवः लोक में चाहे तो वहां रह सकता है।

और तंत्र के द्वारा एक नर पूर्ण पुरुष बन सकता है। तुमने तंत्र अभी देखा नहीं और तुमने तांत्रिकों को भी देखा नहीं। तुमने भूतनाथ, प्रेतनाथ, पिशाचनाथ तो देखे मगर तांत्रिक नहीं देखे जो कि होते हैं बहुत तेजस्वी और क्षमतावान, चुनौतियां झेलने वाले और उनके सामने उच्चकोटि की शक्तियां भी हाथ बांधे खड़ी रहती हैं, चाहे वह इंद्र हो, अग्नि हो, वरुण हो, यम हो या मृत्यु हो। मृत्यु की हिम्मत नहीं होती कि झपट्टा मार दे उन पर। ऐसे तांत्रिक जिंदा हैं।

तुम कभी कामाख्या मंदिर गए नहीं, कुछ वर्ष पहले वहां तांत्रिक सम्मेलन था और मैं उसमें गया था। वहां कई विचित्र तांत्रिक थे। तुम्हारा कभी सौभाग्य बने मेरे साथ चलने का, तांत्रिक सममेलन हो और तुममें क्षमता हो वहां चलकर देखने की। दोनों ही बातें हों। बिना प्रारब्ध के यह साथ हो नहीं सकता।

मैं पहले यात्राएं करवाता था, बद्रीनाथ ले गया, अमरनाथ ले गया, शिष्यों को। इतने वर्षों से मैं नहीं गया तो आप भी नहीं जा पाए और मेरे साथ दो सौ लोग जाते ही थे। अब मैं नहीं जाता तो तुम भी नहीं जातेक्योंकि मैं अपनी प्राण शक्ति से खींच कर तुम लोगों को ले जाता था। तुम तो हरिद्वार तक अकेले नहीं जा पाते और मैं शिष्यों को अमरनाथ, गंगोत्री और गंगोत्री से भी आगे गोमुख तक ले गया। अस्सी साल की वृद्धा को भी ले गया। गंगोत्री जाना तो कठिन है, गौमुख जाना और भी कठिन है। आठ साल का बालक भी था साथ में और साठ साल की वृद्धा भी थी और कहीं किसी का अहित नहीं हुआ। जबकि आज भी गौमुख तक जाना बहुत ही दुष्कर होता है।

प्रारब्ध थे उनके तो उन्होंने देखा। नहीं प्रारब्ध हैं तुम्हारे तो तुम कहोगे गौमुख नहीं होता कुछ, हमने देखा नहीं तो किस लिए मान लें। अब तुम्हारे तक मैं नहीं पहुंच सकता। तुम कहते हो नहीं होता तो मैं मान लेता हूं नहीं होता।

मेरे कहने का तात्पर्य है कि उन तांत्रिकों में अद्वितीय क्षमताएं हैं और उस सम्मेलन में हिमालय के वे तांत्रिक आए थे और जो अपने आप में सिद्ध आचार्य हैं। बहुत क्षमतावान हैं। विचित्र वेष धारण करते हैं, वह उनकी एक मस्ती है। वे इस बात की परवाह नहीं करते कि लोग क्या कहेंगे। वे नंगे हैं तो बिल्कुल नंगे हैं, नर मुण्ड पहने हुए हैं तो नर मुण्ड पहने हैं, भस्म लगाई है तो भस्म लगाई है और बीस कपड़े पहने हैं। उन्हें इस बात की चिंता नहीं कि लोग क्या कहेंगे और आपको इस बात की चिंता रहती है कि दूसरा क्या कहेगा। आप इसीलिए दुःखी हैं।

जब मैं कहता हूं कि मस्ती के साथ झूमते हुए आरती गाओ, तो तुम झूमते तो हो, मगर यह चिंता रहती है कि दूसरे का हाथ या पल्ला नहीं लग जाए। तुम सोचते हो कि पल्ला लग गया तो दूसरा कहेगा कि पागल है क्या।

तुम्हें आसपास की चिंता रहती है और उस चिंता में तुम मरे जाते हो। मगर उन तांत्रिकों को कोई चिंता ही नहीं, एकदम मस्त बस।

और उनके सामने बहुत दमखम वाला व्यक्ति ही खड़ा हो सकता है। जिसकी लात में ताकत होती है उसकी मानते हैं, वो बातों से मानते ही नहीं। उनको हाथ जोड़े कि भाई...

तो वे एकदम तर्रा कर बोलते हैं। वहां मैं प्रवचन देने लग जाऊं तो वे कहेंगे यह नपुंसक कहां से आ गया? यह कोई आदमी है?

उनको चुनौती के रूप में फटकार देते हुए डांटते हुए, गाली देते हुए बात करनी पड़ती है और लात लगानी पड़ती है कि वह चालीस फीट दूर जाकर गिरता है। तो वह खड़ा होकर कहता है नम्रता से गुरुजी गलती क्या हो गई?

मैं कहता हूं चल चुप। बैठ यहां।

तब उनको समझ में आती है बात। वहां मुझे वैसा रूप धारण करना पड़ता है और यहां अगर तुम्हें वैसी लगा दूं लात तो इस जीवन में तो तुम वापस मेरे पास आओगे नहीं और दूसरों को कहोगे गुरुजी

की तो बुद्धि सठिया गई है। लात ठोक देंगे तो चालीस फीट दूर गिरोगे। इसीलिए उनके पास जाना भी मत।

हरियाणा का एक शिष्य है, लंबा-चौड़ा कसरती शरीर है, बलिष्ठ शरीर है। अमरनाथ यात्रा में मेरे साथ था। मैंने सबसे कहा था कि ये पहाड़ तुम्हारे देखे हुए नहीं हैं, मैंने इनमें बहुत विचरण किया है तुम जाना मत। मगर उस तरफ एक गुफा है, ऐसा मैंने कुछ कहा था।

बड़ी सर्दी थी, इसलिए सब टेंट में थे, शिष्यों का ध्यान रखना था कि कहीं सर्दी में कोई मर गया, तो कहेंगे कि गुरुजी लेकर गए थे 210 और आए वापस 209। बहुत मुश्किल हो जाएगी।

वहां बर्फ पोली होती है, चलता है उस पर तो धंस जाता है आदमी, नीचे पानी बहता है और आदमी उसमें बह जाता है। फिर उसका अता-पता नहीं मिलता, बर्फ फैल जाती है ऊपर। उन पहाड़ों पर चलने की टैकनीक है। बिल्कुल किनारे पर चलना पड़ता है। बीच में चल नहीं सकते। इसलिए मैंने सबको मना किया था जाने के लिए।

मुझे किसी ने कहा पहल जा रहा है, वो जा रहा है।

मैंने कहा कहां जा रहा है?

मैंने बाहर आकर देखा कि दूर जा रहा है और वह भी दस बारह शिष्यों को लेकर के। मैंने सोचा यह सबको मरवा देगा और गुरुजी हत्यारे कहलायेंगे।

मैंने पीछे तीन चार लोगों को दौड़ाया। वह पलट कर आया और मेरे पास थी लाठी, कलाई जितनी मोटी, उस को चालीस-पचास मारी ही होगी। लाठी तो टूट गई मगर वह वापस आकर प्रिंसीपल बन गया, पहले खेंचरर था। तो गुरु की मार भी सौभाग्य से ही मिलती है।

वह क्रोध आज भी खत्म नही हुआ है, मगर आपके सामने वह क्रोध कर भी नहीं सकताक्योंकि उस क्रोध के वेग को झेलने के लिए बहुत पौरुष की जरुरत होती है।

मैं कुछ देर पहले सोच रहा था कि जब मैं उस तांत्रिक सम्मेलन में था तो मेराक्या स्वरुप,क्या आग,क्या क्रोध था और यहां गृहस्थ शिष्यों के साथ किस ढंग से बोलना पड़ रहा है। यह समय की बात है।

तांत्रिक सम्मेलन तो होते ही रहते हैं और संयोग बने और तुम चल सको तो तुम देखोगे कि पुरुष किसको कहते हैं। तब तुम्हें शर्म आएगी किक्या हम पुरुष हैं। वे उन शक्तियों को झपट्टा मारकर प्राप्त कर लेते हैं। उनके सामने सब शक्तियां हैं वे थर्र-थर्र खड़ी कांपती रहती हैं। न मृत्यु की हिम्मत होती है उन पर झपट्टा मारने की। इन्द्र, यम, कुबेर हाथ बांधे खड़े रहते हैं। वे तांत्रिक उनको कहते हैं कि यह सामान लाकर देना है तो उन्हें लाना ही पड़ता है और उस जंगल में भी मखमल के गद्दों पर सोते हैं और रजाइयां ओढ़ते हैं मखमल की। सुबह वापस रजाइयां रवाना कर देते हैं अपने मंत्रों से और खाने में 36 तरह की सब्जियां खाते हैं, 20 तरह की मिठाइयां खाते हैं तो तुम कल्पना भी नहीं कर सकते। जंगल में भी आनंद और मस्ती के साथ रहते हैं क्योंकि उनके पास तांत्रिक क्षमता होती है।

तुम्हारे लिए लाख दो लाख इकट्ठा करना बहुत बड़ी बात होगी। मैं समझता हूं यह कुछ घटना ही नहीं है। अगर किसी ने रसायनिक विद्या सीखी हो, अगर मैं तांबे से सोना बना सकता हूं तो तुम मुझे दोगे भीक्या? हजार रुपये देकर तुम खुश हो जाओगे कि गुरुजी देखिए

मैंनेक्या दिया है।

तांबे का भाव है 80 रुपये किलो और सोने का भाव है 5 लाख रुपये किलो, 80 रुपये से पांच लाख कन्वर्ट हो सकते हैं तो तुम शिष्य मुझेक्या दोगे। तुममें देने की हिम्मत नहीं है। मैं तुम्हें दे सकता हूं और बहुत कुछ दे सकता हूं।

मैं केवल प्रवचन करने वाला मंत्र सिखाने वाला ही गुरु नहीं हूं मैं गृहस्थ जीवन की समस्याओं को सुलझाने वाला भी हूं, रसायनिक विद्या में उतना ही हूं जितना तंत्र में, मंत्र में, ज्ञान में, चेतना में। प्रत्येक जीवन के क्षेत्र में मैं उतनी ही क्षमता रखता हूं और वे काशी के पंडित सामने आएं तो उनके लिए भी मैं उतना ही तैयार हूं।

किसी से घबराता मैं नहीं हूं। घबराते वे हैं जिन्हें एक ही गीता का ज्ञान है और जीवन भर गीता पर बोलते रहते हैं, रामायण का ज्ञान है तो बस चौपाइयां बोलते रहते हैं। उनसे कहिए सूर के बारे में बोलें तो वे कहेंगे मैं तो केवल रामचरित मानस पर ही बोलता हूं।

उन्होंने एक चीज पकड़ रखी है और जिंदगी पार कर रहे हैं। जीवन में बहुमुखी प्रतिभा होनी चाहिए। तभी व्यक्ति पुरुष हो सकता है।

राम के बाद केवल कृष्ण में वह गर्भ चुनने की क्षमता आ सकी। उसके बाद बुद्ध में आ सकी और वह एक मामूली सा व्यक्ति, राज परिवार को छोड़ करके उस जगह पहुंचा कि आज संसार के 22 देशों में बुद्ध धर्म फैला हुआ है। एक व्यक्ति ही तो था और वह भी यही बात कह रहा था आनंद मुझे 200 शिष्य चाहिए। 200 शिष्य होते तो मैं बहुत कुछ कर बैठता। दुर्भाग्य है कि मैं 200 शिष्य प्राप्त नहीं कर पाया।

यह गुरु के सामने एक बहुत बड़ी दुर्घटना होती है। यह अफसोस होता है। जो समर्पित शिष्य उसे मिलने चाहिए जब वे नहीं होते तब उसे अपने आपको बहुत दबोच कर रहना होता है। आप होठों से गुरु-गुरु कहें और पांव दबाएं आकर के, ऐसा पाखंड मुझे नहीं चाहिए। मेरी कोई इच्छा नहीं कि आप चरणों को धोकर पी लें।

ठीक है आपका धर्म है कि आप चरण स्पर्श करें और मैं आशीर्वाद दूं। मगर मेरा आशीर्वाद है कि आपमें कुछ प्रखरता और तेजस्विता आए, दम-खम आए, गिड़गिड़ाने वाली बात नहीं हो, चुनौतियों वाली बात हो, सामने खड़े होकर बात करने की क्षमता हो, चाहे सामने वाला योगी हो, संन्यासी हो, तांत्रिक हो, चाहे देवता हो और चाहे मनुष्य हो। जीएं तो ताकत, क्षमता के साथ जीएं। गीली लकड़ी, न आग लगे, न बुझे, धुक-धुक करती रहती है दस घंटे।क्या फायदा।

तुम ऐसी जिंदगी जी रहे हो। कभी औरत को मना रहे हो, कभी पड़ोसी को मना रहे हो, कभी अफसर के आगे हाथ जोड़ रहे हो कि नवरात्री है, छुट्टी देंगे क्या?

तुममें ताकत हो और आंख में आंख डालकर कह सको छुट्टी तुम्हें देनी है, हर हाल में देनी है।

वह सोचेगा यह हो क्या गया इसको। सोचकर देखो वह बिगाड़क्या लेगा तुम्हारा। नौकरी से निकाल नहीं सकता, सस्पेंड करेगा भी तो तीन साल घर बैठना, सारी तन्ख्वाह एक साथ मिल जाएगी।

चुनौती वाला भाव होना चाहिए और मैं जब तुम्हें दीन, हीन

राम के बाद केवल कृष्ण में वह गर्भ चुनने की क्षमता आ सकी। उसके बाद बुद्ध में आ सकी और वह एक मामूली सा व्यक्ति, राज परिवार को छोड़ करके उस जगह पहुंचा कि आज संसार के 22 देशों में बुद्ध धर्म फैला हुआ है। एक व्यक्ति ही तो था और वह भी यही बात कह रहा था आनंद मुझे 200 शिष्य चाहिए। 200 शिष्य होते तो मैं बहुत कुछ कर बैठता। दुर्भाग्य है कि मैं 200 शिष्य प्राप्त नहीं कर पाया।

यह गुरु के सामने एक बहुत बड़ी दुर्घटना होती है। यह अफसोस होता है। जो समर्पित शिष्य उसे मिलने चाहिए जब वे नहीं होते तब उसे अपने आपको बहुत दबोच कर रहना होता है। आप होठों से गुरु-गुरु कहें और पांव दबाएं आकर के, ऐसा पाखंड मुझे नहीं चाहिए। मेरी कोई इच्छा नहीं कि आप चरणों को धोकर पी लें।

जर्जर देखता हूं तो सोचता हूं कि कहां फंस गया हूं इनके बीच में। मैं तुम्हें शेर बनाने की कोशिश कर रहा हूं।

शेर तुम हो मगर गीदड़ों के बीच रह रहे हो और मैं तुम्हें झपट्टा मारना सिखा रहा हूं। तुम्हें ज्ञान नहीं है कि तुम शेर हो इसलिए गिड़गिड़ा रहे हो, हाथ जोड़ रहे हो और जिस दिन तुम्हें एहसास हो जाएगा कि तुम शेर हो, उस गुरु के शिष्य हो जिसमें प्रखरता है ताकत है उस दिन से दुनिया में कोई तुम्हारा बाल बांका नहीं कर सकता। तुम उस गुरु के शिष्य हो जो न परेशानियों से घबराया न दुख से घबराया। मैं तो पूरे भारत में विचरण करता ही हूं। उन पंडितों की नगरी में जाता हूं और उनको भी फटकारता ही हूं और संन्यासियों को भी जाकर लातें मारता हूं।

ये शब्द तुम्हारा रूप परिवर्तन की एक क्रिया है। जिससे तुम आगे जाकर पुरुष बन सको और श्रेष्ठतम गर्भ चुन सको।
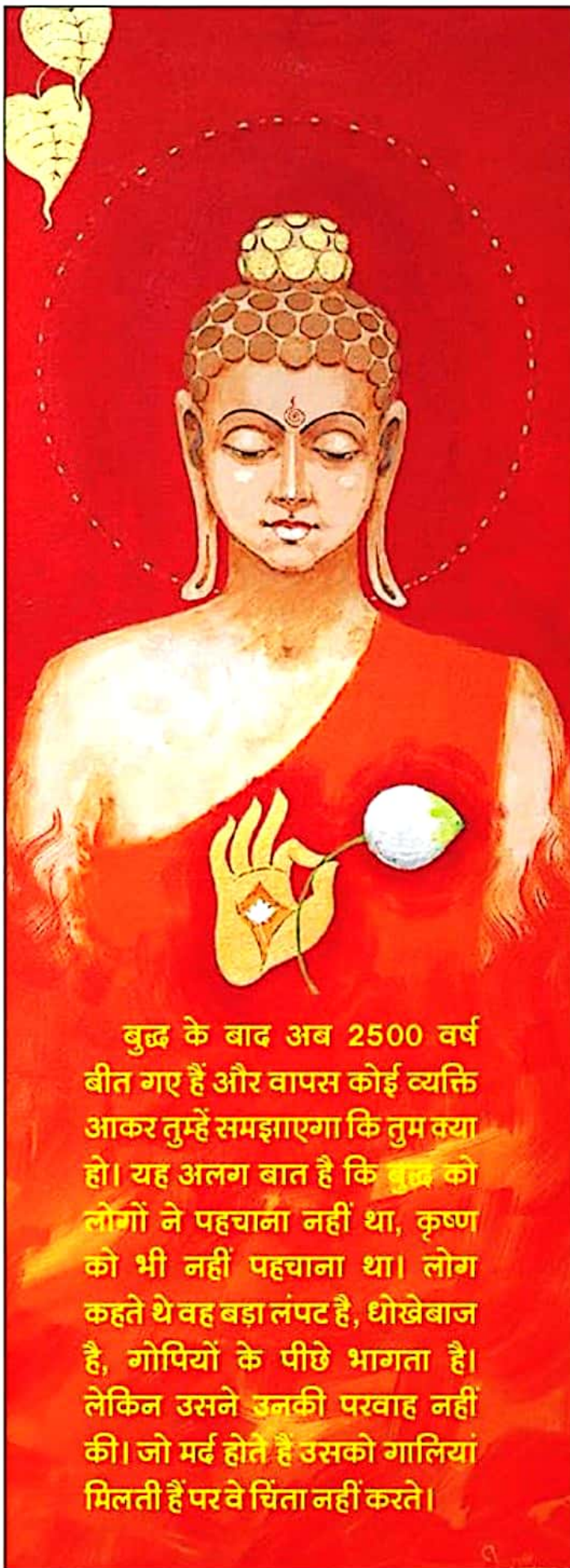
बुद्ध के बाद अब 2500 वर्ष बीत गए हैं और वापस कोई व्यक्ति आकर तुम्हें समझाएगा कि तुम क्या हो। यह अलग बात है कि बुद्ध को लोगों ने पहचाना नहीं था, कृष्ण को भी नहीं पहचाना था। लोग कहते थे वह बड़ा लंपट है, धोखेबाज है, गोपियों के पीछे भागता है। लेकिन उसने उनकी परवाह नहीं की। जो मर्द होते हैं उसको गालियां मिलती हैं पर वे चिंता नहीं करते।

और मेरी बात को ध्यान में रखना मेरे जैसा गुरु तुम्हें अगले 100 साल तक मिलेगा नहीं और तुम नहीं पहचान पाओगे और पास में से निकल जाओगे, अफसोस तो मुझे जरूर होगा, आने वाली पीढ़ियां तुम्हें धिक्कारेंगी जरूर।

और अगर तुमने पहचान लिया तो याद रखना हर क्षण, हर घड़ी मैं तुम्हारे साथ हूं-24 घंटे। और कभी भी, किसी भी क्षण तुम पीछे मुड़कर देखोगे तो मैं तुम्हें तैयार खड़ा मिलूंगा, यह गारंटी है।

तुम्हारे जीवन का प्रत्येक क्षण गृहस्थ में और समाज में बीतना चाहिए, मगर साधना में भी बीतना चाहिए। पौरुष के साथ। तुम एक दो साधना में सफलता प्राप्त करोगे तो जीवन तुम्हारा श्रेष्ठ हो जाएगा। मगर उसके लिए ताकत चाहिए, हिम्मत चाहिए, जोश चाहिए, आंख में चिंगारी चाहिए। ऐसी कई साधनाएं हैं जो क्रोध मुद्रा में की जाती हैं, आंख निकालकर मंत्र जप किया जाता है। तुम्हारा पौरुष झलकना चाहिए।

फिर तुम पुरुष बन कर के श्रेष्ठ गर्भ चुनने की क्षमता प्राप्त कर पाओगे। फिर आने वाली पीढ़ियां तुम पर गर्व कर पाएंगी क्योंकि आने वाली पीढ़ी विज्ञान की नहीं ज्ञान की होगी, शास्त्र की होगी, साधनाओं की होगी और मैं जिंदा हूं, 50 साल तो मेरा कुछ बिगड़ेगा नहीं, मैं जो बता रहा हूं दिखा दूंगा तुम्हें।

जब मैं शिष्यों से मिलता हूं तो उनसे बहुत प्यार महसूस करता हूं ऐसा नहीं महसूस करता, कि तुम पराए हो। मगर दुख इस बात का होता है कि तुम पहचान नहीं पा रहे हो।

कृष्ण को मजबूर होकर के बहुत दुखी होकर के, सन्तप्त होकर के और परेशान होकर के और अपने दिल को दबोच करके गीता में कहना पड़ा अर्जुन तू मुझे पहचान। मैं पेड़ों में पीपल हूं, नदियों में गंगा हूं, पहाड़ों में हिमालय हूं, तू मुझे पहचान और जिस दिन पहचान लेगा तो महाभारत युद्ध क्या किसी भी युद्ध को जीत लेगा। तू यह मत समझ मैं धोती पहन कर एक सारथी बैठा हूं, तू मुझे मित्र भी मत समझ तू मेरा वास्तविक स्वरूप पहचान, नहीं तो देर हो जाएगी

और तू युद्ध हार जाएगा।

गीता पढ़ें तो यही उसका सार है। नवें, दसवें, ग्यारहवें अध्याय में यही तो है कि मैं यह हूं, यह हूं।क्या कृष्ण घमंडी था? क्या वह घमंड दिखा रहा था?

वह घमंड नहीं दिखा रहा था। पहले अध्याय से सातवें अध्याय तक उसने अर्जुन को समझाया कि तुम वीर हो, तुम्हें विजय प्राप्त करनी है, कायरों की तरह मत मर।

वह समझ नहीं पा रहा था तो कृष्ण ने कहा तू मुझे पहचानक्योंकि मैं इन सबको मार चुका हूं। वे भीष्म, कर्ण, द्रोण, अश्वथामा इनको समाप्त कर चुका हूं। तुम्हें केवल निमित्त बनना है।

और मैं भी तुम्हें कह रहा हूं कि मैं तुम्हारे प्राणों में हूं और तुम्हें साधना में सफलता मिलनी ही है, तुम तो बस निमित्त बनोगे। गांडीव धनुष तो तुम्हें उठाना पड़ेगा, पर सारथी तो मैं हूं, रथ मैं चलाऊंगा। तुम्हें उस महासमर के युद्ध में जाकर खड़ा कर दूंगा जहां, कौरव खड़े हैं। अहित तुम्हारा होगा नहीं मगर तुम्हें सामने खड़ा होना पड़ेगा, जीतना तुम्हें है। विजय की माला तुम्हारे गले में पहनानी है, मेरे गले में पहनाने की जरूरत नहीं है। यह आवश्यक है।

कृष्ण भी बार-बार यही कह रहे थे और मैं भी यही कह रहा हूं। मैं अपनी तुलना कृष्ण से नहीं कर रहा हूं और कर भी रहा हूं तो गलत नहीं कर रहा यह भी तुम्हें बता दूं।

कृष्ण को पहचाना ही नहीं था उसे तीन अध्याय तक समझाना पड़ा कि अंतर्ज्ञान से मुझे पहचान लेगा तो इस युद्ध में जीत जाएगा। बुद्ध को भी बार-बार यह समझाना पड़ा 2500 वर्ष बाद और बुद्ध के 2500 वर्ष बाद मैं वापस तुम्हें समझा रहा हूं। बता रहा हूं कि तुम्हारा कभी भाग्य हो, कभी तुम बुद्धि को परे रख कर पहचान सको और जिस दिन पहचान लोगे उस दिन तुम अपने को गौरवान्वित अनुभव कर सकोगे।

यह जो तुम्हारा सांसारिक युद्ध है, समाज से युद्ध है, अभावों का युद्ध है, उसमें तुम खड़े हो और मैं साथ खड़ा हूं। मगर लड़ना तुम्हें है। तुम्हें केवल खड़ा होना है, कहीं कोई चिंता नहीं करनी है, खड़े होकर विजय श्री को प्राप्त करना है। मरो तो शान के साथ मरो जिससे हजारों करोड़ों की आँखों से आंसू टपके जब मरो तुम। तब तुम्हारी जिंदगी की विशेषता है।

ऐसा हो सकता है, मगर हो सकता है तुम्हारे द्वारा जब तुम उस पगडंडी पर बढ़ो जो मैं दिखा रहा हूं और मेरे घर के दरवाजे खुले हैं 24 घंटे, ठक-ठक करोगे, मैं सीधा तुमसे मिलने को तैयार हूं। तुम ठक-ठक करो ही नहीं दिल के दरवाजे पर दस्तक दो ही नहीं, आवाज भी नहीं दो तो मेरा दोष नहीं है।

मैंने तुम्हें कई जन्मों से आवाज दी है, तुम्हें फटकारा है, आज भी फटकार ही रहा हूं, चापलूसी तुम्हारी नहीं कर रहा हूं, आज भी फटकार के समझा रहा हूं कि हकीकत में तुम कौन हो तुम एक क्षमता पैदा करो कि उस व्यक्ति को पहचानो। तुम सिर्फ धोती कुर्ता पहने हुए व्यक्ति को मत देखो, उसके अंदर जो कुछ है वहां तक पहुंचने की जरूरत पड़ेगी और वहां तक पहुंचोगे तो मुझसे अलग हो ही नहीं सकते। फिर समाज का कोई व्यक्ति खींच कर तुम्हें मुझसे अलग नहीं कर सकता क्योंकि चमड़ी को कोई आज तक प्राणों से अलग नहीं कर सका।

कृष्ण भी बार-बार यही कह रहे थे और मैं भी यही कह रहा हूं। मैं अपनी तुलना कृष्ण से नहीं कर रहा हूं और कर भी रहा हूं तो गलत नहीं कर रहा यह भी तुम्हें बता दूं।

कृष्ण को पहचाना ही नहीं था उसे तीन अध्याय तक समझाना पड़ा कि अंतर्ज्ञान से मुझे पहचान लेगा तो इस युद्ध में जीत जाएगा। बुद्ध को भी बार-बार यह समझाना पड़ा 2500 वर्ष बाद और बुद्ध के 2500 वर्ष बाद मैं वापस तुम्हें समझा रहा हूं। बता रहा हूं कि तुम्हारा कभी भाग्य हो, कभी तुम बुद्धि को परे रख कर पहचान सको और जिस दिन पहचान लोगे उस दिन तुम अपने को गौरवान्वित अनुभव कर सकोगे।

और समय बहुत कम है। हो सकता है तुम्हारे पास बहुत समय है और मैं कह रहा हूं समय कम है तो उसके पीछे एक अर्थ है, चिंतन है। अब तुम मुझे नहीं पहचानोगे तो फिर तुम ढोंगियों के चुंगल में फंस जाओगे। वे तुम्हें कुछ ज्ञान चेतना नहीं दे सकेंगे।

तुम उनसे पूछोगे कि ये साधनाक्या है तो वे कहेंगे बच्चे तुम नहीं समझ सकते, ये बहुत ऊंचे योगियों की बातें हैं। वे तुम्हें डरा कर बिठा देंगे।

ऐसा इस देश में हुआ है। बार-बार बुद्ध, महावीर, कृष्ण पैदा नहीं हुए हैं, कभी-कभी पैदा होते हैं और उनके समय में लोगों ने उन्हें पहचाना नहीं, गालियां दीं, तिरस्कार दिया, भगवान बुद्ध को लाठियों से पीटा, महावीर के कानों में कीलें ठोकीं और ईसा मसीह को क्रांस पर टांग दिया। समाज ने ऐसा ही किया। उन्होंने नहीं पहचाना उनको। मरने के बाद उनके स्मारक बनाए जाते हैं।

यह सब कह कर के मैं घमंड नहीं कर रहा हूं। मैं अपना परिचय दे रहा हूं। इसलिए कि शायद तुम्हारे अंदर वह चिंगारी पैदा हो जाए, शायद तुम अपने आपको पहचान सको और जब तुम अपने आपको पहचानोगे तो जरूर मुझे पहचान सकोगे और पहचानते ही तुम एक अंगार, एक ज्वालामुखी बन जाओगे। साधनाओं की तेजस्विता तुम में आ सकती है। करोड़ों लोगों के बीच तुम नायक बन सकते हो, तुम नेतृत्व दे सकते हो इस देश को भी, अपने आप को भी और जिन छोटे-मोटे लोगों के सामने तुम गिड़गिड़ा रहे हो वे तुम्हारे सामने झुक सकते हैं। अगर तुममें प्रखरता है, ताकत है, क्षमता है।

गिड़गिड़ाना और हाथ जोड़ना तुम छोड़ दो। ऐसे तुम अपना और मेरा दोनों का अपमान मत करो। तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। और कभी देखो तुम। कोई बहुत बड़ा तांत्रिक हो उसे चुनौती देकर देखो कि वह तुम्हाराक्या बिगाड़ सकता है। वह तुम्हारा कुछ अहित नहीं कर सकताक्योंकि उस समय भी मैं तुम्हारे अंदर बैठा होता हूं।

तुम जीवन में उस पगडंडी पर बढ़ सको, तुम गुरु को और स्वयं को पहचान सको, जीवन में विजय एवं सफलता प्राप्त कर सको, साधनात्मक बल और मंत्र शक्ति प्राप्त कर सको ऐसा ही मैं हृदय से तुम्हें आशीर्वाद देता हूं।
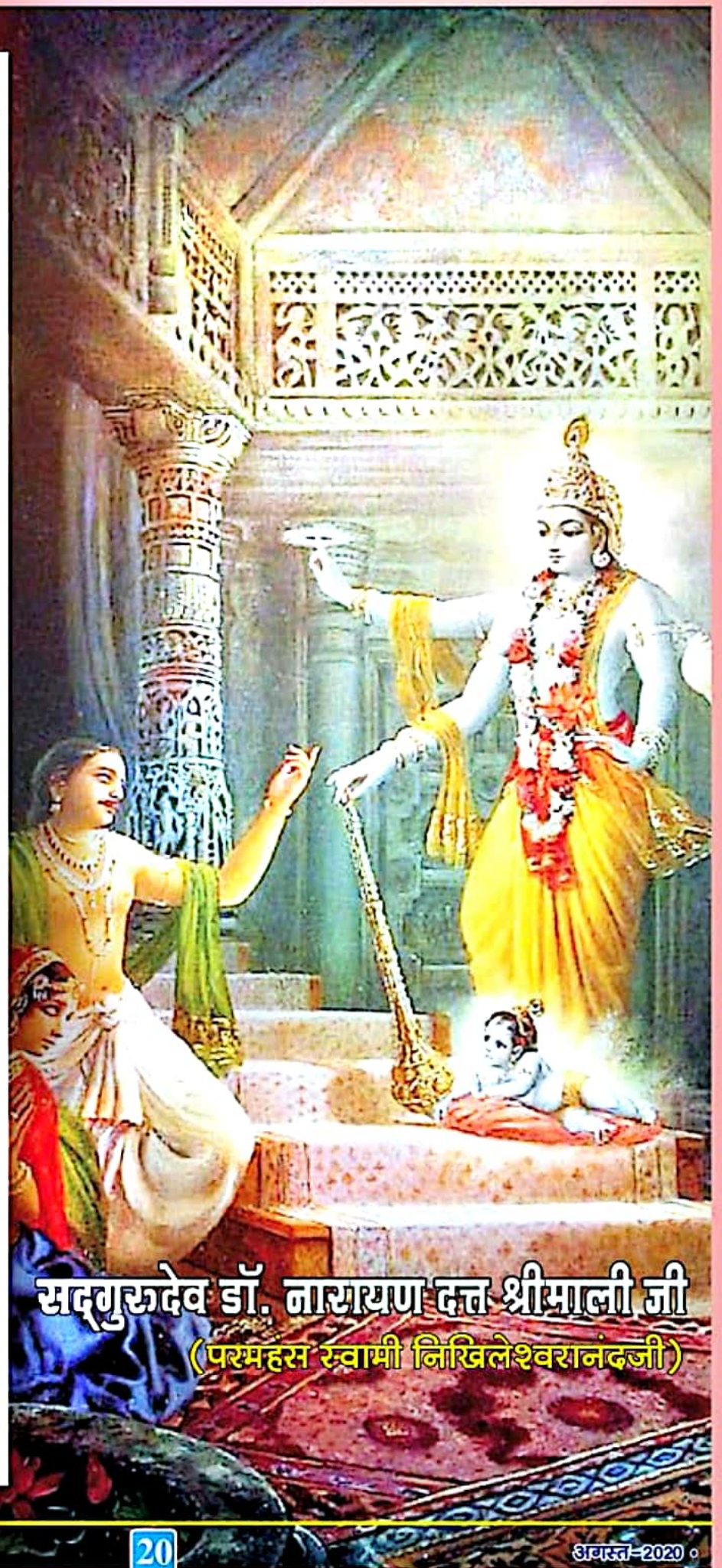
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।

'साधनकानांसुखंकर्त्रीं सर्व लोक भयंकरीम्'

अर्थात् भगवती तारा तीनों लोकों को ऐश्वर्य प्रदान करने वाली हैं, साधकों को सुख देने वाली और सर्व लोकभयंकारी हैं। तारा की साधना की श्रेष्ठता और अनिवार्यता का समर्थन वशिष्ठ, विश्वामित्र, रावण, गुरु गोरखनाथ व अनेक ऋषि मुनियों ने एक स्वर में किया है। संकेत चन्द्रोदय में शंकराचार्य ने तारा साधना को ही जीवन का प्रमुख आधार बताया है। कुबेर भी भगवती तारा की साधना से ही अतुलनीय भण्डार को प्राप्त कर सके थे। तारा साधना अत्यंत ही प्राचीन विद्या है और महाविद्या साधना होने के बावजूद भी शीघ्र फल देने वाली है, इसी कारण साधकों के मध्य तारा यंत्र के प्रति आकर्षण विशेष रूप से रहता है।

वर्तमान समय में ऐश्वर्य और आर्थिक सुदृढ़ता ही सफलता का मापदण्ड है, पुण्य कार्य करने के लिए भी धन की आवश्यकता है ही, इसीलिये अर्थ को शास्त्रों में पुरुषार्थ कहा गया है। साधकों के हितार्थ शुभ मुहूर्त में कुछ ऐसे यंत्रों की प्राण प्रतिष्ठा कराई गई है, जिसे कोई भी व्यक्ति अपने घर में स्थापित कर कुछ दिनों में ही इसके प्रभाव को अनुभव कर सकता है, अपने जीवन में सम्पन्नता और ऐश्वर्य को साकार होते, आय के नये स्रोत देख सकता है।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/- Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

अष्ट लक्ष्मी प्रयोग

अष्ट लक्ष्मी जयंती - 25.08.20
या
किसी भी बुधवार को

लक्ष्मी के 108 स्वरूप हैं

उनमें रुपये, धन-धान्य, भवन, वाहन, पत्नी, पुत्र, आयु और आरोग्य ये मुख्य लक्ष्मी के स्वरूप हैं जो कि हर साधारण व्यक्ति को प्राप्त होनी चाहिए

इनमें से किसी के न होने पर जीवन में कठिनाई होती है। परिवार कष्ट से जीवन व्यतीत करता है, अनेक प्रयास करने के बाद भी इनको प्राप्त करने में यदि बाधा हो तो दैवी कृपा प्राप्त करने के लिए इस साधना को शुभ मुहूर्त में अवश्य करना चाहिए। यदि आपके पास धन-धान्य है आयु और आरोग्य नहीं है तब भी धन व्यर्थ हो जाएगा। पत्नी, पुत्र के अभाव में जीवन का वास्तविक सुख नहीं प्राप्त हो पाएगा इसलिए इस अष्ट लक्ष्मी का जीवन में विशेष महत्व है।

अपने सामने चौकी पर एक प्लेट रखें, उसमें कुंकुम से स्वास्तिक बनाकर अष्ट लक्ष्मी यंत्र को स्थापित करें, धूप, दीप जला लें, गुरु और गणेश का मानसिक पूजन करके चार माला गुरु मंत्र जप करें उसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर नाम और गोत्र का उच्चारण करते हुए अष्ट लक्ष्मी प्राप्ति के लिए संकल्प करके जल भूमि पर छोड़ दें।

फिर पंचामृत से यंत्र को स्नान करावें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

पंच नद्यः सरस्वती मपियन्ति सरत्रोतसः।
सरस्वती तु पंचन्द्या सोऽदेशेऽभवत सरित।।
ॐ अष्ट लक्ष्म्यै नमः।

फिर शुद्ध जल से स्नान करायें।

इसके बाद यंत्र के ऊपर चारों दिशाओं में चार तिलक करें, पुष्प, धूप, दीप से पूजन करके कमल गट्टे की माला से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जाप करें -

ॐ ह्रीं अष्टलक्ष्मी प्रसीद-प्रसीद
श्रीं ॐ नमः।

मंत्र जप के बाद कमल गट्टे की माला के बीजों को घी में मिलाकर उपरोक्त मंत्र से आहुतियां दें।

साधना समाप्ति के बाद यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित करें एवं प्रातः नित्य 11 बार उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करें।

साधना सामग्री - 450/-

25.08.20 या किसी भी अष्टमी से

अन्नपूर्णा शंख पर श्री सुन्दरी साधना

एक अद्भुत और मौलिक प्रयोग

यह साधना जगत का महत्वपूर्ण प्रामाणिक प्रयोग है लक्ष्मी प्राप्ति का सहज और सरल तरीका है क्योंकि श्री सुन्दरी को ही शास्त्रों में अन्नपूर्णा कहा गया है यह प्रयोग सम्पन्न करने पर साधक जीवन में सभी दृष्टियों से यश, कीर्ति और ऐश्वर्य से पूर्ण बन जाता है श्री सुन्दरी देवी भोग और मोक्ष दोनों ही देने वाली है भोग भौतिक पदार्थों से आनन्द प्राप्त करने की क्रिया को कहते हैं।

भगवान शिव की पत्नी गौरी को श्री सुन्दरी अन्नापूर्णा कहा गया है इसलिए इस प्रयोग के माध्यम से अन्नपूर्णा के एक सौ आठ ऐश्वर्य जिन्हें श्री श्री 108 कहा गया हैं की प्राप्ति होती है।

आठ विशेष लाभ

इस साधना प्रयोग के आठ विशेष लाभ हैं। साधना प्रयोग सम्पन्न करने से पहले साधक को चाहिए कि वह गुरु का स्मरण करके गणपति का ध्यान करते हुए - मंत्र और श्री सुन्दरी देवी में पूर्ण आस्था व्यक्त करते हुए, निम्नलिखित आठ जीवन के सुखों की प्राप्ति चाहते हुए, पूर्ण आस्था के साथ मंत्र प्रयोग करें।

1. पूर्ण निरोग शरीर
2. आनन्द युक्त भवन
3. आज्ञाकारी बुद्धिमान पुत्र
4. मनोहारिणी पत्नी
5. जीवन में पर्याप्त धन की प्राप्ति।
6. घर में नित्य अतिथियों का सम्मान।
7. घर में नित्य देवताओं का पूजन अर्चन।
8. जीवन में हर प्रकार से पूर्ण मानसिक शांति निश्चिंतता।

साधना क्रम

यह प्रयोग विशेष प्रभाव शाली और तुरंत फलदायक है, जिसे सम्पन्न करने के लिए एक विशेष क्रम से निम्नलिखित नियमों का दृढ़ता से पालन करते हुए, मंत्र सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठा युक्त अन्न पूर्णा शंख प्राप्त करके सद्गुरु का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद ही यह प्रयोग सम्पन्न किया जाता है।

1. किसी भी अष्टमी से साधना प्रारंभ करें। चौदह दिन का यह साधना प्रयोग एक ही स्थान पर रह कर सम्पन्न करें।
2. पूर्ण स्वच्छता के साथ पवित्रता का ध्यान रखते हुए साधना प्रयोग करें।
3. उत्तर दिशा की ओर मुँह करके पीला आसन बिछा कर पीली धोती अर्थात् पीले वस्त्र धारण कर प्रयोग करें।
4. अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर लाल, वस्त्र बिछा कर प्राण प्रतिष्ठा युक्त "अन्न पूर्णा शंख" चावल की ढेरी बना के उस पर स्थापित कर दें।

जीवन को सभी दृष्टियों यश, कीर्ति और ऐश्वर्य से पूर्ण समृद्धिवान बनाने के लिए

माँ अन्नपूर्णा सर्वश्रेष्ठ देवी

जिसे श्री सुन्दरी भी कहते हैं

5. अपने सामने घी और तेल के दो अलग अलग दीपक जला कर रखें।
6. जल पात्र, कुंकुम अक्षत गणपति विग्रह अथवा सुपारी में गणपति स्थापित करके शंख के बराबर में रख दें फिर शंख को कच्चे दूध से स्नान कराये और फिर शुद्ध गंगा जल से स्नान करा के सात बार यह क्रम दोहराये, तत्पश्चात् शंख को यज्ञोपवीत धारण कराये, पंचोपचार विधि से गुरु का, गणपति का और अन्न पूर्णा शंख का पूजन करें।
7. अष्ट लक्ष्मियों की प्रतीक आठ बिन्दियां केशर से अन्न पूर्णा शंख पर निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुये लगायें।

1. ॐ धन लक्ष्म्यै नमः
2. ॐ धान्य लक्ष्म्यै नमः
3. ॐ धरा लक्ष्म्यै नमः
4. ॐ कीर्ति लक्ष्म्यै नमः
5. ॐ आयु लक्ष्म्यै नमः
6. ॐ यश लक्ष्म्यै नमः
7. ॐ पुत्र लक्ष्म्यै नमः
8. ॐ वाहन लक्ष्म्यै नमः

8. शंख के सामने अक्षत, आठ गुलाब के पुष्प दूध का बना नैवेद्य (प्रसाद) गोल आठ सुपारी, अबीर गुलाल, एक नारियल, आठ लौंग आठ इलायची समर्पित करें और फिर हाथ जोड़ कर निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए हृदय से प्रणाम करें -

1. ॐ महालक्ष्म्यै नमः
2. ॐ अन्न पूर्णायै नमः
3. ॐ शिवायै नमः

9. फिर कपूर या घी से भगवान शिव की आरती करे, पूर्ण पूजन के बाद स्फटिक माला से नीचे लिखे अन्न पूर्णा मंत्र की चौदह दिन तक नित्य 11 माला मंत्र जप करें।

अन्न पूर्णा मंत्र

|| ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अन्नपूर्णाय शिवायै नमः ||

साधक को चाहिए कि अष्टमी से शुरू करके अष्टमी को ही यह साधना प्रयोग समापन करें और अष्टमी के दिन आठ छोटी-छोटी कन्याओं को भोजन कराये। सामर्थ्य के अनुसार दक्षिणा देकर उनका सम्मानपूर्वक पूजन करें। क्योंकि कन्याओं को भी अन्नपूर्णा रूप माना गया है। प्रेम से उन्हें विदा करें और फिर प्रयोग किये गये अन्नपूर्णा शंख को लाल कपड़े में लपेट कर तिजोरी में या पूजा स्थल में रख दें। शंख पर चढाये हुए अक्षत एवं सुपारी को साथ वस्त्र में लपेट लें। शेष पदार्थ नैवेद्य आदि परिवार में बाँट कर ग्रहण कर लें। इस प्रकार से किया गया अन्नपूर्णा शंख प्रयोग साधक के जीवन में निश्चय ही पूर्णता चालीस दिन के अंदर अपना फल देता ही है। यह पूर्णता की साधना का प्रयोग कहलाता है जिसे प्रत्येक साधक को अपने जीवन में सम्पन्न करना चाहिए।

साधना सामग्री- 600/-

Scanned with CamScanner

नारायणोपनिषद में वर्णित है कि भगवान विष्णु का नित्य स्वरूप अनन्त ही है जिनसे समस्त सृष्टि स्पन्दित और गतिशील है।

श्री विष्णु की पत्नी श्री लक्ष्मी है जिसके कारण सृष्टि में विभिन्न प्रकार के चक्र चलते रहते हैं। लक्ष्मी भोग, ऐश्वर्य सुख की कारक देवी हैं और श्री विष्णु की सम्पूर्ण साधना निश्चय ही लक्ष्मी की पूर्ण साधना है।

अनन्त चतुर्दशी का शास्त्रों में विशेष महत्व है, और बताया गया है, कि जीवन में हमें बाधाएं या अड़चनें इसलिए आती रहती हैं, कि हम पूर्ण रूप से शुद्ध और पवित्र नहीं है।

नित्य सांसारिक व्यवहार करने से हमें तीन प्रकार के दोष व्याप्त होते हैं

1. **वाणी दोष** हमें बोल-चाल में, बातचीत में और व्यवहार में असत्य उच्चारण करना पड़ता है, इस झूठ की वजह से वाणी दोष व्याप्त होता है,
2. **मन दोष** हम चाहे अनचाहे किसी के प्रति घृणा, क्रोध या दुर्भावना व्याप्त करते हैं, उससे मनदोष व्याप्त होता है।
3. **मुख दोष** आज के युग में तो घर के बाहर कई स्थानों पर भोजन करना होता है, जहाँ शुद्धता पवित्रता का भान नहीं होता, ऐसी स्थिति में मुख दोष व्याप्त हो जाता है।

उपरोक्त तीनों दोषों को समाप्त करने के लिए शास्त्रों में एक मात्र अनन्त साधना का विधान ही बताया है, और यह भी कहा है कि वर्ष में एक बार इस दिन अनन्त साधना सम्पन्न करने पर यह सभी दोष समाप्त हो जाते हैं।

और जब दोष समाप्त हो जाते हैं, तो व्यक्ति शुद्ध और चैतन्य हो जाता है, फलस्वरूप चेहरे पर तेजस्विता आ जाती है, उसकी वाणी में दृढ़ता एवं स्पष्टता आ जाती है, और वह जीवन में सफलता की ओर अग्रसर होने लगता है।

इसके साथ ही साथ अनुभव में यह आया है, कि इस साधना को सम्पन्न करने पर तत्क्षण साधक की एक इच्छा पूरी होती ही है, वह इच्छा चाहे कितनी ही कठिन हो, और प्रयत्न करने पर भी सफल नहीं हो रही हो, कई बार तो साधना समाप्त होते-होते अपने कार्य की पूर्ति के समाचार प्राप्त हो जाते हैं।

मेरे पिताजी अपने जीवन में प्रति वर्ष अनन्त चतुर्दशी साधना करते थे और हर बार वे जो इच्छा व्यक्त करते, वह इच्छा उनकी अवश्य ही पूरी होती थी, यही नहीं अपितु वे अपने खर्चे पर आस-पड़ोस के स्त्री-पुरुषों को भी यह साधना इस दिन सम्पन्न कराते थे।

साधना रहस्य

भगवान अनन्त (विष्णु) से सम्बन्धित यह महत्वपूर्ण पर्व इस वर्ष दिनांक 01.09.20 को पड़ रहा है।

साधक को चाहिए कि अनन्त चतुर्दशी के दिन (यह साधना दिन को ही सम्पन्न हो सकती है) साधक स्नान कर आसन बिछा कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाए और सामने 'सर्व कामना सिद्धि अनन्त यंत्र' को स्थापित कर दे, यह यंत्र एक बार घर में स्थापित होने पर भविष्य में प्रति वर्ष यही यंत्र प्रयोग में आता रहता है, इस यंत्र को किसी पात्र में स्थापित कर दें और फिर इस यंत्र की संक्षिप्त पूजा करें, पूजा करते समय जल, कुंकुम, अक्षत या पुष्प आदि समर्पित करते समय 'ॐ अनन्ताय नमः' का उच्चारण करता रहे।

संक्षिप्त पूजा में यंत्र को पहले जल से स्नान करा ले, और फिर दूध से, दही से, घृत से, शहद से और शक्कर से स्नान करा कर दूसरे पात्र में केसर से 'ऐं ह्रीं श्रीं' लिख कर उस पर यंत्र को स्थापित कर दें, और यंत्र पर केसर का तिलक करें, अक्षत चढ़ाएं और पुष्प समर्पित करें, इसके बाद साधक शुद्ध घृत का दीपक व अगरबत्ती लगाएं।

इसके बाद साधक को चाहिए कि वह पहले से ही मंगा कर रखे गये शुद्ध यज्ञोपवीत या जनेऊ को यंत्र के सामने रख दें, साधक यज्ञोपवीत बाजार से प्राप्त कर सकते हैं, अथवा शुद्ध और प्रामाणिक यज्ञोपवीत सामग्री के साथ ही निःशुल्क पत्रिका कार्यालय से मंगवा सकते हैं।

इस यज्ञोपवीत को उस महायंत्र के सामने स्थापित कर दें और यज्ञोपवीत में आवाहन करें कि यज्ञोपवीत के प्रत्येक धागे में भगवान अनन्त आ कर स्थापित हों।

इसके बाद यज्ञोपवीत के सिर पर जो

श्री विष्णु की पत्नी श्री लक्ष्मी है जिसके कारण सृष्टि में विभिन्न प्रकार के चक्र चलते रहते हैं। लक्ष्मी भोग, ऐश्वर्य सुख की कारक देवी हैं और श्री विष्णु की सम्पूर्ण साधना निश्चय ही लक्ष्मी की पूर्ण साधना है।

तीन गांठें होती हैं, उन तीन गांठों के मूल में ब्रह्मा को स्थापित करें, मध्य में विष्णु को तथा सबसे ऊपरी गाँठ पर भगवान शिव का आवाहन करें और उन्हें स्थापित करें फिर तीनों गाँठों पर केसर लगावें तथा संक्षिप्त पूजन करें।

इसके बाद यज्ञोपवीत को खोल कर दोनों हाथों में लेकर उसे आकाश की ओर ऊपर उठाएं और 'ॐ सूर्याय नमः' मंत्र द्वारा उस यज्ञोपवीत में सूर्य की तेजस्विता का आह्वान करें, और मन में यह चिन्तन करें कि इस यज्ञोपवीत के प्रत्येक धागे में सूर्य स्थापित हो रहे हैं, जो कि मुझे पूर्ण तेजस्विता प्रदान करने में समर्थ हैं, साथ ही साथ भगवान् सूर्य मेरे पूर्व जीवन के और इस जन्म के सभी पापों को समाप्त कर रहे हैं, और साथ ही साथ जो तीन प्रकार के दोष व्याप्त होते हैं, उन तीनों प्रकार के दोषों को भी भगवान सूर्य समाप्त कर मुझे पूर्ण चैतन्य और शुद्ध बना रहे हैं।

ऐसी भावना मन में रखते हुए यज्ञोपवीत को नीचे कर लें और फिर उसे समेट कर अनन्त यंत्र के सामने स्थापित कर दें और उस यज्ञोपवीत को भगवान अनन्त का स्वरूप मान कर उसकी संक्षिप्त पूजा करें, उन्हें नैवेद्य समर्पित करें और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें कि भगवान अनन्त मेरे जीवन की समस्त कामनाओं को पूर्ण करें और अमुक इच्छा को तो तुरन्त ही पूर्ण करें।

इसके उपरान्त भगवान अनन्त का ध्यान करें

उद्यत्प्रद्योतनरूचिं तप्तहेमावदातं
पाश्चर्वद्वन्गु जलधि सुतया विश्वधात्र्या च जुष्टं
नानारत्नोल्लासित-विविधाकल्पमा पीत वस्त्रम्
अनन्त विष्णु वन्दे कर कमल कौमोद की चक्रपाणिम्

अर्थात् उगते हुए सैकड़ों सूर्य के समान, तेजस्वी तपे हुए सोने के समान जिनकी अंग कांति है, पृथ्वी एवं लक्ष्मी जिनकी सेवा में है रत्न जड़ित आभूषण एवं चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा एवं पद्म शोभित है, ऐसे अनंत विष्णु का मैं ध्यान करता हूँ।

इस साधना में भगवान विष्णु के मंत्रों से चैतन्य की गई चैतन्य माला का ही प्रयोग किया जाता है। पूजा में दूध से बने प्रसाद का भोग लगायें।

इसके बाद साधक निम्न मंत्र की ग्यारह माला मंत्र जप करें

अनन्त मंत्र

।। ॐ ऐं अनन्ताय ऐं नमः ।।

जब ग्यारह माला मंत्र जप पूरी हो जाए, तब भगवान की आरती करें, इसमें आपको जो भी आरती स्मरण हो, उस आरती को सम्पन्न कर सकते हैं।

उसके बाद यज्ञोपवीत को गले में धारण कर लें और पुराना यज्ञोपवीत उतार दें, कुछ साधक पुराना यज्ञोपवीत गले में ही रहने देते हैं, और उस यज्ञोपवीत को 24 घंटों के लिए दाहिनी भुजा पर बांध लेते हैं, इन दोनों में से किसी भी प्रकार का विधान साधक कर सकते हैं।

इस प्रकार का प्रयोग करने के बाद ही साधक अपने परिवार के साथ भोजन करे, और यथोचित दान आदि दें।

वास्तव में ही यह प्रयोग अपने-आप में अत्यन्त तेजस्वी और प्रभावयुक्त है, मैंने प्रतिवर्ष इस प्रयोग को आजमाया है, और मुझे अनुभव हुआ है कि इससे मनोवांछित कामना सिद्धि तो निश्चय ही होती है।

साधना सामग्री 450/-

आपके रसोई घर में काली मिर्च तो होगी ही जिसे आप पीस कर डिब्बी में रखती हैं और जो नमक के साथ सलाद या सब्जी में डालने के काम में ली जाती है। इसे घरेलू इलाज के अन्तर्गत औषधि के रूप में भी प्रयोग किया जा सकता है। यह जानने के लिए निम्नलिखित विवरण पढ़ें। भाव प्रकाश निघुण्टु में लिखा है

मरिचं कटुकं तीक्ष्णं दीपनं कफ वातजित्।
उष्णपित्तकरं रूक्षं श्वास शूल कृमीन् हरेत्।
तद्रार्दं मधुरं पाके नात्युष्णं कटुकं गुरु।
किंचित्तीक्ष्णगुणं श्लेष्मप्रसेकिस्यादपित्तलम्।।

भाषा भेद से नाम भेद सं.-मरिच। हि.-काली मिर्च। म.-मिरे। गु.-मरि। बं.-मरिच। तै.-मरियालु तिगे। कन्न.-कारेमेणसु।

गुण यह चरपरी, तीक्ष्ण, जठराग्नि प्रदीप्त करने वाली, कफ तथा वात को नष्ट करने वाली, गर्म, पित्त कारक, रूक्ष और श्वास वेग तथा कृमि को हरने वाली है। ये सब काली मिर्च के गुण हैं। हरी काली मिर्च पाक में मधुर, बहुत गर्म नहीं, कटु, भारी, थोड़ी तीक्ष्ण गुण वाली, कफ को निकालने वाली और पित्तकारक नहीं है। यूनानी हिकमत के मतानुसार यह गरम और खुश्क होती है। अफारा, दांत दर्द और ज़हर का असर दूर करने वाली होती है। खट्टी डकारें बन्द करती है।

परिचय काली मिर्च सर्वविदित पदार्थ है अत: इसका विशेष परिचय देना जरूरी नहीं। आयुर्वेद के सुप्रसिद्ध औषधि-समूह 'त्रिकूटा' या 'त्रिकटु' की तीन औषधियों (सोंठ, पीपल, कालीमिर्च) में से एक औषधि है। यह लता जाति की वनस्पति का फल होती है। इसकी उत्पत्ति दक्षिण भारत के केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक प्रान्त तथा पूर्वोत्तर भारत के आसाम प्रान्त के अलावा श्रीलंका, मलाया, इण्डोनेशिया आदि देशों में होती है। भोजन के साथ प्राय: नमकदानी के साथ पिसी हुई काली मिर्च भी रखी जाती है।

उपयोग इसका उपयोग कच्चे सलाद पर बुरकने के अलावा सभी दाल और सब्जियों पर भी बुरक कर करना चाहिए। नमक न बुरक कर काली मिर्च ही बुरकें तो अति उत्तम होगा। इसे बुरकने से सलाद और दाल-साग का स्वाद बढ़ जाता है। इसे औषधि के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। कुछ खास और गुणकारी प्रयोग यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

मन्दाग्नि काली मिर्च, सोंठ, पीपल, जीरा, सेंधा नमक सब 10-10 ग्राम मात्रा में, पीस कर मिला लें। भोजन के बाद 2 ग्राम मात्रा में थोड़े जल के साथ फांकने से मन्दाग्नि दूर होती है और हाजमा सुधरता है।

बवासीर काली मिर्च 20 ग्राम, जीरा 10 ग्राम और शक्कर या मिश्री 15 ग्राम इनको कूट पीस कर मिला कर रख लें। इस योग को सुबह-शाम भोजन के बाद 1-1 चम्मच (लगभग 5 ग्राम) थोड़े से पानी के साथ फांकने से बवासीर रोग में लाभ होता है।

फुंसी फुंसी उठते ही यदि काली मिर्च पानी में घिस कर इसके लेप को फुंसी पर (सिर्फ फुंसी पर ही) लगाने से फुंसी बैठ जाती है।

नेत्र ज्योति काली मिर्च का चूर्ण 3 ग्राम थोड़े से घी या मक्खन के साथ मिला कर प्रतिदिन सुबह-शाम नियमित रूप से खाने से आँखों की कमजोरी दूर होती है और नेत्र ज्योति बढ़ती है।

मलेरिया ज्वर में काली मिर्च के 10 दाने और तुलसी की हरी पत्तियाँ 10 ग्राम लेकर बारीक पीसकर मटर के आकार की गोलियां बना लें और दो-दो गोलियां 3-3 घण्टे के अंतर से पाली से लें, लाभदायक हैं।

कफ खांसी काली मिर्च का चूर्ण शहद में मिला कर चाटने से खांसी में आराम होता है और अन्दर जमा हुआ कफ निकल जाता है जिससे श्वास वेग और दमा रोग में भी आराम मिलता है।

(विशेष प्रयोग के पूर्व अपने वैद्य की सलाह ले लें।)

सीख

महर्षि धन्वन्तरि की पीठ में एक बड़ा घाव हो गया। ऐसा घाव,जिसे वे अपनी समस्त प्रतिभा और बुद्धि से मिटा न सके। वे स्वयं बड़े प्रख्यात चिकित्सक और आयुर्वेद के अनुभवी विद्वान थे। जीवनपर्यन्त चिकित्सा शास्त्र की सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक शिक्षा देते और नयी-नयी खोजें करते रहते थे, किन्तु हाय, वह घाव अपनी पूरी शक्ति लगाकर भी वे ठीक न कर पाये। घाव में लगातार पीब और रक्त आता रहा, जिसे आधुनिक भाषा में कैंसर कहते हैं। इसी प्रकार के जीर्ण घाव से वे परेशान और उद्विग्न रहने लगे। पीठ में असह्य पीड़ा थी। कभी-कभी तो वे मृत्यु के दु:खद स्वप्न देखने लगते। यह कैसा विकट फोड़ा है। कैसे ठीक होगा, कहीं कोई घातक दुर्घटना न हो जाए।

वे सोच रहे थे, 'मुझमें चिकित्सा विज्ञान की इतनी मौलिक प्रतिभा है। लोग मुझे अपने युग का सर्वोत्कृष्ट चिकित्सक कहकर सम्मान करते हैं। महान पुरुषों की इस जन्मभूमि भारत में सर्वत्र मेरी इतनी प्रतिष्ठा है। मैं दूसरों को स्वस्थ करने का दम भरता हूँ और मैंने अनेक असाध्य रोगियों को स्वस्थ किया भी है। फिर क्या कारण है कि मैं चिकित्सक होकर स्वयं अपने ही शरीर को स्वस्थ नहीं कर पा रहा हूँ। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का साधन मनुष्य का शरीर है। मुझे शरीर रक्षा के लिये कुछ करना चाहिये। रोग रहित शरीर ही तो सर्व सुखों का मूल है। यदि जीवन है तो जहान है। बिना स्वास्थ्य के संसार में आनन्द कहाँ?'

'फिर क्या किया जाए?'

उनकी अंतरात्मा ने झकझोर कर उन्हें जगाया, 'धन्वन्तरि! तुझमें नयी-नयी चिकित्सा करने की अद्भुत प्रतिभा है। तूने असाध्य रोगों को ठीक करने में अपना जीवन लगाया है। नयी जड़ी-बूटियों को खोजने में तथा उनके गुण परखने में जीवन की श्रेष्ठता और सफलता मानी है, फिर क्यों निराश होता है? अपने पीठ के घाव को ठीक करने के लिये किसी नयी चमत्कारी जड़ी-बूटी की खोज कर!'

यह सोचकर महर्षि उठ बैठे। अपना सामान एक थैले में रखा। डंडा हाथ में ले वन-वन नयी जड़ी-बूटियों का अन्वेषण और परीक्षण करने लगे। वे उन्हें कूट-पीसकर घाव पर लगाते और घाव पर उनका प्रभाव देखते।

उन्होंने अनेक नयी-नयी जड़ी-बूटियों की परख की। अजीब प्रकार के पेड़-पौधों, जड़ों और फलों की परीक्षा की।

उपकारी औषधि की खोज में उन्होंने दूर-दूर तक भ्रमण किया। वन-वन मारे फिरे। पाँवों में काँटे चुभे, हिंस्र पशुओं के खतरों को सहा। मरते-मरते बचे। पर्वतों पर चढ़ते-चढ़ते उनके पाँवों की मांस पेशियाँ थक गयीं। सरिताओं के तट पर लगे हरे-भरे प्रदेशों की सैर की और नये वृक्षों के पत्तों और छालों का घाव पर प्रयोग किया।

वे थककर बैठ जाते, पर उनकी अंतरात्मा कहती, 'धन्वन्तरि! बस थक गया! कठिनाइयों से पराजित हो गया! यह वनस्पति-विज्ञान अभी चमत्कारों से भरा है। फिर साहस कर। हिम्मत से फिर नयी खोज कर। तू एक दिन अवश्य सफल होगा।'

इस प्रकार की प्रेरणा से चिकित्सक धन्वनतरि फिर उठकर चलने लगते। भूख और प्यास की परवाह न करते। थकान भूलकर कठिनाइयों से पुन: संघर्ष करने लगते।

जो संघर्ष करता है, उसके मार्ग से कठिनाइयाँ स्वत: हटती जाती हैं। सही प्रकार से श्रम करने से उन्नति का रास्ता साफ होता जाता है।

धन्वन्तरि ने अपना धैर्य न छोड़ा। कुछ-न-कुछ करते रहे।

पर मनुष्य के श्रम और संघर्ष की एक सीमा है। एक हद पर पहुँचने के उपरांत उसे फिर सोचना-विचारना पड़ता है कि वह क्या करे? क्या अपनी योजनाओं में कोई परिवर्तन करे?

वे अपने घर की ओर लौटे आ रहे थे। थके-हारे बहुत महीनों तक दूर-दूर तक घूमकर अपने आश्रम के समीप पहुँच रहे थे।

बस, उनका आश्रम दो-तीन मील के फासले पर दीखता था। वे पर्वत पर बैठे सोच रहे थे।

अचानक एक ओर से आवाज आयी - 'मैं आपसे ही कह रही हूँ।'

'कौन बोल रहा है, उस पर्वतीय प्रदेश में?'

'आप इधर-उधर आश्चर्य से क्या देख रहे हैं? आपसे ही तो कह रही हूँ।'

धन्वन्तरि ने विफारित नेत्रों से चारों ओर देखा, पर कोई मनुष्य नजर न आया।

'भगवन्! मैं ही आपके रोग की औषधि हूँ।'

'कौन हो तुम?'

'मैं एक जड़ी हूँ।'

'तुम किधर हो? मुझे तो दिखायी नहीं देतीं? फिर बोलो।'

'भगवान्! अपने पास ही देखिये। मैं ही आपके रोग की औषधि हूँ। मेरा उपयोग घाव पर करके देखिये।

महर्षि ने देखा, उनके समीप ही उगी हुई एक जड़ी बोल रही थी - 'मैं ही आपके घाव को ठीक कर सकती हूँ।'

'ओफ ! तो क्या तुम सच कहती हो।' आश्चर्य-मिश्रित हर्ष से ऋषि बोल उठे।

'हाँ, हाँ, इसमें चौंकने की-या बात है। मेरा प्रयोग तनिक अपने घाव पर करके तो देखिये। जीर्ण घावों को मैं ही आराम कर सकती हूँ। चिकित्सकों को मेरा पता ही नहीं है। आपने श्रम और लगन से घूमकर मुझे मुग्ध कर लिया है। आपके संघर्ष के कारण ही मैं आप पर दया करके प्रकट हुई हूँ।'

'अच्छा लाओ, तुम्हारे पत्तों का प्रयोग घाव पर करके देखता हूँ।' महर्षि ने अपने घाव पर उस जड़ी को लगाया।

जादू की तरह था उसका चमत्कारी प्रभाव ! जड़ी को पीसकर लगाते ही फोड़ा ठीक होने लगा। उसकी मवाद धीरे-धीरे निकल गयी और धन्वन्तरि को लगा कि यही दवा थी। अहह! कितना बड़ा अनुसंधान था? जीर्ण फोड़े की ऐसी अमृतोपम औषधि! कितनी जल्दी उसका गुणकारी प्रभाव अनुभव होने लगा। उन्हें रह-रहकर लगा कि इस खोज के बिना तो उनका आयुर्वेद संबंधी ज्ञान अधूरा ही था। इसकी खोज उनके जीवन की एक स्थायी खोज थी, जिस पर एक वैद्य को सच्चे अर्थों में गर्व हो सकता है। कठिनाइयाँ तो बहुत आयीं, पर इस अद्भुत जड़ी की खोज मिलने से उन्हें आत्मसंतोष हुआ। वे इतने दिनों की थकान और पीड़ा को भूल गये।

धन्वन्तरि आश्चर्य से बोले - 'तुम इतनी चमत्कारी जड़ी हो। मेरे चिकित्सा विज्ञान में तुम एक अनुपम खोज हो। तुम्हें खोजकर मैं आयुर्वेद को एक नयी चीज दे रहा हूँ। तुम्हारे उपयोग द्वारा असंख्य भूले-भटके दुखी रोगियों को लाभ पहुँचेगा। पीड़ित मानवता की सेवा होगी। पर . . .पर. . .।'

जड़ी ने पूछा, 'पर.... पर क्या कहना चाहते हैं महर्षि?'

'एक शंका मन में उभर आयी है?'

'कहिये, मैं यथासंभव उसका निराकरण करूँगी'

'तुम तो मेरे आश्रम के समीप ही थीं। मैं तुम्हारी खोज में वन-वन, पहाड़ और सरिताओं पर मारा-मारा फिरा . . . अब तक क्यों न बोलीं? इतने दिन मुझे व्यर्थ क्यों घुमाया. . .? यह देखो, चलते-चलते मेरे पाँवों में छाले उभर आये हैं। शरीर थकान से भर गया है। श्रम और संघर्ष से टूट-फूट चुका हूँ।. . .बोलो! बोलो! इस बूढ़े शरीर को क्यों पथ-पथ का घुमक्कड़ बनाया?'

जड़ी पहले तो चुप रही।

फिर लजाती हुई बोली, 'महर्षि! इधर-उधर खोजने में वास्तव में आपको बड़ा कष्ट पहुँचा। आपको बड़ा श्रम करना पड़ा है। कठिनाइयों से बड़ा संघर्ष करना पड़ा है।'

'तुम्हें मुझ पर दया नहीं आयी?'

'आपको जीवन का एक सत्य सिखाना था।'

'मुझ जैसे वृद्ध को भी कुछ सीखने को बचा था क्या?'

'हाँ, हाँ, सीखने की क्रिया तो जीवन के अंतिम दिन-तक चलती रहती है। जिसने सीखने का काम छोड़ दिया, जिसने ज्ञान की इतिश्री समझ ली, वास्तव में वही बूढ़ा है। इस दृष्टि से आप तो जवान है।'

'फिर क्या है वह जीवन का चरम सत्य?' ऋषि ने उत्सुकतापूर्वक पूछा। जड़ी ने कहा, 'क्षमा करना भगवन्! यदि अनायास ही मैं आपको प्राप्त हो गयी होती, तो नयी-नयी औषधियों का शोध कर्म आप कहाँ कर पाते? श्रम और संघर्ष के अभाव में कैसे आपका जीवन निखर पाता?'

आपके इस शोध कर्म से जो अन्य नवीन जड़ी-बूटियों के परिणाम आपको ज्ञात हुये वह कैसे प्राप्त होते।

ऋषि निरुत्तर हो गये।

(कल्याण से साभार)

महाभारत एवं भागवत के श्रीकृष्ण

भारतीय संस्कृति, धर्म-दर्शन, साहित्य और कला के विविध क्षेत्रों में श्रीकृष्ण की लीला-चरित का व्यापक प्रभाव देखा जाता है। श्रीमद्भागवत तो समग्रतः एक लीला परक ग्रंथ ही है, जिसके मुख्य प्रतिपाद्य श्रीकृष्ण ही हैं। वल्लभ सम्प्रदाय में इस ग्रंथ को प्रस्थान चतुष्ठ्य मानने का आधार यही प्रतीत होता है, कि इस ग्रंथ में उपनिषद् ब्रह्मसूत्र तथा गीता के अभावों की पूर्ति होती है। शंकराचार्य, रामानुजाचार्य तथा महवाचार्य अपने सिद्धांतों की व्याख्या के लिए प्रस्थानमयी को ही आधार मानते हैं, किन्तु वल्लभ सम्प्रदाय में श्रीमद्भागवत को प्रस्थानमयी के समकक्ष मानकर उसे चतुर्थ प्रस्थान की संज्ञा दी गई है।

वल्लभाचार्य कहते हैं - वेद (उपनिषद), श्रीकृष्ण के वचन (गीता), व्यास के सूत्र (ब्रह्म सूत्र) और व्यास की समाधि भाषा (भागवत) । ये चार ही प्रमाण हैं। चारों प्रस्थानों में एकात्मकता होने से वे प्रामाणिक ज्ञान के स्रोत हैं।

गीता में, जो महाभारत का ही अंश है, सिद्धांतों की व्याख्या की गई है। गीता और महाभारत में निष्काम कर्मयुक्त प्रवृत्ति तत्त्व का विवेचन किया गया है, किन्तु उसमें भक्ति का समावेश भागवत में ही हो सका है। भागवत की रचना का उद्देश्य ही कर्म प्रवृत्ति में भक्ति का निष्पादन प्रतीत होता है। भागवतकार के अनुसार भक्ति के बिना निष्काम कर्म संभव ही नहीं है। अतः भागवत का उद्देश्य निष्काम भक्ति का प्रतिपादन ही माना जाता है।

गीता में श्रीकृष्ण को प्रकृति और पुरुष से परे एक सर्वव्यापक, अव्यक्त तथा अमृत-पद माना गया है और उन्हें परम पुरुष भी कहा गया है। श्रीकृष्ण के दो स्वरूप माने गए हैं - 'व्यक्त' और 'अव्यक्त'। अव्यक्त के भी सगुण, सगुण-निर्गुण तथा निर्गुण तीन भेद किये गए है। श्रीकृष्ण उस परम पुरुष के मूर्तिमान अवतार हैं और इसी कारण से गीता में श्रीकृष्ण ने अपने विषय में पुरुषोत्तम का निर्देश स्थान-स्थान पर किया है, कि अव्यक्त की उपासना अधिक सहज है।

यह शंका की जाती है, कि प्रतिपाद्य विषय की पूर्णता वेद एवं गीता में हो जाने चारों प्रमाणों का आश्रय व्यर्थ है।

इसका उत्तर देते हुए वल्लभाचार्य कहते हैं, कि इन चारों प्रमाणों में प्रत्येक उत्तरवर्ती प्रमाण अपने पूर्ववर्ती प्रमाण में उत्पन्न होने वाले संदेह का निराकरण करने वाला है। जो इन चारों प्रमाणों के अविरोधी हैं, वे प्रमाण माने जा सकते हैं, किन्तु जो इन चारों प्रमाणों के विरोधी हैं, वे किसी भी दशा में प्रमाण नहीं माने जा सकते। अतः वल्लभ सम्प्रदाय में यह माना जाता है, कि वेद से उत्पन्न शंकाओं का निराकरण ब्रह्म-सूत्र से और ब्रह्म सूत्र की शंकाओं का निराकरण श्रीकृष्ण के वचनों (गीता) से होता है, किन्तु इन सबसे उत्पन्न शंकाओं का निराकरण श्रीमद्भागवत से होता है।

महाभारत तथा गीता एवं भागवत में श्रीकृष्ण के स्वरूप का विकास उत्तरोत्तर लक्षित होता है। महाभारत को एक ऐतिहासिक ग्रंथ माना जाता है। इसके विविध आख्यानों को अलग-अलग कर दिया जाए, तो श्रीकृष्ण का उसमें मानवीय रूप ही अधिक भास्वर रूप में हमारे सामने आता है, किन्तु आख्यानों में जिस भागवत धर्म और तत्त्व का निरूपण हुआ है, वह अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। गीता उसी भागवत धर्म और तत्त्व को वैज्ञानिक रूप से समन्वित करके प्रस्तुत करती है। श्रीमद्भागवत में इन्हीं सबकी तात्त्विक व्याख्या की गई है। भागवत में वर्णित पृथु, प्रियव्रत, प्रह्लाद आदि भक्तों की कथाएं तथा निष्काम कर्म के वर्णनों से यह स्पष्ट हो जाता है, कि महाभारत का नारायणीय धर्म और श्रीमद्भागवत का धर्म आदिकाल में एक ही था, परंतु परिवर्ती युग में दोनों ग्रंथों में भिन्न-भिन्न सिद्धांतों की प्रधानता दी गई।

शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय में प्रमेय की तीन कोटियां निश्चित की गई हैं - स्वरूप कोटि, कारण कोटि और कार्य कोटि (स्वरूप कोटि में प्रमेय श्रीकृष्ण हैं तथा उन्हें क्रिया-विशिष्ट, ज्ञान-विशिष्ट तथा ज्ञान-क्रिया-विशिष्ट भेद से त्रिविध माना गया है।) पूर्व मीमांसा में प्रतिपादित कर्मकाण्ड के द्वारा 'क्रिया विशिष्ट श्रीकृष्ण' का, उत्तर मीमांसा में प्रतिपादित ज्ञानकाण्ड के द्वारा 'ज्ञान विशिष्ट श्रीकृष्ण' का तथा गीता और भागवत में प्रतिपादित कर्म और ज्ञान के द्वारा 'कर्म-ज्ञान विशिष्ट श्रीकृष्ण' का निरूपण होता है।

महाभारत में श्रीकृष्ण का रूप लोक-रक्षक भी है और लोक-रंजक भी। फिर

महाभारत के शांति-पर्व में इसी प्रकार भगवान ने नारद जी को अपना विश्व रूप दिखलाया है तथा भागवत के भी एकाधिक प्रसंगों में विराट पुरुष का वर्णन किया गया है। इससे यह प्रतिपादित किया जाता है, कि सिद्धांततः महाभारत, गीता और भागवत में परब्रह्म को एक ही रूप में दिया है तथापि महाभारत और उसके अंश गीता में अंतर यह है कि महाभारत में श्रीकृष्ण का परमतत्त्व के रूप में तादात्म्य इतने व्यापक रूप में नहीं मिलता, जितना गीता और भागवत में देखा जाता है।

यद्यपि महाभारत में भी श्रीकृष्ण को विशिष्ट अवतार माना गया है तथा पिण्ड और ब्रह्माण्ड संबंधी ज्ञान के साथ आत्मविद्या के गूढ़ तत्त्वों को समझाया गया है। तथापि भागवत में इन सबका निरूपण विशेष रूप में करके भक्ति को सर्वोपरि महत्व दिया गया है।

लीलापरक ग्रंथ होने से भागवत में

गीता और महाभारत में निष्काम कर्मयुक्त प्रवृत्ति तत्त्व का विवेचन किया गया है, किन्तु उसमें भक्ति का समावेश भागवत में ही हो सका है। भागवत की रचना का उद्देश्य ही कर्म प्रवृत्ति में भक्ति का निष्पादन प्रतीत होता है। भागवतकार के अनुसार भक्ति के बिना निष्काम कर्म संभव ही नहीं है। अत: भागवत का उद्देश्य निष्काम भक्ति का प्रतिपादन ही माना जाता है।

भगवान के प्राय: सभी अवतारों का वर्णन किया गया है, किन्तु श्रीकृष्ण को विशेष शक्तियों से युक्त साक्षात् पूर्ण पुरुष माना गया है। अवतारों का प्रभेद पुरुषावतार, गुणावतार तथा लीलावतार के रूप में करते हुए वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युमन तथा अनिरुद्ध का व्यूह भी मान्य किया गया है। गुणावतारों में विष्णु, ब्रह्मा और रुद्र को भी मान्य किया गया है। इनके अतिरिक्त मन्वन्तरावतार भी स्वीकार किये गए हैं, जो सभी चौदह मन्वन्तरों में देखे जाते हैं। भागवत का यह वैशिष्ट्य ही उसे अन्य पुराणों तथा महाभारत से अलग करता है।

भागवत में श्रीकृष्ण को ऐसा अवतारी माना गया है, जो भक्तों के वश में होते हैं। माता देवकी श्रीकृष्ण की स्तुति करते हुए कहती हैं - 'हे आद्य पुरुष: आपके अंश का अंशांश यह प्रकृति है, उसी के सत्वादि गुण-भाग परमाणु द्वारा इस विश्व की सृष्टि, स्थिति और प्रलयादि हुआ करते हैं, मैं आपकी शरण हूँ।'

गीता में भी ऐसे भाव मिलते हैं। श्रीकृष्ण कहते हैं - 'मैं अपनी माया के एक अंश मात्र से इस जगत को व्याप्त करके स्थित हूँ।' अथवा - 'हे अर्जुन! इस विश्व में मुझसे परे कुछ भी नहीं है।'

इस तरह गीता तथा भागवत में श्रीकृष्ण को ज्ञान, भक्ति, बल, ऐश्वर्य, वीर्य और तेज - इन षड्गुणों से सदैव संयुक्त माना गया हैं

भागवत में कुन्ती श्रीकृष्ण की स्तुति करते हुए कहती हैं - 'हे भगवान! कई लोग कहते हैं, कि आपने पुण्य-श्लोक राजा यदु का यश बढ़ाने के लिए ही यदुवंश में जन्म लिया है . . . जो लोग प्रेम तथा भक्ति-भाव से आपकी अद्‌भुत लीलाओं को सुनते हैं, सुनाते हैं तथा स्वयं गाकर और स्मरण करके आनन्दित होते हैं, वे शीघ्र ही सांसारिक प्रवाह से मुक्त होकर आपके श्रीचरणों के दर्शन प्राप्त करते हैं।'

इस प्रकार की अन्य स्तुतियों में श्रीकृष्ण का परत्व ही सिद्ध किया गया है, जो भागवत का अपना वैशिष्ट्य ही कहा जायेगा।

तुलनात्मक दृष्टि से महाभारत, गीता तथा भागवत में श्रीकृष्ण के तीन भिन्न रूप दिखलायी देते हैं। भगवान के 'वीरत्व विधायक स्वरूप' के दर्शन महाभारत में, 'परब्रह्म स्वरूप' के गीता में तथा 'रसिकेश्वर स्वरूप' के दर्शन भागवत में होते हैं। यद्यपि भागवत में श्रीकृष्ण के सभी स्वरूपों का परिदर्शन होता है तथापि प्रधानता उनके रसिकेश्वर स्वरूप की दिखलायी देती है। गीता के ''परित्राणाय साधूनाम'' की उक्ति केवल अवतार-दर्शन के रूप में है, जबकि उसके व्यावहारिक और क्रियात्मक पक्ष का स्पष्टीकरण भागवत में ही प्राप्त होता है।

श्रीकृष्ण की लीलाओं को भागवत में सर्वत्र एक प्रकार की लोकोत्तर भूमिका प्रदान की गई है। महाभारत में यह बात दिखलायी नहीं देती। भागवत के घटना प्रधान स्थलों पर अत्यंत विलक्षणता का आभास होता है। जैसे, गोस्वामी तुलसीदास मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र का अनुगायन करते हुए ''रामचरित मानस'' में अपने प्रधानसूत्र 'भ्रति' का कहीं त्याग नहीं करते और उसी भावना से अभिभूत होकर सर्वत्र श्रीराम के चरित्र में अलौकिकता का समावेश करते चलते हैं, उसी प्रकार भागवत में व्यासदेव श्रीकृष्ण चरित का अनुगायन करते हुए भवगत तत्त्व का निरूपण करते हैं तथा भक्ति रस का भी संचार करते हैं तथा भगवान के दिव्य, मंगलमय स्वरूप को भी उद्‌घाटित करते चलते हैं। ऐसे स्थलों पर भागवतकार स्वयं भगवान के स्वरूप में इतने तल्लीन हो जाते हैं कि अन्य समस्त भाव तिरोभूत से हो जाते हैं तथा हृदयानुभूति रागात्मिका वृत्ति के साथ स्तुतियों एवं स्तोत्रों के रूप में कृष्ण का परब्रह्मतत्त्व प्रवाहित होता है।

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं महितां विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

इस श्लोक में बताया गया है कि जीवन का श्रेष्ठ तत्व शिष्य होता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में यदि सबसे उच्च कोटि का कोई शब्द है तो वह शिष्य है। शिष्य का मतलब यह नहीं है कि वह गुरु से दीक्षा लिया हुआ व्यक्ति हो, शिष्य का मतलब है कि जो प्रत्येक क्षण नवीन गुणों का अनुभव करता हुआ अपने जीवन में उतारता हो वह शिष्य है बालक भी शिष्य है, जो मां के गुणों को अपने जीवन में उतारता है, देख करके अनुरूप बनता है।

- एक शिष्य के लिए समय मूल्य नहीं रखता। उसके लिए तो महत्व इस बात का है कि गुरु क्या आज्ञा उसे देते हैं और वह कैसे उस आज्ञा का पालन करता है। जो गुरु कहे वह करे तो वह शिष्य है। तर्क वितर्क अच्छे शिष्य का लक्षण नहीं है।
- एक शिष्य को चाहिए कि वह अपने हृदय को, मन को इतना शुद्ध और दिव्य बना दे जिससे गुरु उसमें स्थापित हो सके। इतना चैतन्य बना दे कि बाहर की दूषित हवाएं उस पर असर नहीं कर पाएं, उस पर जीवन के विकारों का कोई प्रभाव न हो।
- आलस्य, द्वेष, काम, क्रोध, असत्य भाषण ये शिष्य को समाप्त कर देते हैं। इनसे बचना और इन पर विजय प्राप्त करना हर शिष्य का धर्म है, कर्त्तव्य है।
- दिनभर गुरु कार्य में जुटे रहना, गुरु का चिंतन करते रहना और अगर कोई गलती हो गई है तो गुरु के सामने प्रायश्चित कर देना यह शिष्य के जीवन की उच्चता है।
- शिष्य की आँखें गुरु के सामने नमन हो, उसमें श्रद्धा भाव हो, उसकी आँखों में प्रेम का भाव हो और समर्पण का भाव हो।
- जो फलदार वृक्ष होता है वह सबसे पहले झुकता है, जो सुखी हुई लकड़ी होती है वह ठूंठ की तरह खड़ी रहती है। शिष्य का गुरु के आगे झुकना यह प्रमाण है कि उसमें प्रेम है, श्रद्धा है, समर्पण है।
- केवल 'गुरुदेव ! गुरुदेव !' कहने से व्यक्ति शिष्य नहीं हो जाता। वह शिष्य होता है पूर्ण समर्पण द्वारा, गुरु सेवा द्वारा। गुरु सेवा के माध्यम से ही शिष्य का नाम गुरु के हृदय पटल पर अंकित हो जाता है।

- गुरु शिष्यों में भेद नहीं करता, शिष्य हो या शिष्या हो वे गुरु के लिए बराबर हैं।
- मैं तुम्हें पहचानता हूं, तुम्हारे शरीर को पहचानता हूँ, तुम्हारे प्राणों को पहचानता हूँ, तुम्हारी चेतना को पहचानता हूँ। इसीलिए मैं जानता हूँ कि साधना मार्ग पर कौन सी साधना तुम्हारे लिए श्रेष्ठ है।
- यदि मैं तुम्हारा हाथ पकड़ूंगा तभी तुम पूर्णता तक पहुंच पाओगे नहीं तो तुम भटक जाओगे, बीच रास्ते में ही मार्ग बदल दोगे। इसलिए मुझे तुम्हारा हाथ पकड़ कर रखना पड़ेगा और तुम चाहो भी तो उसे छुड़ा नहीं सकते।
- हो सकता है इस संसार के माया जाल में तुम फंस जाओ मगर फंसने के बावजूद भी तुम्हारे और मेरे प्राणों के संबंध रहेंगे। उसको तुम भूल नहीं सकोगे क्योंकि हर क्षण, हर ध्वनि में तुम्हें मेरा ही स्वरूप दिखाई देगा। जब तुम दर्पण में अपने चेहरे को देखोगे तो उसमें भी तुम्हें मेरा ही प्रतिबिम्ब दिखाई देगा।
- मैं तुम्हें जीवन का वह रास्ता दिखाने आया हूं जहां ठोकर पर सारी दुनिया को रखा जाता है, जहां संसार को ठोकर मारकर अपने आपको पूर्णता की ओर अग्रसर करने की क्रिया होती है। यह दीनहीन शिष्य बनने की क्रिया नहीं है। तुम्हें तो एक ऐसा विस्फोट करना है कि जीवन अद्धितीय बन सके।
- मैं उस प्रकार का गुरु नहीं हूं कि तुम्हें उपदेश देना चाहता हूँ। मैं तो तुम्हें सही रास्ते पर अग्रसर करने की क्रिया कर रहा हूं। तुम नहीं भी चाहोगे तो भी मैं तुम्हें घसीट कर उस मार्ग पर खड़ा करूंगा ही जिस पर अग्रसर होने पर पूर्णता प्राप्त हो सकती है।
- मैं हजारों सालों में पहली बार एक नवीन चेतना दे रहा हूँ, एक नवीन ज्ञान दे रहा हूँ, नवीन भावना दे रहा हूँ कि इस बार तुम्हें रुकना नहीं है, मोह में नहीं पड़ना है इस बार पहाड़ से टकराना है, हिमालय से टकराना है। इस बार मैं तुम्हें उस घटिया रास्ते पर बढ़ने ही नहीं दूंगा क्योंकि मैं तुम्हारे पूर्ण रक्त को शुद्ध कर रहा हूँ।
- तुम्हारा मेरा संबंध इस जीवन का नहीं है पूरे पच्चीस जन्मों का संबंध है और पिछले पच्चीस जन्मों से तुम्हारी बागडोर मैंने अपने हाथ में पकड़ रखी है।

भुवनेश्वरी जयंती-30.08.20

भुवनेश्वरी साधना

अटूट धनप्राप्ति का बेजोड़ मंत्र

इस लेख को प्रारम्भ करते समय सर्वप्रथम मैं अपना परिचय देना आवश्यक समझता हूँ। मैं एक प्राध्यापक हूँ और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद अध्ययन को ही अपने जीवन-यापन का साधन बनाया था। अध्यापन मेरा व्यवसाय नहीं था और जीवन से उदात्त मूल्यों को ध्यान में रखते हुए एवं उनकी प्रकृति को समझते हुए ही इस क्षेत्र में प्रवेश किया था। मेरी इच्छा थी कि मैं जहां स्वयं को निरंतर ज्ञान से ओत-प्रोत रख सकूंगा वहीं आने वाली पीढ़ियों को कुछ प्रदान कर उस अनिवर्चनीय सुख का अनुभव कर सकूंगा जो किसी को कुछ प्रदान करने में होती है।

जीवन के प्रारम्भिक वर्ष तो सामान्यत: सुख-चैन से व्यतीत हुये क्योंकि मेरी जीवन शैली साधारण थी और पारिवारिक दायित्वों का बोझ नहीं के बराबर ही था। जब मैंने दाम्पत्य जीवन में प्रवेश किया तब भी आदर्शों की उच्च भावभूमि में रहने के कारण उन बातों की उपेक्षा ही करता रहा जो मेरी पत्नी नित्य प्रति के जीवन को लेकर करती थी। धीरे-धीरे परिवार का विस्तार हुआ और जीवन की समस्याएं कठिन होने लगी। इन्हें लेकर अब मैं उदासीन नहीं रह सकता था। मैंने समस्त प्रयास करके देखे किंतु आय का कोई स्त्रोत नहीं मिला। इन्हीं सब परिस्थितियों में मैं चाहते हुये भी अपने छात्रों पर ध्यान नहीं दे पा रहा था जब कि मैं जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में उन्हें रुटीन पाठ्यक्रम के अतिरिक्त भाँति-भाँति से ज्ञान देकर उनका जीवन परिपूर्ण बनाना ही अहोभाग्य मानता था। इसका कारण था वह आर्थिक कठिनाइयां जिनके कारण मेरा मन हर समय भटकता ही रहता था। पत्नी का उदास बुझा हुआ चेहरा, जो कि यद्यपि मुझसे कुछ नहीं कहती थी किन्तु उसकी व्यथा तो चेहरे से ही परिलक्षित होती थी। मेरे दो पुत्र एवं एक पुत्री जो कि इस घोर भौतिक युग में अपने सहपाठियों के साथ तालमेल न बैठा पाने के कारण एक प्रकार के दबे व्यक्तित्व को लेकर बड़े हो रहे थे, और अध्यापन का वर्षों का अनुभव मुझे उनकी मन:स्थिति के बारे में बिना उनके कुछ कहे सब कुछ स्पष्ट कर देता था। मैं अत्यन्त उदास हो जाता था, यदि ये इसी प्रकार जीवन जीते रहे तो यह कब उन संस्कारों को प्रस्फुटित कर सकेंगे जो मैंने उनके बचपन में उनमें रोपे थे। यूं कहा जाय कि मानो स्वस्थ जाति के पौधे बिना जल के जीवन की धूप में कुम्हला गये थे, और मेरी व्यथा उन सामान्य गृहस्थों से कहीं अधिक थी जो कि अपने पुत्रों को खाने-पीने व पहनने की वस्तुएं प्रदान करने के बाद अपने कर्तव्यों की इतिश्री सी मान लेता है।

मैं बिना कुछ सोचे सीधे जोधपुर पूज्य गुरुदेव के चरणों में जा पहुंचा और उनसे अपनी दरिद्रता के बारे में निवेदन किया। काफी दिनों के

आप में से कौन है ऐसा जो संपदा, सुख, समृद्धि, खुशहाली के अपने बंद दरवाजों के खुलने का इंतजार नहीं करता? रोज सुबह सूर्य उगने के साथ अपने भाग्य जगाना चाहते हैं, तो भुवनेश्वरी साधना का मार्ग हमारे लिए सर्वोत्तम होगा

इन्तजार और परीक्षा के बाद मुझे भुवनेश्वरी साधना करने की आज्ञा प्रदान की।

मैंने पूज्य गुरुदेव के बताए अनुसार भुवनेश्वरी साधना आरम्भ की जिसमें मुझे मूल मंत्र 'ह्रीं' के सवा लाख जप करने थे। और वे जप प्रतिदिन एक विशेष संख्या में करने थे, मैं सामान्य पूजा-पाठ तो प्रतिदिन करता था, किन्तु प्रतिदिन एक लम्बी अवधि तक बैठकर जप करना मुझे अटपटा लग रहा था। फिर मैंने एक दिन जो कि सोमवार था, प्रात: अपने पूजा कक्ष को साफ धोकर सफेद ऊनी आसन बिछा कर और सामने लकड़ी की छोटी सी चौकी पर भी सफेद ही वस्त्र बिछाकर उस भुवनेश्वरी देवी का यंत्र एवं चित्र स्थापित कर स्वयं भी सफेद धोती पहन कर आसन ग्रहण किया। घी की अखण्ड ज्योति भी स्थापित कर दी। मेरा लक्ष्य था कि प्रतिदिन सौ माला जप करके मैं दस दिनों में लक्ष्य पूर्ण कर लूंगा। मैंने यह जप पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त स्फटिक माला से करना प्रारम्भ किया। प्रथम तीन दिन तो जप करता रहा और कोई उल्लेखनीय बात नहीं रही सिवाय इसके कि मैं जब जप कर उठता था तो मेरा मन विशेष प्रफुल्लित रहता था। चौथे दिन कुछ दिव्यता सी अनुभव हुयी, जिसे मैं अपनी अज्ञानता वश पूर्णरूपेण समझ न सका। बस ऐसा लगा मानो कोई दिव्य प्रकाश यहां क्षण भर रहा हो और विलीन हो गया हो। पांचवे दिन इसी अनुभव को और अधिक देर तक अनुभव किया तथा छठे दिन तीव्र सुगन्ध स्पष्ट रूप से अनुभव की। मेरा अन्तर्मन अत्यधिक प्रफुल्लित था और लग रहा था मानो यह सब साधना में सफलता के आयाम हैं। इसके पश्चात् क्रमश: सातवें, आठवें, नवें व दसवें दिन भी एक श्रेष्ठ मन:स्थिति में ही व्यतीत हुए। यद्यपि तुरंत मुझे कोई आर्थिक समाधान नहीं मिला था किन्तु मानसिक स्थिति में जो सुधार हुआ था वह मेरे लिए उत्साहप्रद था। पूज्य गुरुदेव ने कहा था कि संभव है कि पूर्व जनम के किन्हीं दोषों के कारण पहली बार में सफलता न मिले तो हतोत्साहित न होना एवं इसी साधना को पुन: करना। मेरा मन इतना आह्लादित हो चुका था कि मैं पुन: साधना में बिना किसी संकोच या हील हवाले के बैठ गया। दूसरी बार साधना प्रारम्भ करते ही पहले दिन का मंत्र जप पूरा करके उठा ही था कि मेरे एक दूर के रिश्तेदार जो कि एक बीमा कंपनी में उच्च पदस्थ अधिकारी हैं, आये और सामान्य बातचीत के बाद कहने लगे कि उनकी इच्छा है कि वह मेरे सबसे बड़े पुत्र को अपने साथ रखकर काम सिखाएं। उन्होंने बात को स्पष्ट करते हुए

भगवती भुवनेश्वरी साधना तो जीवन की अद्वितीय साधना है,

जिसकी तुलना हो ही नहीं सकती। यह एक ऐसी साधना है जिसके कई गुप्त रहस्य हैं जो गुरुदेव के द्वारा ही ज्ञात हो सकते हैं ऐसा हो ही नहीं सकता, कि भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न की जाय, और दरिद्रता घर में रहे..... यह तो तीव्र, तुरन्त प्रभाव युक्त एवं अजस्र धनवर्षा से संबंधित साधना है।

बताया कि वास्तव में कार्य तो उन्हीं को करना है किन्तु वे उच्च पद पर होने के कारण ऐसा करने में असमर्थ हैं और किसी विश्वसनीय व्यक्ति को ही साथ रखना चाहते हैं। वे अपनी बात कह रहे थे और मैं मन ही मन मुस्करा रहा था। पूज्य गुरुदेव को कृतज्ञता ज्ञापित कर रहा था। मैंने सहर्ष अपनी स्वीकृति दे दी।

मैं इस सफलता से उत्साहित होकर और अधिक प्रसन्नता से साधना में संलग्न हो गया। मेरे सामने जो आर्थिक समस्या विकराल रूप धारण किए खड़ी थी, उसकी तीक्ष्णता में कुछ तो कमी आयी। मैं दूसरे दिन की साधना करने के पश्चात् उसका जप समर्पण पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में करने के पश्चात् आंखें बन्द करके स्वानन्द में चुपचाप लीन बैठा था तो ऐसा लगा मानो कोई कान में कह रहा हो "तू अपनी कोचिंग क्लास क्यों नहीं खोल लेता।" मैंने हड़बड़ाकर आँखें खोली किन्तु सामने कोई नहीं था। मैं इस अवस्था में भी नहीं था कि समझ सकूं कि यह स्वर स्त्री स्वर था कि पुरुष स्वर। किन्तु मेरे मन में एकविचार शृंखला सी चल पड़ी। सचमुच इस बात में महत्व था, क्योंकि मेरा छोटा पुत्र एम.ए.करने के बाद और वह भी अच्छे अंकों के साथ, एक साधारण से प्राईमरी स्कूल में अध्यापन का कार्य नहीं पा सका मैंने उसी क्षण साधना कक्ष से निकल कर उसे बुलाया एवं उससे यह बात कही। वह अत्यन्त प्रसन्नता से बोला कि विचार उसका भी यही था किन्तु वह मेरी अप्रसन्नता के भय से नहीं कह पा रहा था। मैंने अपनी पत्नी से विचार-विमर्श किया, उसकी भी सहमति था। प्रारम्भ में ऐसा करने में अर्थ की समस्या थी किन्तु यह समस्या भी तब सहज में हल हो उठी जब मैंने अपने बड़े पुत्र को अपना निर्णय बताया, उसने बताया बीमा व्यवसाय में जुड़े मेरे उन रिश्तेदार के परिचय अत्यन्त व्यापक हैं और नगर के श्रेष्ठ व्यवसायियों से है। क्या पता कहीं से बिना ब्याज के भी ऋण प्राप्त हो जाए, मेरा आश्चर्य से मुंह खुला रह गया कि क्या जीवन में इस सहजता से भी मार्ग मिल सकते हैं।

तीसरे दिन साधना करते समय मेरी आँखों के समक्ष क्षण भर के लिए कोई दिव्य नारी मूर्ति आयी जिसने विविध आभूषण धारण कर रखे थे, और जिसके शरीर से अलौकिक सुगन्ध भी आ रही थी। उसी प्रकार चौथे दिन भी वैसा ही हुआ मानो मुझे आश्वस्त कर रही हो कि मेरी साधना आराधना सही चल रही है। पांचवे दिन मेरे बड़े पुत्र ने यह सुखद समाचार दिया कि उसके प्रयत्न सफल रहे हैं और शहर के एक प्रतिष्ठित व्यवसायी सहयोग के लिए तैयार हैं। साथ ही उनके पूर्वजों का विशाल पैतृक भवन भी कॉलेज के रूप में निःशुल्क प्रयोग में लाया जा सकता है। मैंने उन व्यवसायी महोदय से उसी दिन जाकर बातचीत की। यह सुखद आश्चर्य ही था कि वे मेरी समस्त बातों से सहमत थे। उसके पश्चात् मैंने शेष दिनों की साधना भी अत्यंत श्रेष्ठ व आनन्ददायक स्थिति में सम्पन्न की और आज मेरा बड़ा पुत्र बीमा कम्पनी में एक उच्च पद पर है। मेरा छोटा पुत्र मेरे अवकाश ले चुकने के बाद विद्यालय का कार्यभार कुशल रूप से संभाल चुका है और पर्याप्त धन के साथ ही साथ उसकी शहर में एक प्रतिष्ठा है। मेरी पुत्री ने भी मुझसे प्रेरणा लेकर माँ भुवनेश्वरी की साधना की थी और उनके दिव्य अनुभूतियों के साथ उसे अपने अभीष्ट में सफलता मिली। वह भुवनेश्वरी साधना के माध्यम से चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में जाने की इच्छुक थी क्योंकि पूज्य गुरुदेव ने मुझसे बातचीत के मध्य स्पष्ट किया था कि भुवनेश्वरी साधना प्रकारान्तर से सरस्वती साधना ही है। मेरी पुत्री इसी बात को मुझ से सुनकर प्रेरणा पाकर एक कुशल चिकित्सक बनने में सफल हुयी है। वह इस बात का पूरा श्रेय भुवनेश्वरी साधना को ही देती है। मैं भी माँ भगवती के इस स्वरूप का नित्य प्रतिदिन चिन्तन मनन करने में अपनी

वृद्धावस्था का अधिकांश समय व्यतीत करता हूं। उनकी ही कृपा से मेरा भौतिक जीवन इतना परिपूर्ण हो सका है कि मैं स्वयं का कॉलेज खोलकर जहां अपने चिन्तनों के अनुसार श्रेष्ठ वातावरण बना कर एक तृप्ति का अनुभव कर सका हूँ। वहीं व्यक्तिगत जीवन में अनेकानेक आध्यात्मिक अनुभूतियों से तृप्त व दिव्य बन सका हूँ। मैं हृदय से पूज्य गुरुदेव का कृतज्ञ हूँ और चिरऋणि हूँ।

भुवनेश्वरी प्रयोग

सामग्री - मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त भुवनेश्वरी यन्त्र, भुवनेश्वरी चित्र, घृत का दीपक, अगरबत्ती, जलपात्र।

माला - स्फटिक माला।

आसन - सफेद रंग का सूती आसन

जप संख्या - सवा लाख

दिशा - पूर्व दिशा।

अवधि - 11 दिन

मंत्र ॥ ह्रीं ॥

प्रयोग

सर्वप्रथम सफेद वस्त्र पर भुवनेश्वरी यन्त्र व चित्र को स्थापित कर उसकी पूजा करनी चाहिए। सामने अगरबत्ती व दीपक लगा लेना चाहिए तथा दूध के बने प्रसाद का भोग लगाना चाहिए, इसके बाद स्फटिक माला से मन्त्र जप प्रारम्भ कर देना चाहिए।

सवा लाख मन्त्र जप समाप्त होते-होते भुवनेश्वरी के सूक्ष्म दर्शन संभव है और उसकी मन: इच्छा पूरी हो जाती है।

वस्तुत: यह प्रयोग आर्थिक उन्नति के लिए किया जाता है, दरिद्रता नाश के लिये इससे बड़ा प्रयोग और कोई नहीं है, यदि सात जन्मों की दरिद्रता भी हो तब भी इस प्रयोग से समाप्त हो जाती है और व्यक्ति धन-धान्य, समृद्धि आदि प्राप्त कर पूर्ण सुख प्राप्त करता है। प्रथम बार में सफलता न मिलने पर प्रयोग को फिर से करें। साधना से पूर्व गुरु मंत्र की 4 माला अवश्य करें।

साधना सामग्री-450/-

सर्व पितृ श्राद्ध प्रयोग

सर्व पितृ श्राद्ध अमावस्या 17.9.20

पितृ अर्थात् हमारे पूर्वज, जिनके हम वंशज हैं, पुत्र हैं, पौत्र हैं, उनका अलग लोक होता है और यदि वे किन्हीं कारणों से भटकते हैं तो यही उनकी संतानों का कर्तव्य हो जाता है कि वह उनके परलोक में सुधारें और उन्हें मुक्ति प्रदान करवायें।

आधुनिकता के रंग में रंगा समाज इस प्रभाव को स्वीकार नहीं कर पाता तथा इसके कारण घटने वाली घटनाओं को नहीं समझ पाता और दिन-प्रतिदिन तनाव, चिन्ता, व्याधि में उलझता चला जाता है।

पितृ दोष या प्रेतात्मा का प्रभाव होने के फलस्वरूप घर में ऐसी घटनाएं घटने लगती हैं जिसके कारण घर में निरंतर तनाव और लड़ाई होने लगती है और घर-परिवार के सदस्य इसके मूल को नहीं समझ पाते, वे यह नहीं सोच पाते, कि जो सदस्य आज तक उनके अनुकूल था, वह अचानक उनके विपरीत कैसे हो गया है ?

इतर योनियों के पूजन का विधान लगभग प्रत्येक स्थान पर देखने को मिलता है, इतर योनियां एक प्रकार से हमारे पूर्वज ही हैं, जिनका हमारे ऊपर किसी न किसी रूप में ऋण है। ये इतर योनियां उतनी ही पुष्ट और शक्ति समृद्ध होती हैं, जितनी कि देव योनि या अन्य योनियां

इनके कारणों को समाप्त करने के लिए व्यक्ति विविध उपाय करता है तथा बाह्य कारणों में ही उलझा रहता है। ये तनाव किसी विशेष घटना को लेकर नहीं वरन् छोटी-छोटी घटनाओं के कारण होते हैं। घर के सदस्य उन्हें सुलझाने में और अधिक उलझ जाते हैं।

इन परिस्थितियों में यदि व्यक्ति किसी प्रकार इन घटनाओं के मूल तक पहुंच जाता है, तो उसे ज्ञात होता है कि वह पितृ दोष या प्रेतात्मा का प्रभाव है। ज्यादातर यही देखने में आता है कि व्यक्ति इनके अस्तित्व को स्वीकार करता तो है परंतु इनके निराकरण के अनुकूल उपाय को नहीं ढूंढ पाता।

जब तक व्यक्ति पितृ ऋण से उऋण नहीं होता है, तब तक वह किसी कार्य में पूर्णता से उसका फल नहीं प्राप्त कर सकता। जब ऐसा सुअवसर उपस्थित हो रहा है, कि व्यक्ति अपने जीवन में उपस्थित होने वाली बाधाओं का निराकरण कर सके, तो फिर कोई भी ऐसा अवसर चूकना नहीं चाहेगा।

इतर योनियों के पूजन का विधान लगभग प्रत्येक स्थान पर देखने को मिलता है, इतर योनियां एक प्रकार से हमारे पूर्वज ही हैं, जिनका हमारे ऊपर किसी न किसी रूप में ऋण है। ये इतर योनियां इतनी ही पुष्ट और शक्ति समृद्ध होती हैं, जितनी कि देव योनि या अन्य योनियां।

यदि वे पूर्ण रूप से सन्तुष्ट न हों, तो वे अपने पुत्र-पौत्रों के जीवन में हस्तक्षेप करने लगती है और हस्तक्षेप के पीछे उनकी इच्छा इतनी ही होती है, कि उनके पुत्र तर्पण आदि कर उन्हें इस योनि से मुक्ति दिला दें। इस हस्तक्षेप से घर में बाधाएं, कष्ट, तकलीफ, बीमारी व राज्य भय के साथ-साथ लक्ष्मी का नाश होने लग जाता है। व्यक्ति समझ नहीं पाता कि

-ऐसा क्यों हो रहा है?

-उसके घर में सुख-शान्ति के स्थान पर निरंतर अशांति, कलह और दरिद्रता क्यों बनी रह रही है?

-क्यों नहीं आखिर वह मानसिक शांति का अनुभव कर पाता है, हर क्षण तनाव क्यों घेरे रहता है?

-क्यों नहीं सुख प्राप्त हो पाता है?

और इन प्रश्नों के उत्तर में वे विभिन्न प्रकार के कारण अनुभव करते हैं। ऐसा एक या दो के साथ नहीं वरन पूरे समाज के साथ ही हो रहा है।

इतर योनियों को उनका अंश नहीं देने के कारण जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। कई बार तो व्यक्ति उनका पूजन आदि कर्म भी सम्पन्न करता है, लेकिन न्यूनता रह जाने के कारण वे पूर्णरूप से सन्तुष्ट नहीं होते और अतृप्त बने रहते हैं, वे अतृप्ति के कारण किसी न किसी प्रकार से पुनः स्वयं के लिये अपने पुत्रों द्वारा मुक्ति की कामना करते लगते हैं।

जब पितृ पूर्ण रूप से सन्तुष्ट न हों, तो व्यक्ति को चाहिये, कि श्राद्ध दिवस के अंतिम दिवस सर्वपितृ अमावस्या के दिन उनका पूजन अवश्य करें। जिसमें उनका पूजन करने से उनको मुक्ति प्राप्त होगी ही और व्यक्ति अपने दुर्भाग्य को भी समाप्त कर सकने में सक्षम होगा। इस अवसर पर उनका पूजन करने पर वे अपना अंश ग्रहण कर अपने पुत्रों के जीवन की सभी बाधाओं का निराकरण करते हैं तथा उन्हें पूर्णता का आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

सर्वपितृ श्राद्ध दिवस पर पूजन सम्पन्न करने से साधक के पितृ प्रसन्न होकर उस पर आने वाली व्याधियों का समापन करते हैं। इस दिन जो साधक इस साधना को सम्पन्न करता है, तो निश्चय ही वह मनोकामना पूर्ण कर अपनी समस्त बाधाओं का निराकरण करने में सक्षम हो पाता है।

साधना विधान

- इस साधना में आवश्यक सामग्री 'सर्व पितृ मुक्ति यंत्र', 'सर्वबाधा निवारण गुटिका' तथा 'पीली हकीक माला' है।
- साधक इसे दिन में ही सम्पन्न करें, यह एक दिवसीय साधना है।
- साधक स्नान कर स्वच्छ पीली धोती धारण करें।
- साधक पीले रंग का कपड़ा बिछाकर उस पर काले तिल बिछाये, फिर उस पर सर्व पितृ मुक्ति यंत्र स्थापित करे तथा काले व सफेद तिल मिलाकर उस पर सर्व बाधा निवारण गुटिका स्थापित करे।
- फिर घी का दीपक तथा धूप जलावें।
- यंत्र के समक्ष माला रखकर यंत्र, माला व गुटिका का पूजन करें।
- फिर गुरु चित्र स्थापित करें और दैनिक साधना विधि पुस्तक के अनुसार गुरु पूजन करें।
- गुरु माला से एक माला गुरु मंत्र जप करें फिर पीली हकीक माला से निम्न मंत्र की 35 माला मंत्र जप करें-

॥ ॐ मम सर्व पितृ प्रसन्नो भव
मुक्ति भव ॐ ॥

- मंत्र समाप्त होने पर इतर योनियों को सम्पूर्ण थाली में लगा हुआ भोजन का भोग लगायें।
- अगले दिन यंत्र, गुटिका व माला जल में प्रवाहित कर दें या किसी पीपल के पेड़ के नीचे रख दें।

यह साधना साधक के दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलने की साधना है। साधक इसे सम्पन्न कर पितृ दोष को समाप्त कर सकता है।

न्यौछावर- 450/-

बल, बुद्धि, शौर्य प्राप्ति, भय व अनिष्ट निवारण हेतु धारण करें

हनुमान सिद्धि प्रयोग

हनुमान साधना के कई विधान है और जब साधक को किसी विजय, मुकदमा जैसा कार्य हो उसे हनुमान जी के उग्र रूप की साधना करनी चाहिए।

यह साधना सात दिन की है और किसी भी मंगलवार को प्रारंभ की जा सकती है। उस दिन साधक पूजा स्थान में सायंकाल को स्नान कर शुद्ध लाल वस्त्र धारण कर अपने सामने हनुमान चित्र या मूर्ति एक तांबे के पात्र में स्थापित करें। भक्तिपूर्वक पूजन कर एक दूसरे पात्र में **'हनुमान विजय यंत्र (तावीज)'** स्थापित करें तथा यंत्र तथा मूर्ति के सिन्दूर लगावें, और एक अलग पात्र में गुड़ का नैवेद्य अर्पण करें, अन्य कोई नैवेद्य वर्जित है। प्रतिदिन **मूंगा माला** से 11 माला मंत्र जप करें -

।। ॐ नमो हनुमन्ताय आवेशय आवेशय स्वाहा ।।

अपने पूजा स्थान में ही साधक को शयन करना है तथा हनुमान जी के आगे चढ़ाया हुआ प्रसाद आठों पहर अर्पित रहे, दूसरे दिन प्रसाद को एक डिब्बे में रख दें तथा नया गुड़ का प्रसाद अर्पित करें। इस प्रकार सात दिन तक पूजन तथा मंत्र जप से श्री हनुमान जी प्रसन्न होते हैं और अभय प्रदान करते हैं और जिस विशेष कार्य के लिए साधक अनुष्ठान करता है, उसमें सफलता मिलती है। इसमें आवश्यक है कि सात दिन की साधना के पश्चात् साधक गुड़ के प्रसाद को भूमि खोद कर डाल दें।

साधना सामग्री : 450/-

- दूसरों के साथ कम बोलिये, पर ज्यादा सुनिये।
- सुरुचि पूर्ण पहिनावा आपकी आधी सफलता है।
- झूठ मत बोलिये, क्योंकि झूठ ज्यादा समय तक नहीं चलता है।
- आपके चेहरे की मुस्कराहट ही आपके व्यवसाय की सफलता है।
- जिसने भी आपको सहयोग दिया है, उसको धन्यवाद पत्र अवश्य लिखें।
- कभी भी यह मत कहें, कि यह काम मेरा नहीं है या यह कार्य मैं नहीं कर सकता।
- बड़ों से मित्रता हो जाने पर भी छोटों को छोड़ मत दीजिये, या उन्हें तुच्छ मत समझिये।
- कुछ ऐसा कीजिये, जो अगले दस वर्षों बाद भी स्मरण रहे, और आप उस पर गर्व कर सकें।
- तनाव पूर्ण मत रहिये, हमेशा सहज, सरल बने रहिये, चाहे आपके मन में कितनी ही बड़ी उलझन क्यों न हो।
- घृणा, आतंक या क्रोध की अपेक्षा दूसरों के साथ प्यार भरे वातावरण से ही आप सफलता पा सकते हैं, चाहे वह आपका नौकर हो या चौकीदार।

धैर्य, तप एवं पवित्रता

एक बार एक राजा ने हठ कर ली कि उसे ईश्वर के दर्शन करने हैं और अपने दरबारियों को आदेश दिया कि कोई उपाय करें। दरबारियों ने कहा कि महाराज यह कार्य तो मंत्री जी ही कर सकते हैं। राजा ने यह कार्य मंत्री को सौंप दिया कि मुझे ईश्वर की प्राप्ति/दर्शन कराये नहीं तो उसे कड़ी सजा दी जायेगी। मंत्री घबरा गया, उसने 1 माह की मोहलत मांगी।

दिन पर दिन बीतते गये परन्तु उसे कोई उपाय नहीं सूझा और वह चिंता में दुर्बल हो गया, तब उसकी पत्नी ने सलाह दी कि आप किसी संत से मिलकर अपनी समस्या उन्हें बतायें, कोई संत ही हमारी रक्षा कर सकते हैं और मंत्री किसी अच्छे संत की खोज में निकल पड़ा। खोजते-खोजते कई दिन बीत गये उसे उसकी समस्या का समाधान देने वाला कोई नहीं मिला। एक बार जब वह जंगल से गुजर रहा था। दोपहर का समय था वह उदास और चिंतित होकर एक पेड़ के नीचे बैठा कि उसकी आँख लग गई। इतने में किसी ने उसे जगाया। उसने देखा कि एक संन्यासी सामने खड़ा है, उसने पानी मांगा तो मंत्री ने उसे पानी पिलाया तब उन महात्मा ने उसके उदास चेहरे को देखकर पूछा कि, क्या बात है आप बहुत चिंतित दिखाई दे रहे हैं? इस पर मंत्री महोदय ने उन्हें सारी बातें बता दी। उसकी बात सुनकर उस संत ने कहा कि आप चिंता न करें, मुझे आप अपने साथ ले चलें, मैं आपके राजा को ईश्वर प्राप्ति करा दूँगा। यह सुनकर मंत्री को ऐसा लगा कि जैसे वह बहुत बड़ी चिंता से मुक्त हो गया। उसने उनसे पूछना चाहा कि आप राजा को कैसे ईश्वर प्राप्ति करायेंगे तो उन्होंने कहा कि, वह स्वयं दरबार में जाकर राजा को उत्तर देंगे।

मंत्री उन महात्मा को साथ लेकर दूसरे दिन दरबार में पहुँचा और राजा को निवेदन किया कि महाराज यह महात्मा जी आपको ईश्वर के दर्शन करा देंगे। राजा ने प्रसन्नता से उनका स्वागत किया।

तब उन संत के कहने से राजा ने एक बड़ा पात्र कच्चा दूध भरकर के मंगाया तब उन संत ने कहा कि मैं अभी आपको ईश्वर दर्शन कराता हूँ और यह कहकर उस दूध को एक बड़े चम्मच से हिलाने लगा। हिलाते-हिलाते पन्द्रह मिनट हो गये। राजा को ईश्वर दर्शन नहीं हुये, तो उन्होंने उन महात्मा से पूछा कि वह क्या कर रहे हैं? तो उन्होंने कहा कि मैं दूध में से मक्खन निकालने की कोशिश कर रहा हूँ।

यह सुनकर राजा ने अचरज से कहा कि महाराज दूध से मक्खन ऐसे थोड़े ही निकलेगा। पहले इसे गर्म करना पड़ेगा, फिर दही जमानी पड़ेगी और उसे बिलोकर उसमें से मक्खन निकालना पड़ेगा। यह सुनकर उन महात्मा ने कहा कि राजन जैसे दूध में से मक्खन सीधे नहीं निकलता, उसी प्रकार ईश्वर के दर्शन सीधे नहीं होते। इसके लिए योग, प्राणायाम से इस शरीर को शुद्ध करना पड़ता है। फिर इसे जप-तप-साधना से तपाना पड़ेगा फिर प्रेम का जामन लगाना पड़ेगा फिर गुरु अपनी कृपा की मथानी जब चलायेंगे तो ईश्वर की प्राप्ति होती है, उनके दर्शन होते हैं।

सद्गुरुदेव ने अपने प्रवचन में धैर्य, शरीर एवं आत्मा की पवित्रता एवं मंत्र साधना पर हमेशा जोर दिया है अतः साधकों को इस दृष्टांत से सीख लेकर धैर्य के साथ चिन्तन करना चाहिए एवं यथाशक्ति योग, प्राणायाम, भस्त्रिका से अपने शरीर को शुद्ध एवं पवित्र करते हुए एवं जप-तप-साधना से अपने आप को तपाते हुए सद्गुरुदेव की कृपा प्राप्त करनी चाहिए, जिससे उन्हें साधना में शीघ्र ही पूर्ण सफलता मिले एवं सम्बन्धित देवी-देवताओं के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हो सके।

▪ राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष-माह का प्रथम सप्ताह सफलतादायक है, प्रयास करते रहें। शत्रु पक्ष शांत रहेगा जमीन के काम में लाभ मिलेगा। पारिवारिक सदस्य प्लानिंग में सहयोग करेंगे। किसी राह चलते से खटपट प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचा सकती है। किसी और के कार्य आपकी छवि धुमिल कर सकते हैं। शत्रुओं से सावधान रहें। किसी के बहकावे में न आयें। संतान आपके कहने में रहेगी, विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में मन लगायेंगे। कोई महत्वपूर्ण समाचार मिल सकता है। तीसरे सप्ताह में शत्रु वर्ग से सावधान रहें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। जीवनसाथी के साथ मधुर सम्बन्ध रहेंगे। अंत में परिवार के किसी सदस्य की गलत सोहबत से प्रतिष्ठा खराब हो सकती है। फिजूलखर्ची न करें। आप नवग्रह मुद्रिका धारण करें।

शुभ तिथियाँ-2, 3, 4, 12, 13, 14, 21, 22, 30

वृष-प्रथम सप्ताह कष्टदायक है। सोच-समझकर कार्य करें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, कोई पुरानी बीमारी परेशान कर सकती है। शत्रु वर्ग को जवाब देने में सक्षम रहेंगे। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। विद्यार्थियों के लिए अच्छा समय है। किसी और के कारनामे आप पर थोपे जा सकते हैं। माह के मध्य से स्थिति बदलेगी, पुत्र से सुख और सहयोग मिलेगा। अच्छी नौकरी भी मिलने के अवसर हैं। आय की आवक प्रारम्भ होगी, शत्रुओं से सावधान रहें, परिवार में सभी का सहयोग मिलेगा। किसानों की उपज अच्छी होगी। शत्रु परास्त होंगे। कोई खुशखबरी मिल सकती है। संतान के क्रियाकलापों पर नजर रखें। इस समय यात्रा से लाभ होगा। आप गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-5, 6, 14, 15, 16, 23, 24, 25

मिथुन-सप्ताह का प्रारम्भ उन्नतिदायक है, परिवार में सभी का सहयोग प्राप्त होगा फिर भी किसी भी कार्य को सोच-समझ कर करें। आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। दूसरा सप्ताह अनुकूल है। कोर्ट केस में कामयाबी मिलेगी। नौकरीपेशा की पदोन्नति के अवसर हैं। माह के मध्य में कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। अपने ही हानि पहुंचा सकते हैं। फालतू खर्च पर नियंत्रण रखें। आकस्मिक धन लाभ होगा। विवादों से दूर हरें। घर पर कोई खुशी का कार्यक्रम सम्भव है। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। किसी व्यक्ति से मुलाकात जीवन में बदलाव लायेगी। वाहन चालन में सावधानी रखें। व्यापार में कोई अकस्मात् घटना नुकसान पहुंचा सकती है। दूसरों पर अधिक विश्वास न करें। आप भैरव दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-7, 8, 9, 17, 18, 25, 26, 27

कर्क-सप्ताह का प्रारम्भ अच्छा है। अपनी योग्यता से किसी भी परेशानी का हल करने की क्षमता है। सरकारी कर्मचारी वर्ग को लाभ होगा। अधिकारियों का सानिध्य मिलेगा। विपक्षी वर्ग से सावधान रहें। कारोबार में ध्यान देने की जरुरत है। पति-पत्नी में मतभेद दूर होकर सहयोग का वातावरण बनेगा। माह का मध्य विद्यार्थियों के लिए उत्तम है। व्यापार की बढ़ोतरी में किसी व्यक्ति का सहयोग मिलेगा। माह के मध्य की तारीख में सोच-समझकर कार्य करें। किसी के दबाव में हस्ताक्षर न करें। स्वास्थ्य की दृष्टि से समय अच्छा है। अपनी जरूरतों पर नियंत्रण रखें। गलत सोहबत के लोगों से बचें। संतान पक्ष का सहयोग नहीं मिलेगा। आप गृहस्थ सुख दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-1, 2, 10, 11, 19, 20, 27, 28, 29

सिंह-माह का प्रारम्भ श्रेष्ठ है। जमीन के कार्यों में लाभ होगा। रुके रुपये प्राप्त होंगे, आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। भाग्योदय होगा। आप गलत आदतों से दूर रहें। आपकी कोई महत्वपूर्ण वस्तु खोने से आप परेशान रहेंगे। कोई झूठा आरोप लग सकता है। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर मिलेंगे। माह के मध्य में कार्य के विपरीत रिजल्ट मिलेंगे। किसी और की लड़ाई-झगड़े में हस्तक्षेप से बचें वरना बेवजह परेशान हो सकते हैं। तीसरे सप्ताह में लाभ के अवसर आयेगा। पारिवारिक जीवन तनावपूर्ण रहेगा। यह समय ठीक नहीं है। माह के अंत में आप शत्रुओं को जवाब देने में सक्षम होंगे, डटकर मुकाबला करेंगे। हर क्षेत्र में जीत मिलेगी। आप बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ- 2, 3, 4, 12, 13, 21, 22, 30

कन्या-माह के प्रारम्भ के 3-4 दिन शुभ नहीं हैं। चिंताएं घेरे रहेंगी, बिना समझे कहीं हस्ताक्षर न करें। दूसरों के कार्यों में टांग न लगायें। जीवनसाथी से अच्छे सम्बन्ध रहेंगे। नये कार्य प्रारम्भ करने में सफलता मिलेगी। आकस्मिक धन प्राप्ति भी सम्भव है। मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। जमीन-जायदाद का बंटवारा खुशी के साथ हो जायेगा। कानूनी केसों में भी अनुकूलता रहेगी। भाइयों से मतभेद दूर होंगे।

तीसरे सप्ताह में कोई अप्रिय समाचार मिल सकता है। मानसिक तनाव रहेगा। जल्दबाजी में निर्णय न लें। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में रुचि से लगा रहेगा, स्वास्थ्य ठीक रहेगा। कुछ नुकसान होने की सम्भावना है। आप विघ्नहर्ता गणपति दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-5, 6, 14, 15, 23, 24, 25।

तुला-माह का पहला सप्ताह शुभ फल देगा लेकिन मेहनत अधिक करनी पड़ेगी। काम का बोझ रहेगा। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। छोटी-छोटी बातों को लेकर विवाद में न पड़ें। आप संघर्षशील व्यक्ति हैं, डटकर मुकाबला करेंगे, व्यापारिक क्षेत्रों में प्रगति होगी। माह के मध्य में सावधान रहें। निर्णय सोच-समझ कर लें। जल्दी रुपया कमाने के चक्कर में न पड़ें। पारिवारिक जीवन तनावग्रस्त रहेगा। तीसरे सप्ताह में आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में किसी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। झूठी आशाओं पर निर्भर न रहें। अन्यथा बाद में परेशानी हो सकती है। पारिवारिक माहौल अच्छा रहेगा। नौकरी पेशा लोग थोड़ा परेशानी में रहेंगे। छोटे-छोटे वाद-विवादों में न पड़ें। आप कायाकल्प दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-7, 8, 9, 17, 18, 25, 26, 27

वृश्चिक-माह का प्रारम्भ उत्साह भरा रहेगा। कोर्ट केस का निर्णय आप के पक्ष में जाने का समय है। अविवाहितों के विवाह का योग है। व्यर्थ में रुपये खर्च न करें। किसी के बहकावे में आकर निर्णय न लें। टेंशनमुक्त रहेंगे। संतान आपके कार्यों में हाथ बटायेगी। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर हैं। आत्मविश्वास से सराबोर रहेंगे। माह के मध्य का समय प्रतिकूल है। गृहस्थ में अनबन रहेगी, वाणी पर संयम रखें। जमीन का सौदा हो सकता है। शत्रु वर्ग परेशान करेंगे लेकिन आप परास्त करने में समर्थ रहेंगे। स्वास्थ्य का ख्याल रखें। माह के अंत में कोई मुसीबत घेर लेगी। कुछ निर्णय गलत हो जायेंगे। भाइयों से मतभेद दूर होंगे। अच्छी तरह सोच-समझ कर कोई कार्य करें। आप बगलामुखी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-2, 10, 11, 12, 19, 20, 21, 27, 28

धनु-माह का प्रारम्भ किसी शुभ घटना से होगा। भौतिक सुविधाएं बढ़ेगी। मित्रों का साथ मिलेगा। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में मन लगायेगा, प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी। नये वाहन खरीदने से बचें। जल्दी पैसे कमाने के चक्कर में न पड़ें, किसी साजिश के शिकार हो सकते हैं। स्वस्थ्य अच्छा रहेगा। अचानक किसी मुसीबत में फंस सकते हैं। माह के मध्य में अनुकूलता प्राप्त होगी, कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। जिस कार्य को प्रारम्भ करेंगे उसे पूरा अवश्य करेंगे। कोई मानसिक टेंशन परेशान करेगी। दाम्पत्य जीवन में मधुरता रहेगी। कोई भी निर्णय लेते हुए सतर्क रहें। माह के अंत में खुशी का समय है, मनोकामना पूर्ण होगी, सम्मान मिलेगा। पुराने मामले निपटेंगे। आप मनोकामना पूर्ति दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-2, 3, 4, 12, 13, 14, 21, 22, 30, 31

मकर-माह के प्रारम्भ के 2-3 दिन चित्त अशांत रहेगा। कोई परेशानियां भी आ सकती हैं। वांछित सफलता नहीं मिल पायेगी। रुपयों की तंगी रहेगी, स्वास्थ्य पर ध्यान दें। दूसरे सप्ताह में मेहनत रंग लायेगी। मनोकामना पूर्ण होगी। दूसरों का सहयोग करेंगे। जमीन के मामलें में टेंशन हो सकती है। व्यापारी वर्ग को किसी वजह से

सर्वार्थ सिद्धि योग	- अगस्त - 2, 3, 7, 12, 13, 18, 19, 30, 31
रवि योग	- अगस्त- 1, 10, 22, 24, 27, 28
अमृत सिद्धि योग	- अगस्त -26

आर्थिक नुकसान हो सकता है। नौकरीपेशा की उन्नति के अवसर हैं। जीवन में शांति और समृद्धि बनी रहेगी। पुराना रोग उभरने का डर रहेगा। परिवार से सहयोग नहीं मिलेगा। कोर्ट कचहरी के कार्यों से छुटकारा मिलेगा। परिश्रम का पूरा फल मिलेगा। प्रेम में गलतफहमियां बढ़ेंगी। सरकारी कर्मचारियों को नई जिम्मेदारियां प्राप्त होगी। विद्यार्थी वर्ग प्रसन्न रहेगा। आप भाग्यबाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-5, 6, 14, 15, 16, 23, 24, 25

कुम्भ-माह प्रारम्भ के 2-3 दिन सावधानी रखें। रोजगार न मिलने से परेशान रहेंगे। कोई अनहोनी घटना घट सकती है। जमीन-जायदाद के मामले में आ रही दिक्कते दूर होंगी। भाईयों के मध्य प्रेम बना रहेगा। मन प्रसन्न रहेगा। इस समय जमीन का सौदा लाभ देगा। परिवार में किसी की तबियत खराब होने से उदास होंगे। शत्रुओं से सावधान रहें। प्रेमी-प्रेमिका के सम्बन्धों में दरार आ सकती है। इस समय लिया गया निर्णय गलत साबित होगा। लोग पीठ पीछे निन्दा करेंगे। ज्ञान की वृद्धि होगी। आय के साधन बढ़ेंगे। धार्मिक मामलों में रुचि रहेगी। ऑफिस में कर्मचारी से छोटी सी बात को लेकर वाद-विवाद की स्थिति बनेगी। वाहन चालन में सावधानी रखें। नवग्रह मुद्रिका धारण करें या दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-7, 8, 9, 17, 18, 25, 26, 27

मीन-माह का प्रारम्भ सफलतादायक रहेगा, नये लोगों से मित्रता होगी। उलझनें दूर होकर सफलता के आसार हैं। कोई नया मिलने वाला हानि पहुंचा सकता है। आत्मबल कमजोर महसूस करेंगे। नशीले पदार्थों से दूर रहें। कृषक वर्ग आय होने से खुश रहेगा। पति-पत्नी में प्यार बढ़ेगा। माह के मध्य में कार्यों को सोच-समझ कर करें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। संतान को उच्च शिक्षा का अवसर मिलेगा। किसी से मुलाकात प्रेरणादायक होगी। तीसरे सप्ताह में कार्यों के विपरीत परिणाम हो सकते हैं। अचानक कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। आर्थिक दृष्टि से कमजोर होंगे, आलस्य को त्यागें। माह के आखिर में अचानक धन आवक होगी। तारा दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-1, 2, 10, 11, 12, 19, 20, 27, 28

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

03.08.20	सोमवार	रक्षा बंधन/गायत्री जयंती
06.08.20	गुरुवार	कज्जली तीज
10.08.20	सोमवार	शीतला सप्तमी
11.08.20	मंगलवार	काली जयंती
12.08.20	बुधवार	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
21.08.20	शुक्रवार	हरितालिका तीज
23.08.20	रविवार	ऋषि पंचमी
24.08.20	सोमवार	सूर्य षष्ठी
25.08.20	मंगलवार	राधा अष्टमी/अष्ट लक्ष्मी जयंती
29.08.20	शनिवार	पदमा एकादशी
30.08.20	रविवार	भुवनेश्वरी जयंती

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक	श्रेष्ठ सङ्क्ष
रविवार (अगस्त 2,9,16,23,30)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोङ्कवार (अगस्त 3,10,17,24,31)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
ङ्कंगलवार (अगस्त 4,11,18,25) (सितम्बर 1)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (अगस्त 5,12,19,26) (सितम्बर 2)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरुवार (अगस्त 6,13,20,27)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (अगस्त 7,14,21,28)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (अगस्त 1,8,15,22,29)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

अगस्त 2020

11. आज प्रात: 'क्रीं' बीज मंत्र का पांच मिनट जप करके जायें।
12. आज 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' का 11 बार उच्चारण करके जायें।
13. सोऽहं मंत्र का जप दस मिनट करके कार्य पर जायें।
14. राई तथा नमक को घर से निकलते समय घर के बाहर रखें, शत्रु निस्तेज होंगे।
15. आज एकादशी को सम्भव हो तो व्रत रखें और किसी असहाय को दान करें।
16. आज गौ माता को रोटी खिलायें।
17. प्रात: गुरु मंत्र जप के बाद एक माला 'ॐ नम: शिवाय' का जप करें।
18. आज हनुमान चालीसा का एक पाठ करके जाएं।
19. आज खीर का भोग किसी देवी मन्दिर में लगाएं।
20. हाथों में पुष्प लेकर गुरु चरणों में चढाते हुये निम्न श्लोक का पाठ करें-
    अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
    भक्त्या समर्पये तुभ्यं सर्वाभरण भूषिते।।
21. निखिल स्तवन के प्रथम दस श्लोक का पाठ हिन्दी सहित करें।
22. एक सुपारी स्थापित करके 'ॐ गं गणपतये नम:' बोलते हुये पूजन करें एवं तिलक लगाकर कार्य पर जाएं।
23. गायत्री मंत्र की एक माला मंत्र जप करके जाएं।
24. 'ॐ घृणिं सूर्य आदित्याय नम:' मंत्र का 21 बार जप करके जाएं।
25. 'ॐ ह्रीं ॐ' का 11 बार उच्चारणा करके जाएं।
26. आज गुरु पूजन के बाद निम्न मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करके जाएं-'ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै नम:।'
27. ॐ वासुदेवाय नम: का 11 बार उच्चारण करके जाएं।
28. मां दुर्गा का पूजन करके जाएं।
29. आज सरसों के तेल का दान दक्षिणा के साथ करें।
30. 'प्रात:कालीन उच्चरित वेद ध्वनि' सी.डी. का श्रवण करें।
31. गोमती चक्र (न्यौ. 41 रुपये) को अपने सिर पर पांच बार घुमा कर उत्तर दिशा की ओर फेंक दें, भाग्योदय की बाधाएं समाप्त होंगी।

सितम्बर 2020

1. आज अनंत चतुर्दशी को 'ॐ अनन्ताय नम:' का इक्कीस बार जप करके जाएं।
2. किसी गरीब को भोजन करायें।
3. भगवान श्री नारायण का पूजन करके जाएं।
4. एक सिद्धि फल (न्यौ. 31 रुपये) का पूजन कर उसे मन्दिर में चढ़ा देने से सफलता मिलेगी।
5. प्रात: 'ॐ गं गणपतये नम:' का इक्कीस बार जप करके जाएं विघ्न समाप्त होंगे।
6. कुंकुम, अक्षत तथा पुष्प से भगवान सूर्य का पूजन करें, सफलता मिलेगी।
7. 'ॐ ह्रौं जूं स:' मंत्र का उच्चारण करते हुए शिवलिंग पर जल चढ़ायें।
8. हनुमानष्टक का एक पाठ करके जाएं।
9. चावल एवं कुंकुम मिलाकर चारों दिशाओं में फेंकते हुए निम्न मंत्र का जप करें- 'ॐ ऐं ह्रीं नम:।'
10. पूजा स्थल में घी का दीपक लगाकर निम्न मंत्र का 21 बार जप करके जाएं-'ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै फट्।'

अपराजिता का तात्पर्य है कि बुरी शक्तियों से पराजय न होना और विपरीत स्थितियों का मुकाबला कर उन्हें अनुकूल बना लेना। कहावत है कि समय बड़ा बलवान होता है और उसके हाथों सबको हार माननी पड़ती है, लेकिन जो समय पर हावी हो जाता है, वही तो जीवन में सफल रहता है, परिस्थितियों के आगे धक्के खाता व्यक्ति अपने जीवन में इधर से उधर होता रहता है और उसे अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं हो पाता। अपराजित रहने का तात्पर्य है अपने आपको उस स्थिति तक बलवान बना देना कि शक्ति शुद्ध रूप में मूलाधार में आसीन हो जाय।

शक्ति समन्वित होना और शक्तिशाली होना कोई खराब बात नहीं है, इसमें कोई दोष भी नहीं है, उल्टे शक्तिहीन होना जीवन का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है। दीन-हीन होकर तो लाखों करोड़ों रहते हैं और उनको भिखारी ही कहा जाता है, और जो शक्ति सम्पन्न होते हुए भी नम्र हैं, वे सही अर्थों में पुरुष हैं और दाता कहलाते हैं और यदि शक्ति शुद्ध रूप में आती है, साधना के बल से आती है तो उसका उपयोग श्रेष्ठ कार्यों के लिए ही होता है। उस शक्ति का दुरुपयोग नहीं हो सकता, ऐसा साधक स्वयं अपने साथ-साथ दूसरों का भी कल्याण करने में समर्थ रहता है।

शक्ति सम्पन्न श्रीविष्णु

विष्णु की शक्ति मूल रूप से शिव की ही शक्ति है, क्योंकि शिव जगत् के कर्ता और हर्ता दोनों ही हैं। 'फलश्रुति' नामक ग्रन्थ में लिखा है कि जब देवता और असुरों का संग्राम हुआ तो देवताओं द्वारा अनुनय विनय करने पर विष्णु ने कहा कि यदि मुझे भगवान शिव द्वारा अपराजय का वरदान मिल जाय और अपराजय अस्त्र-शस्त्र प्राप्त हो जाय तो मैं संग्राम के लिए तत्पर हूँ, तब भगवान सदाशिव ने श्रीहरि विष्णु के कान में एक साधनात्मक उपदेश दिया और यह विशेष साधनात्मक ज्ञान विष्णु अपराजिता साधना के नाम से विख्यात हुआ। श्रीविष्णु द्वारा इस साधना को सम्पन्न करने से वे जगत् में वन्दनीय हुए और देवताओं के देव के रूप में पूजनीय हुए।

इस साधना में विशेष नियम है, उनका पालन करना अत्यन्त आवश्यक है। सर्वप्रथम तो जिस कार्य के लिए साधना की जानी है वह कार्य निश्चित कर लें और एक साथ सभी कार्यों के लिए साधना नहीं करें, इस साधना में साधक किस दिशा की ओर मुंह कर बैठे, यह महत्वपूर्ण है।

साधना नियम

1. यह साधना रात्रि में सम्पन्न की जाती है तो विशेष फलदायी रहती है।
2. साधक द्वारा पीला आसन और पीले ही वस्त्र धारण करने चाहिए।
3. पीले रंग के पुष्प तथा पीले रंग की गन्ध अर्थात् अबीर का ही पूजन में प्रयोग करें।
4. पूरे साधना काल के दौरान नित्य शिव मन्दिर में जाकर गुग्गल का धूप अवश्य जलाना चाहिए।
5. साधना काल के दौरान घी का दीपक जलते रहना चाहिए।
6. सबसे महत्वपूर्ण यह है कि वशीकरण सिद्धि हेतु पूर्व दिशा की ओर, मारण कार्य हेतु दक्षिण दिशा की ओर, लक्ष्मी प्राप्ति हेतु उत्तर दिशा की ओर और रोग नाश हेतु पश्चिम दिशा की ओर, और आकर्षण साधन कार्य हेतु वायव्य कोण दिशा की ओर, स्तम्भन साधना हेतु ईशान कोण की ओर, भूत-प्रेत नाश हेतु नैऋत्य कोण की ओर तथा सर्वकामना पूर्ति हेतु आग्नेय कोण की ओर मुंह करना चाहिए।

साधना सामग्री

इस साधना में सबसे विशेष बात यह है कि केवल दो सामग्री का विशेष महत्व है, प्रथम विष्णु अपराजिता महायन्त्र तथा दूसरा विष्णु महाविद्या माला, इसके अलावा अन्य सामान्य पूजन सामग्री अर्थात् गुलाल कुंकुम, धूप, दीप, प्रसाद, फल, पुष्प इत्यादि का भी प्रयोग होता है।

विष्णु अपराजिता महायन्त्र जिस पर आप साधना करें वह किसी को भी दान में अथवा उपहार में न दें, चाहे वह व्यक्ति कितना ही निकटस्थ क्यों न हो। इस महायन्त्र को सदैव अपने पूजा स्थान में स्थपित रखना चाहिए।

जहां तक साधना प्रारम्भ करने का प्रश्न है, यह साधना 19.09.20 से 01.10.20 के मध्य किसी भी दिन सम्पन्न की जा सकती है। शुक्ल पक्ष इसके लिए विशेष श्रेष्ठ रहता है।

साधना विधान

अपने सामने एक चौकी पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर एक थाली में यन्त्र को स्थापित कर उसका पूजन करें, सर्वप्रथम गुरु पूजन सम्पन्न कर मानसिक आज्ञा प्राप्त करें, तत्पश्चात् पूजन सामग्री से इस यन्त्र का पूजन करें, इस पूजन में सर्वप्रथम विनियोग फिर न्यास तत्पश्चात् दिग्बन्ध और ध्यान कर साधना प्रारम्भ करना है

विनियोग

ॐ अस्य श्रीविष्णु अपराजिता महाविद्या माला मन्त्रस्य ईश्वर ऋषि: पंक्तिश्छन्द:। श्रीविष्णु अपराजिता महाविद्या देवता। ॐ ह्रां ब्रां बीजं। ॐ ह्रीं ब्रीं शक्ति:। ॐ ह्रूं ब्रूं कीलकं। मम सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थं श्रीविष्णु अपराजिता महाविद्या माला मन्त्र जपे विनियोग:।।

न्यास

ॐ ह्रां ब्रां महाविद्यायै नम: अंगुष्ठाभ्यां।
ॐ ह्रीं ब्रीं महामायायै नम: तर्जनीभ्यां नम:।
ॐ ह्रूं ब्रूं महामेधायै नम: मध्यमाभ्यां।
ॐ ह्रैं ब्रैं महामन्त्रायै नम: अनामिकाभ्यां।
ॐ ह्रौं ब्रौं महासिद्धायै नम: कनिष्ठिकाभ्यां।
ॐ ह्र: ब्र: महापराजितायै नम: करतल करपृष्ठाभ्यां।

दिग्बन्ध

ॐ ह्रीं सर्व भूत निवारणाय सांगाय सशरायास्त्र राजाय सुदर्शनाय हुं फट् ह्रीं ॐ स्वाहा।।

अपने हाथ में जल लेकर दिग्बन्ध का जप तीन बार करना है, और तीनों बार जल सामने पीढ़े पर स्थापित यन्त्र के चारों ओर तथा अपने स्वयं के चारों ओर गोल घेरे के रूप में डालना है, इससे साधना काल के दौरान किसी प्रकार का विघ्न उत्पन्न नहीं होता तथा दुष्टात्माएं, भूत-प्रेत-पिशाच साधना को खण्डित नहीं कर सकते।

ध्यान

चतुर्भुजां पीतवस्त्रां शंख-चक्र गदा धराम्।
मुक्ताभरण भूषणां पद्म नेत्रां द्विलोचनाम्।।
पीत गन्ध विलेपांगीं पीताभरण भूषिताम्।
पद्म हस्तां सुपद्मांगीं गरूडासन संस्थितान्।।
दैत्य दानव संहारीं महाविष्णु वर प्रदाम्।
ध्यायै महाविद्यामहं विष्णु साम्राज्य दायिनीम्।।

इस प्रकार दोनों हाथ जोड़ कर भगवान श्रीविष्णु का ध्यान करना है और उनसे वर प्राप्ति की प्रार्थना करनी है।

अब मुख्य रूप से **श्रीविष्णु महाविद्या माला** का पूजन एक दूसरी थाली में सम्पन्न करना है तथा गले में **माला धारण**

इस विस्मयकारी साधना को सम्पन्न करते समय

- वशीकरण सिद्धि हेतु पूर्व दिशा की ओर,
- मारण कार्य हेतु दक्षिण दिशा की ओर,
- लक्ष्मी प्राप्ति हेतु उत्तर दिशा की ओर और
- रोग नाश हेतु पश्चिम दिशा की ओर,
- और आकर्षण साधन कार्य हेतु वायव्य कोण दिशा की ओर,
- स्तम्भन साधना हेतु ईशान कोण की ओर,
- भूत-प्रेत नाश हेतु नैर्ऋत्य कोण की ओर तथा
- सर्वकामना पूर्ति हेतु आग्नेय कोण की ओर मुंह करना चाहिए।

कर निम्न अपराजिता मन्त्र का जप प्रारम्भ कर दें

अपराजिता मंत्र

ॐ नमो भगवती ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं श्री भगवती वज्र प्रस्तारिणी प्रत्यंगिरे बगले तारे वज्र वैरोचनीये धूमावती छिन्नमस्तके भग मालिनी मां रक्ष रक्ष पालय पालय स्व-सुतानिव महदानन्दं कुरु कुरु सर्व मंगलाभीष्टं देहि देहि एहि एहि मम हृदयं निवासय निवासय सर्व दुःख दारिद्र्यं निर्मूलय निर्मूलय सर्व शत्रून निवृत्तय निवृत्तय सर्व विघ्न त्रिताप सन्ताप महा पापादि सर्व दुष्टोपद्रव भंजय भंजय हन हन कालेश्वरी गौरी धर्मिणी विद्ये आले ताले माले गन्धे बन्धे पच पच विघ्नान्नाशय विघ्नान्नाशय संहारय संहारय दुःस्वप्नान् विनाशय विनाशय रजनी संध्ये साधक संजीवनी कालमृत्यु महामृत्यु अपमृत्यु विनाशिनी विश्वेश्वरी द्रविडी द्राविडी केशव दनिते पशुपति सहिते विरचि वनिते दुन्दुभि शमने शबरी किराती मातंगी ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ज्रां ज्रां ज्रां क्रां क्रां क्रां तुरु तुरु मुरु मुरु तुट् तुट् ये मां द्विषन्ति निन्दन्ति प्रत्यक्षं परोक्षं वा सर्वान् तान् दम् दम् मर्द मर्द तापय तापय शोषय शोषय उत्सादय उत्सादय कालरात्रि महारात्रि मोहरात्रि महामाये रेणुके दक्षिण काली षोडशी श्रीचक्र कृति धारिणी श्री विद्या परमेश्वरी जय जय जगदीश्वरी सर्व काम वरप्रद सर्व भूतेषु मां प्रियं कुरु कुरु धन धान्यादि महदैश्वर्य मम प्रद प्रद भग भाग्यादि सर्व मंगलं देहि देहि पुत्र पौत्रादि सुफलं फलय फलय गजाश्व शिविकादि सकल राज चिन्ह दापय दापय प्रतिष्ठय प्रतिष्ठय सर्वानन्दायुर्विद्यारोग्यं प्रद प्रद वरद वरद मम रक्ष मम रक्ष पालय पालय पोषय पोषय तोषय तोषय संजीवय संजीवय आनन्दय आनन्दय सन्तोषय सन्तोषय हर्षय हर्षय ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सर्व जन मनोरंजिनी सर्व दुष्ट निर्दलिनी।

ॐ भूः स्वाहा ॐ भुवः स्वाहा ॐ स्वः स्वाहा ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा ॐ महः स्वाहा ॐ जनः स्वाहा ॐ तपः स्वाहा। ॐ सत्यः स्वाहा ॐ अतल वितल सुतल स्वाहा ॐ। ॐ ब्रह्मा विष्णु महेश्वरार्क गणेश दुर्गेन्द्रादि सुरसुराय नमः स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती चामुण्डा योगिनी कात्यायन्यादि सर्व शक्त्यै नमः स्वाहा। यत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु स्वाहा। ॐ ह्रीं बलाकिनी बले महाबले अतिबले सर्व असाध्य साधिनि स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः स्वाहा।

इस पूरे मन्त्र को शान्त रूप से जप धीरे-धीरे करना है, शास्त्रोक्त कथन है कि इसका पाठ श्रीविष्णु महायन्त्र के आगे करने से ही साधक को सिद्धि प्राप्त हो जाती है, इस मन्त्र का एक सौ बार जप करने से सभी छोटे मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। एक हजार मन्त्र जप आवृत्ति करने से सिद्धि प्राप्त होती है। दस हजार मन्त्र जप आवृत्ति करने से सब प्रकार का मंगल प्राप्त होता है और एक लाख मन्त्र जप करने से तो साक्षात् भगवान विष्णु साधक के अन्दर स्थापित हो जाते हैं।

इस प्रकार का यह महानुष्ठान सिद्ध अनुष्ठान है और सभी साधकों के लिए यह उचित रहेगा कि वे कम से कम एक बार तो अपनी पूजा में इस मन्त्र का जप रात्रि में अवश्य ही करें। साधक यदि एक दिन में सौ पाठ करने में असमर्थ हो तो इस विशेष अवधि के दो दिनों में भी इस साधना को सम्पन्न कर पूर्ण लाभ ले सकता है।

साधना सामग्री- 450/-

हेलत्वम् अनुसाधयेत्
21.08.20
या किसी भी माह की शुक्ल पक्ष की तृतीया
क्या ग्रहों का प्रेम सम्बन्धों
पर प्रभाव पड़ता है
प्रेम ही नहीं
• धन,
• स्वास्थ्य,
• भाग्योदय
और प्रेयसी के
विचारों पर भी...
तो इसका एकमात्र उपाय
शुक्राचार्य ने बताया है
हेलत्व प्रयोग

यह तो सत्य है कि ग्रहों का प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है, यह बात महज अंधविश्वास से नहीं कही जा रही है, वरन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परीक्षण किया जाए, तो यह प्रकट हो जाता है, कि मानव के जन्म लेते ही उस पर ग्रहों का प्रभाव पड़ता है, जिससे जीवन का प्रत्येक पक्ष संचालित होता है, चाहे वह प्रेम का संबंध हो, धन-सम्पत्ति हो स्वास्थ्य, भाग्योदय अथवा विवाह से संबंधित हो।

यह तथ्य वैज्ञानिकों ने भी अनुभव किया है कि प्रत्येक मानव शरीर की संरचना शरीर में निहित रासायनिक तत्वों पर निर्भर करती है। इन तत्वों का निर्धारण प्रत्येक शरीर में भिन्न-भिन्न होता है और ये तत्त्व ही अपनी ग्राह्यता व लक्षण के अनुरूप विभिन्न ग्रहों की रश्मियों को ग्रहण करते हैं, फिर व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्धारण ग्रहों के आधार पर स्वत: हो जाता है; यदि क्रूर ग्रह, शनि, राहु की प्रधानता हो, तो व्यक्ति का स्वभाव भी तद्नुरूप हो जाता है।

मैंने देखा है कि किसी भी व्यक्ति के जन्म के समय की कुण्डली को यदि सही प्रकार से बना दिया जाए, तो उस व्यक्ति का भविष्य अक्षरश: सही-सही बताया जा सकता है। मानव जीवन के कुछ पक्षों को लेकर ज्योतिषीय दृष्टि से जो मैंने अनुभव किया है, उसे प्रस्तुत कर रहा हूँ, कि किस प्रकार से ये ग्रह प्रेम संबंधों पर प्रभाव डालते हैं . . . प्रेम पर ही नहीं, धन सम्बन्धी कार्यों पर, स्वास्थ्य, भाग्योदय, विवाह और प्रेयसी के विचार पर भी।

प्रेम के क्षेत्र में मैंने दो कुण्डलियों का विवेचन किया, तो देखा कि दोनों - स्त्री और पुरुष विवाहित थे, किन्तु एक-दूसरे के सम्पर्क में आकर इस तरह से प्रणय बद्ध हो गए थे, जैसे प्रकृति इनके मिलन की योजना पहले ही बना चुकी हो; दोनों ग्रहों के प्रभाव से ही एक-दूसरे के समीप आये और इस तरह से एक-दूसरे के निकटस्थ हो गए, जैसे वे एक ही हों। दोनों की कुण्डलियों का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि दोनों का लग्नेश मंगल है और दोनों दुरधरा योग की उत्तम कुण्डलियां हैं और दोनों का ही गुरु नवमस्थ एवं उत्तम स्थिति का सूचक है। अत: ये दोनों जब भी एक-दूसरे के प्रभाव में आते, यदि ये अलग-अलग विवाहित होते, तो भी इनका संबंध अपने जीवनसाथी से अलग हो कर परस्पर स्थापित होता।

यदि पुरुष की कुण्डली में आठवें, नवें भाव में चन्द्र तथा बुध का परिवर्तन हो तथा स्त्री की कुण्डली में पांचवें, सातवें भावों में शुक्र तथा सूर्य का परिवर्तन विचारणीय है, जो पुरुष को अष्टमेश, नवमेश के विपर्यय के कारण तथा स्त्री का सप्तमेश-शुक्र का पंचमेश नीच राशिस्थ सूर्य से विपर्यय होने के कारण अधम संबंधों, भाग्य व जीवनसाथी से संबंध में परिलक्षित होता है। इनका आपसी संबंध सामाजिक दृष्टि से औचित्य हीन है, जो इसी विपर्यय के कारण हुआ है।

यदि स्त्री की कुण्डली में सप्तम भाव का नीच सूर्य की राशि में शत्रु भावी शनि-शुक्र की युति तथा सप्तम में केतु की स्थिति परिलक्षित होती हो, इस प्रकार के ग्रहों के प्रभाव से युक्त स्त्री अपनी उपलब्धियों को केवल अपने गृहस्थ में नियोजित करती है। यदि उसका किसी के साथ प्रेम संबंध स्थापित हुआ, तो भी वह उस संबंध को मात्र अपने हितों के लिए ही बनायेगी। यही स्थिति काफी अंश तक सप्तम भाव में वृष-केतु के संदर्भ में होती है, ऐसे पुरुष भी अपनी पत्नी से रहस्य बना कर प्रेम संबंध स्थापित करते हैं। ऐसे ग्रह योग वाली प्रेयसी हमेशा ही अपने स्वार्थ के लिए ही चिंतित होगी।

इसी प्रकार से व्यक्ति के धन संबंधी कार्यों पर भी ग्रह का प्रभाव पड़ता है। ज्योतिष के प्राचीन ग्रंथों में बृहस्पति को धन का कारक माना गया है, वैसे तो बृहस्पति को सर्वाधिक शुभ ग्रह माना गया है। पराशर, वराहमिहिर, कालीदास, व्यंकटेश शर्मा आदि सभी ने बृहस्पति को धनकारक ग्रह माना है।

जबकि वास्तविकता में ऐसा नहीं है, यदि बृहस्पति उच्चभाव का है, तो वह उसका खोया हुआ धन या राज्य ही लौटाता है; युधिष्ठिर का गुरु उच्चभाव का था, अत: उसे उसका खोया हुआ राज्य ही प्राप्त हुआ, उसे अन्य किसी विशेष लाभ की प्राप्ति नहीं हुई।

प्राय: यह देखने में आया है, कि जिन पुरुषों की स्त्रियां स्वस्थ नहीं रहतीं या जिन्हें पत्नी से सुख प्राप्ति में बाधायें उपस्थित होती हैं, उनकी कुण्डली में बृहस्पति की सातवीं दृष्टि शुभ नहीं रहती है तथा उनकी पत्नियां रोग्रस्त रहती हैं और उनके दाम्पत्य जीवन में बाधायें आती रहती हैं।

युवावस्था में जिन व्यक्तियों को आर्थिक संकट व्याप्त रहता है या उसका व्यवसाय स्थिर नहीं रहता अथवा वह समस्त भोग नहीं भोग पाते हैं या निरर्थक भ्रमण की स्थिति बनी रहती है, उन पर अकसर शनि की साढ़े साती का प्रभाव रहता है। ऐसे व्यक्तियों के भाग्य पर भी प्रभाव पड़ता है तथा वे जिन कार्यों में हाथ डालते हैं, वह पूर्णत: सफल नहीं हो पाता है।

इसके विपरीत जिनका भाग्योदय आश्चर्यजनक ढंग से होता है, उनका शनि ग्रह अत्यधिक उच्च, बलवान तथा मित्र ग्रही होता है, तो शनि की साढ़े साती होने पर भी विशेष प्रभाव पड़ता है। इसके विपरीत साढ़े साती होने पर यदि शनि निर्बल है, तो व्यक्ति अत्यधिक कष्टों से पीड़ित रहता है।

यदि व्यक्ति आर्थिक संकट का सामना करता है, उसकी पारिवारिक स्थिति कलहपूर्ण हो, तो उसके ऊपर शनि का कुप्रभाव ही देखने में आया है। ऐसे में व्यक्ति की वाणी असंयत तथा मानहानि की आशंका निरंतर बनी रहती है।

वैवाहिक स्थितियों में ग्रहों का प्रभाव

उपस्थित रहता है, जिनके हाथों में विवाह योग तो स्पष्ट होता है, परन्तु फिर भी विवाह सम्पन्न नहीं होता तो उनके ग्रहों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि उनकी कुण्डली में शुक्र ग्रह पर बाधक योग बना हुआ देखा गया है।

ग्रह व्यक्ति के अनुकूल न हों, तो व्यक्ति के बने-बनाये कार्यों को बिगाड़ सकते हैं; यदि वह सम्पन्न है, तो उसे खाक में मिला सकते हैं, एक सभ्य व्यक्ति पर यदि उसके ग्रहों का विपरीत प्रभाव पड़ने लगे तो वह दुराचारी, कृतघ्न तक बन सकता है, गृह दशा विपरीत हो, तो उसके समक्ष ऐसी कठिनाइयां उत्पन्न होने लग जाती हैं, जिनका कोई उपयुक्त कारण दिखाई नहीं पड़ता है फिर भी वे दिनों-दिन बढ़ती जाती हैं।

ग्रहों की स्थितियां यदि व्यक्ति पर कुप्रभाव उपस्थित कर रही हैं, तो 'शुक्रचार्य' ने इनके दुष्प्रभावों को समाप्त करने के विषय में एक अद्वितीय प्रयोग की व्याख्या की है, जिसके माध्यम से इन ग्रहों के प्रभाव को अनुकूल बनाया जा सकता है। ग्रहों के प्रभाव को शांत करने और इन्हीं ग्रहों के प्रभाव को अनुकूल बनाने के लिए शुक्राचार्य द्वारा निर्मित 'हेलत्व प्रयोग' है, जिसे सम्पन्न कर आप भी इसका प्रभाव हाथों-हाथ अनुभव कर सकते हैं -

साधना विधान

★ इस साधना में आवश्यक सामग्री 'हेलत्व यंत्र' और 'हेलत्व माला' है।

★ यह एक दिवसीय प्रयोग है। जिसे 21.08.20 या किसी भी मास की शुक्ल पक्ष तृतीया को करें।

★ साधक पीले वस्त्र धारण करें।

★ लाल रंग का वस्त्र बाजोट पर बिछाकर उस पर हेलत्व यंत्र स्थापित करें तथा यंत्र का पूजन करें -

नवग्रहस्मरण

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

हेलत्व माला से निम्न मंत्र की नौ माला मंत्र जप करें-

मंत्र

।। ॐ ह स क ल रक्षायै क्षं फट्।।

प्रार्थना

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः
सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।।

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मंगलं मंगलः
सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः।
राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः करोतून्नतिं
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः।

निवेदन और नमस्कार

।। अनया पूजया सूर्योदि नवग्रहाः प्रीयन्तां न मम ।।

प्रयोग समाप्ति के पश्चात यंत्र, माला तथा यंत्र पर चढ़ाये गए अक्षत व पुष्प को बाजोट पर बिछे कपड़े में बांधकर नदी में प्रवाहित कर दें।

- न्यौछावर 450/-

प्रपंचों से मुक्ति

महान योगी गोरखनाथ ने घोर तपस्या तथा साधना के बल पर अनेक सिद्धियां प्राप्त कर ली थीं। वह चाहते थे कि जन-कल्याण के लिए ये सिद्धियां किसी सुयोग्य संत को सौंप दी जाएं।

एक दिन गोरखनाथ जी काशी में गंगा तट पर बैठे हुए थे। उन्होंने एक दंडी संन्यासी को गंगा में अपना दंड प्रवाहित करते हुए देखा। संत उनके पास पहुंचे तथा बोले, 'महात्मन्, मैं आप जैसे योग्य संत की तलाश में था, जिन्हें साधना से प्राप्त सिद्धियां अर्पित कर सकूं। कृपया ये सिद्धियां स्वीकार कर मुझे कृतार्थ करें।' संन्यासी ने बाबा गोरखनाथ के समक्ष दोनों हाथ पसार दिए। बाबा ने उन्हें सिद्धियां अर्पित कर दीं। संन्यासी ने दोनों हाथों की अंजुलियां गंगा की ओर कर कहा, 'मां गंगे, मैं बड़े भाग्य से सांसारिक प्रपंचों से मुक्ति पा सका हूं। इन सिद्धियों को भी तुम्हें समर्पित करता हूं।'

गुरु गोरखनाथ संन्यासी की विरक्ति देखकर हतप्रभ रह गए। वह बोले, 'महात्मन्, वास्तव में सच्चे संन्यासी तो आप हैं, जिन्हें दुर्लभ सिद्धियां भी आकर्षित नहीं कर पाईं तथा उन्हें जल में अर्पित करने में एक क्षण नहीं लगने दिया।'

काली जयंती - 11.8.20

श्री काली शतनाम स्तोत्रम्

।। शिव उवाच।।

इस काली शतनाम स्तोत्र का पाठ 21 बार करें

ॐ करालवदना काली कामिनी कमलालया।
क्रियावती कोटराक्षी कामक्षा कामसुन्दरी।।1।।
कपोला च कराला च काशी कात्यायनी कुहू:।
कंकाली कालदमनी करुणा कमलाचिंता।।2।।
कादम्बरी कालहरा कौतुकी कारणप्रिया।
कृष्णा कृष्णाप्रिया कृष्णापूजिता कृष्णवल्लभा।।3।।
कृष्णाऽपराजिता कृष्णाप्रिया च कृष्णरूपिणी।
कालिका कालरात्रिश्च कुलजा कुलपण्डिता।।4।।
कुलधर्मप्रिया कामा काम्यकर्म विभूषिता।
कुलप्रिया कुलरता कुलीन परिपूजिता।।5।।
कुलज्ञा कमला पूज्या कैलाशनगभूषिता।
कुटजा केशिनी कामा कायदा कामपण्डिता।।6।।
करालास्या च कन्दर्पकामिनी कामशोभिता।
केलिप्रिया केलिरता केलिनी केलिभूषिता।।7।।
केशवस्य प्रिया केशा काश्मीरा केशवार्चिता।
कामेश्वरी कामरूपा कामदानविभूषिता।।8।।
कामहंत्री कूर्ममांसप्रिया कूर्मादि पूजिता।
केलिनी करकी कारा करकूर्म्म निषेविनी।।9।।
कटकेशरमध्यस्था कटकी कटकाचिता।
कटप्रिया कटरता कटकूर्म्म निषेविनी।।10।।
कुमारी पूजनरता कुमारीजनसेविता।
कुलाचार प्रिया कौलप्रिया कुल निषेविनी।।11।।

कुलीना कुलधर्मज्ञा कुलभीति-विमर्दिनी।
कामधर्मप्रिया कामा नित्याकामस्वरूपिणी।।12।।
कामरूपा कामहरा काममन्दिरपूजिता।
कामागारस्वरूपा च कामाख्या कामभूषिता।।13।।
क्रियाभक्तिरता कामा काञ्चिनी चैव कायदा।
कोलपुष्पाम्बरा कोला निष्कोला कलहान्तका।।14।।
कौषिकी केतिकी कुम्भी कुन्तिला दिविभूषिता।
इत्येवं शृणु चार्व्वाङ्गि रहस्यं सर्व मंगलम्।।15।।
यः पठेत् परया भक्त्या स शिवो नाऽत्र संशयः।
शतनामप्रसादेन किं न सिध्यन्ति भूतले।।16।।
ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च वासवाद्या दिवोकसः।
सहस्रपठनाद्देवि सर्वे च विगतज्वराः।।17।।
नास्ति नास्ति महामाये तन्त्रमध्ये कथञ्चन।
कृपया च विना देवि विना भक्त्या महेश्वरी।।18।।
प्रसन्ना स्यात् करालास्या स्तवपाठाद्दिगम्बरा।
सत्यं वच्मि महेशानि अतः परतरं न हि।।19।।
न गोलोक न वैकुण्ठे न च कैलाश मन्दिरे।
अतः परतरा विद्या स्तोत्रं कवचमेव च।।20।।
त्रिलोकेषु जगद्धात्री नास्यि नास्ति कदाचन।
रात्रावपि दिवाभागे सन्ध्यायां वा सुरेश्वरी।।21।।
प्रजपेत् भक्तिभावेन रहस्यं स्वतमुत्तमम्।
शतनामप्रसादेन मंत्रसिद्धिः प्रजायेत।।22।।
कुजवारे चतुर्दश्यां निशाभागे पठेत्तु यः।
स कृती सर्वशास्त्रज्ञः स कुलीनः सदा शुचिः।।23।।
सकुलज्ञः सकालज्ञः स धर्म्मज्ञो महीतले।
प्राप्नोति देवदेवेशि सत्यं परम सुन्दरी।।24।।
स्तवपाठाद् वरारोहे किं न सिध्यन्ति भूतले।
आणिमाद्यष्टसिद्धिश्च भवत्येव न संशयः।।25।।
रात्रौ बिल्वतलेऽश्वत्थमूलेऽपराजितातले।
प्रपठेत् कालिकास्तोत्रं यथाभक्त्या महेश्वरी।।
शतवार प्रपण्नान्मत्रसिद्धिं भवेद्ध्रुवम्।।26।।

।। इति श्री कालीशत नामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

नवस्फूर्ति, नवचेतना एवं सौन्दर्य बढाने के लिए

सूर्य नमस्कार

इसको करने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है

नमस्कार का शाब्दिक अर्थ है सूर्य की उपासना करना। यह सूर्य से सीधे व सरल रूप से प्राण ऊर्जा प्राप्त करने की प्रामाणिक विद्या है, जिसके अभ्यास से मानवीय प्रकृति का कोई क्षेत्र अछूता नहीं रह जाता। यह एक ऐसी यौगिक प्रक्रिया है, जो सभी प्रमुख आसनों, प्राणायाम और ध्यान के लाभ स्वयं में संजोये हुए है। जिसके वरदान स्वरूप जहां एक ओर भौतिक शरीर स्वस्थ होता है, सूक्ष्म शरीर के कमल चक्रों का प्रस्फुटन होने लगता है तथा पूरा शरीर एक विशेष सांचे में ढल जाता है, वहीं दूसरी ओर कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया भी आरम्भ हो जाती है। इस प्रकार सूर्य नमस्कार खोई हुई शक्ति वापस लाकर नवस्फूर्ति, नवजीवन प्रदान करता है और शरीर के सभी संस्थानों पर इसका चमत्कारिक प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

सूर्य नमस्कार के आधारभूत तत्त्व

सूर्य नमस्कार के तीन आधारभूत तत्त्व हैं, जिनमेंहपहला है शरीर विन्यास, जो बारह महीनों के सांकेतिक चिह्नों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

दूसरा है शारीरिक गति के साथ सम्पन्न की जाने वाली श्वास प्रक्रिया।

तृतीय है प्रत्येक विशिष्ट शरीर विन्यास के साथ मानसिक मंत्रोच्चारण करते हुए एकाग्रता एवं जागरूकता।

सूर्य नमस्कार के लिए आवश्यक निर्देशहसर्वप्रथम साधक को सूर्य नमस्कार के अभ्यास के अन्तर्गत आने वाले शारीरिक विन्यास का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए तथा उस स्थिति में श्वास का योग किस प्रकार करना है, यह मानस में स्पष्ट होना चाहिए। प्रारम्भ में यह क्रिया कठिन मालूम हो सकती है, परन्तु अभ्यास के उपरान्त प्रत्येक शारीरिक स्थिति के अनुरूप श्वास क्रिया प्राकृतिक रूप से सम्पन्न होने लगती है। श्वास क्रिया का मूल सिद्धान्त यह है, कि जब आप पीछे की ओर मुड़ते हैं, तो फेफड़े फैल जाते हैं, ऐसी स्थिति में पूरक क्रिया कर सांस अन्दर भरी जाती है। इसके विपरीत सामने की ओर झुकते हैं, तो फेफड़ों का संकुचन होता है, जिसके फलस्वरूप सांस बाहर निकलती है। केवल छठी स्थिति में बहिर्कुम्भक लगाया जाता है अर्थात् क्रिया के बाद सांस को बाहर रोका जाता है ये सारी स्थितियाँ सामर्थ्यानुसार सम्पन्न की जाती हैं।

सूर्य नमस्कार की बारह स्थितियों अर्थात् बारह आसनों पर श्वास क्रिया सहित दक्षता प्राप्त हो जाने पर उनके साथ सूर्य के बारह मंत्रों को संयुक्त करना चाहिए, मंत्रों का जप प्रत्येक आसन के साथ मानसिक रूप से हो। इसके बाद अभ्यास की अंतिम सीढ़ी पर पहुँच कर प्रत्येक अभ्यासी को विशिष्ट एकाग्रता बिन्दु का ज्ञान आवश्यक है। सूर्य नमस्कार अभ्यास के उपरान्त शिथिलीकरण क्रिया या शवासन अनिवार्य है, जो कि इस प्रक्रिया का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग है, क्योंकि इससे शरीर का तनाव दूर होकर नई शक्ति प्राप्त होती है, मन पूर्णतायुक्त, तनावरहित एवं शान्त हो जाता है।

उपयुक्त समय एवं स्थानहसूर्योदय के समय वातावरण में अपूर्व शांति रहती है, यह समय सूर्य नमस्कार के लिए उत्तम माना गया है।

आवृति संख्याहप्रारम्भिक अभ्यासी के लिए तीन आवृत्तियाँ पर्याप्त हैं, बहुत अधिक थकावट महसूस होने पर अभ्यास रोक देना चाहिए अभ्यास की गति धीमी रखनी चाहिए, धीरे-धीरे आवृत्तियों को संख्या बढ़ाकर बारह की जा सकती है, उच्च अभ्यासी इच्छानुसार 24 से 52 आवृत्तियों तक अभ्यास कर सकता है, अभ्यास की आवृत्ति संख्या धीरे-धीरे बढ़ाते रहना चाहिए।

सूर्य नमस्कार प्रक्रिया

1. प्रणामासनहसूर्य की ओर मुंह करके खड़े हो जाइये, दोनों पैर मिले हों, हाथों को जोड़कर प्रार्थना की स्थिति में छाती के सामने रखिये। कुछ क्षणों के लिए आँखों को बन्द कीजिये, मानसिक स्थिरता एवं शान्ति का अनुभव करते हुए शरीर एवं मन को पूर्णतः शिथिल कीजिये। धीरे-धीरे सांस बाहर निकालते हुए फेफड़ों की समस्त वायु बाहर निकाल कर रेचन कीजिए। 'ॐ मित्राय नमः' मंत्र से अपने सर्वश्रेष्ठ मित्र सूर्य के प्रति जागरूक होइए, अनाहत चक्र पर ध्यान केन्द्रित कीजिये। बीज मंत्रह 'ॐ ह्रां'।

2. हस्तउत्तानासनहप्रत्येक गतिविधि के प्रति पूर्ण जागरूकता रखते हुए दोनों हाथों को ऊपर उठाइये और पीछे झुकिये, हाथ एवं पीठ इस स्थिति में तने हुए रहें, सिर भी पीछे झुका हुआ हो, हथेलियां ऊपर की ओर खुली हों। हाथों को ऊपर उठाते हुए सांस फेफड़ों में भरिये अर्थात् लम्बा पूरक करिए 'ॐ रवये नमः' मंत्र से अपने शरीर को प्रकाश पुञ्ज की ओर प्रसारित करते हुए विशुद्ध चक्र पर ध्यान केन्द्रित करिये। बीज मंत्रह 'ॐ ह्रीं'।

3. पादहस्तासनहदोनों हाथों को नीचे ले जाते हुए कमर प्रदेश से सामने की ओर झुकियेहपैर और हाथ एकदम तने हुए रहें, हथेलियों को सीधे जमीन पर टिकाने का प्रयत्न कीजिये, सिर को अन्दर की ओर झुकाते हुए नासिका से घुटनों को छूने का प्रयास कीजिये। नियमित अभ्यास से यह आसन शरीर में लचीलापन ला देता है एवं अभ्यास सरल हो जाता है। सामने की ओर झुकते समय सांस पूरी तरह बाहर निकालनी चाहिए, पेट जितना हो सके भीतर की ओर दबाना चाहिए और 'ॐ सूर्याय नमः' मंत्र से क्रियाशील सूर्य भगवान का ध्यान स्वाधिष्ठान चक्र में करना चाहिए। बीज

मंत्रह 'ॐ हूं'।

4. अश्वसंचालनासनहचौथी स्थिति में दाहिने पैर को पीछे पूर्ण रूप से फैलाइये। बायां पैर एवं दोनों हाथों की स्थिति पूर्ववत् रहे, दाहिने पैर का टखना एवं घुटना भूमि को स्पर्श करे। सिर को ऊपर उठा कर मेरुदण्ड को मोड़ते हुए अर्धवृत्ताकार अवस्था में लाने का प्रयास करें। दोनों तने हुए हाथों पर शरीर का पूरा भार रहे, इस अवस्था में मुंह ऊपर उठाकर गर्दन एवं पीठ की अवस्था घोड़े की नाल के समान बनायें। सिर को ऊपर उठाकर 'ॐ भानवे नमः' मंत्र से अखिल ब्रह्माण्ड के गुण हमें सदा क्रियाशील रहने की शक्ति देंहऐसी प्रार्थना करते हुए आज्ञा चक्र में ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्रह 'ॐ हैं'।

5. पर्वतासनहहाथों एवं दाहिने पैर को पूर्व स्थिति में रखते हुए पांचवी स्थिति में सिर को नीचे झुकाएं तथा बायें पैर को पीछे सीधा लेकर दाहिने पैर के बाजू में रखें, दोनों पैरों की स्थिति समान रहेगी। नितम्ब प्रदेश को ऊपर उठायें, सिर को दोनों हाथों के बीच नीचे रखें, शरीर की अवस्था लम्बवत् हो जाएगी। नाभि की ओर दृष्टि रखें, दोनों एड़ियों को जमीन पर स्थिर रखने का प्रयास करें और पेट को अन्दर दबाते हुए सारी वायु तीव्र गति से बाहर निकाल दें। अपनी

शारीरिक एवं मानसिक प्रगति के लिए सूर्य भगवान से 'ॐ खगाय नमः' कहकर विशुद्ध चक्र में ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्रह 'ॐ ह्रीं'।

6. अष्टांगासनहहाथों एवं पैरों को पूर्व अवस्था में रखते हुए दोनों घुटनों को भूमि पर टिकाइये, हाथों के सहारे छाती एवं ठोड़ी को नीचे कीजिये, नितम्ब व पेट का भाग पृथ्वी से ऊपर उठा रहेगा। इस स्थिति में सांस नहीं ली जाती, वरन बाहर ही सांस को सामर्थ्यानुसार रोक कर रखा जाता है। 'ॐ पूष्णे नमः' मंत्र से अपने को शक्ति के स्रोत सूर्य भगवान के चरणों में पूर्णतः समर्पित करें, ध्यान मणिपूर चक्र पर केन्द्रित करें। बीज मंत्रह 'ॐ हं'।

7. भुजंगासनहहाथों पैरों को उसी स्थिति में रखते हुए सिर को ऊपर की ओर उठाते हुए हाथों को सीधा कीजिये, धड़ वाले भाग को ऊपर उठाकर सिर एवं कमर को पीछे की ओर मोड़ते हुए अर्धवृत्ताकार स्थिति बनाइये। सिर को ऊपर उठाते समय पूरी सांस अन्दर लेकर दीर्घ पूरक करें, 'ॐ हिरण्यगर्भाय नमः' मंत्र से बीज शक्ति रूपी सूर्य को नमन करते हुए स्वाधिष्ठान चक्र पर ध्यान केन्द्रित करना है। बीज मंत्रह 'ॐ हः'।

8. पर्वतासनहसिर को नीचे झुकाइये तथा नितम्ब प्रदेश को ऊपर उठाते हुए स्थिति पांच में आ जाइये, इस स्थिति में सांस बाहर निकालते हुए रेचक किया जाता है, 'ॐ मरीचये नमः' मंत्र से ब्रह्ममुहूर्त के देवता को प्रणाम करते हुए मृगतृष्णा की समाप्ति की प्रार्थना कर ध्यान विशुद्ध चक्र पर केन्द्रित करें। बीज मंत्रह 'ॐ ह्रीं'।

9. अश्वसंचालनासनहबायें पैर को सामने वापिस ले आयें, उसे दोनों हाथों के मध्य रखते हुए नितम्ब प्रदेश को नीचे लाएं, सिर व रीढ़ की हड्डी को पीछे मोड़ते हुए स्थिति चार की भांति अर्धवृत्ताकार बनायें, दृष्टि आकाश की ओर हो। ऐसा करते समय सांस अन्दर की ओर भरते हुए पूरक करें। 'ॐ

आदित्याय नमः' मंत्र से महाशक्ति को प्रणाम करते हुए आज्ञा चक्र पर ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्रह 'ॐ हैं'।

10. पादहस्तासनहसिर को नीचे कीजिये, दाहिने पैर को सामने लाइये, नितम्ब वाले भाग को उठाते हुए पैरों को सीधा कीजिये, स्थिति तीन की तरह नासिका से घुटनों का स्पर्श करें तथा वायु को बाहर निकालते हुए पूर्ण रेचक करें। 'ॐ सवित्रे नमः' मंत्र से सूर्य के मातृ रूप कल्याणकारी भाव से विनती करते हुए स्वाधिष्ठान चक्र पर ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्रह 'ॐ हूं'।

11. हस्तउत्तानासनहइस स्थिति में धड़ को ऊपर उठायें, हाथों को ऊपर उठाते हुए पीछे की ओर झुकते हुये दूसरी स्थिति में आ जाएं धड़ को ऊपर उठाते समय सांस अन्दर की ओर लेते हुये पूरक करें। 'ॐ अर्काय नमः' मंत्र से शक्ति प्रणेता सूर्य को नमस्कार करते हुये ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्रह 'ॐ ह्रीं'।

12. प्रणामासनहप्रथम स्थिति की भांति शरीर को सीधा रखते हुए दोनों हाथों को जोड़कर हृदय के सामने प्रार्थना मुद्रा में नेत्र बन्द करें और सांस बाहर छोड़ते हुए रेचक कर सामान्य अवस्था में आयें। 'ॐ भास्कराय नमः' मंत्र से सूर्य नारायण को प्रणाम करते हुए अनाहत चक्र पर ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्रह 'ॐ हां'।

शवासन : शिथिलीकरण क्रिया

सूर्य नमस्कार के बाद शवासन में सीधे लेटकर पूरा शरीर ढीला छोड़ दें, नेत्र बंद कर लें, शरीर में कोई हलचल न हो। अपनी चेतना को पैरों के पंजों से लेकर क्रमशः सिर तक ले जाकर पूर्ण शिथिलता की भावना देकर तनाव रहित स्थिति का अनुभव करें। शवासन सूर्य नमस्कार के समय का आधा होना चाहिए। इस सूर्य नमस्कार विधि का जीवन में नियमित अभ्यास कर शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करें।

Bhuvaneshwari Sadhana

Wealth Unlimited

The Sadhak who accomplishes this ritual becomes rich and powerful like Lord Indra ! It is said in "Rig Veda" that only through the good Karmas of past lives and grace of the Guru can one obtain Bhuvaneshwari Sadhana.

When Lord Ram was being crowned his Guru Vashistth said to him-O Ram! In this world a poor man is treated with contempt even by relatives while a rich man is honoured even by strangers.

He further stated-in the world of Sadhanas there is no more powerful Sadhana for becoming prosperous than that of Goddess Bhuvaneshwari.

Lord Ram did just that and his reign was called Ram-rajya in which there was prosperity and joy everywhere.

Even Lord Krishana accomplished this Sadhana and was able to found the wonderful city of Dwarka which was full of riches and wealth.

Lord Shiva has said that even a person who has been fated to be poor can become rich through this wonderful Sadhana.

Bhuvaneshwari is the Goddess who rules over the riches of the whole world and She is worshipped even by the gods and Yogis.

According to the great Yogi Gorakhnath following are the benefits of this Sadhana.

After this Sadhana has been done wealth starts to flow into one's life on its own. The person gains a magnetic personality and is easily able to influence others, even his enemies.

He is ever protected from peril by the kind Goddess and he remain healthy and fit all through life. He also leads a happy family life and there never is any paucity in his life.

He gains respect and fame in the society and is honoured for his work. Bhuvaneshwari Sadhana is a key to success in life no matter which field one has chosen.

The Sadhana must be tried on a **full moon night** between 9 p.m. and midnight. Have a bath and wear yellow clothes. Sit facing North on a yellow seat.

Cover a wooden seat with a yellow cloth.

On a mound of rice grains place **Bhuvaneshwari Yantra.** On the Yantra place a **Bhuvantray rosary**. Offer vermilion, rice grains and rose petals on the Yantra.

Light ghee lamp and incense. On the right hand side of the Yantra place an **Eishwarya Gutika.**

Chant one round of Guru Mantra.

Then chant 21 rounds of the following Mantra with a **Bhuvantray rosary.**

Om Hreem Shreem Kleem Bhuvaneshwaryei Namah.

After this chant one round of Guru Mantra. Do this regularly for three days. Wear the Gutika in a thread around your neck. Drop the Yantra and rosary bundle in a river or pond.

Offer food and gifts to a girl below ten years in age. After eleven days drop the Gutika in the river too. This is really a very effective Sadhana that cannot fail even in the present age of Kaliyug.

Sadhana articles- 450/-

Riddance From Ailments

A life without enthusiasm, energy and joys is useless. But such is the onslaught of tensions and worries today that it is very easy to become prey to ailments both physical and mental.

A weak body and mind prevent one from leading life to the full. One is not able to generate enough energy that could help one overcome daily challenges and maintain an enthusiastic approach to work and life.

Medicines do help but sometimes are not enough to boost the spirits and make one feel really dynamic. For achieving real success in life it is important to be really healthy and fit. And for those who have tried all means and cannot get rid of physical problems the only way left is to supplicate to the divine.

And the divine forces do listen to the earnest pleas of true and devoted Sadhaks. One of the most powerful deity who can help one attain a healthy body and mind is Lord Hanuman.

Our ancient Rishis knew that the future generations would be very weak and incapable of freeing themselves from ailments. So they devised some wonderful Sadhanas one of which is the following Bajrang Sadhana.

It is said that one who chants the name of the Lord is freed of all diseases and pain. Hanuman is a deity who banishes ailments, laziness and fills the Sadhak with strength and power.

A true devotee of Lord Hanuman is bleassed with success and fortune in life and the greatest fortune is perfect health.

Bajrang is another name of the Lord and through the following Sadhana of the Lord one can gain health, intelligence and spiritual upliftment. After trying this Sadhana life starts to change for the better, for each moment one feels dynamic and strong.

Try this Sadhana only on a **Saturday** early in the morning. Have a bath and prepare Choorma with fresh chapatis, ghee and jaggery.

Wear fresh red clothes. Sit facing North on a red mat. First of all **chant four rounds of Guru Mantra.**

Cover a wooden seat with red cloth and on it make a mound of rice grains. On it place the **Bajrang Yantra.**

On it offer sandalwood paste and flowers. Also offer Choorma to the Lord.

Next light a ghee lamp and incense.

Then chant the following Mantra meditating on the form of Lord Hanuman.

Atulit Baldhaamam Hemsheilaabh-deham, Danuj-van-krishaanum Gyaani-naamagra-gannyam. Sakalgunn Nidhaanam Vaanaraannaamdheesham. Raghupriya-bhaktam Vaatjaatam Namaami.

Then chant 11 round of the following mantra with **Moonga rosary.**

Om Hoom Bajrang Siddhaye Hoom

The next day drop the Yantra & rosary in a river or pond. Eat the Choorma and give it to family members. If tried with devotion this Sadhana simply cannot fail. Through it one becomes free of even chronic ailments. It is a real boon for every Sadhak.

Sadhana articles- 450/-

उपहारस्वरूप प्राप्त करें

शक्तिपात युक्त दीक्षा

भुवन अर्थात् इस संसार की स्वामिनी भुवनेश्वरी जो ह्रीं बीज मंत्र धारिणी है, वे भुवनेश्वरी ब्रह्मा की अधिष्ठात्री देवी हैं। महाविद्याओं में प्रमुख भुवनेश्वरी ज्ञान और शक्ति दोनों की समन्वित देवी मानी जाती हैं। जो भुवनेश्वरी सिद्धि प्राप्त करता है उस साधक का आज्ञा चक्र स्पन्दित हो जाता है और उसकी ज्ञान शक्ति, चेतना शक्ति, स्मरण शक्ति विकसित हो जाती है। भुवनेश्वरी को जगत्धात्री अर्थात् जगत सुख प्रदान करने वाली देवी कहा गया है। दरिद्रतानाश, कुबेर सिद्धि, रतिप्रीति प्राप्ति के लिए भुवनेश्वरी साधना उत्तम मानी गई है। इस महाविद्या की आराधना एवं दीक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्ति की वाणी में सरस्वती का वास होता है।

मंत्र

।। ह्रीं ।।

योजना केवल 25 एवं 30 अगस्त 2020 इन दो दिन के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- ' नारायण मंत्र साधना विज्ञान, जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 64 पर देखें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

पूज्य सद्गुरुदेव के आशीर्वाद तले प्रकाशित

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

कृपया ध्यान दें

1. यदि आप साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं।
2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप निम्न वाट्सअप नम्बर पर मैसेज भेजें।

8890543002

450 रुपये तक की साधना सामग्री वी.पी.पी से भेज दी जाती है।

परन्तु यदि आप साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं तो सामग्री की न्यौछावर राशि में डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खातें में जमा करवा दें एवं जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण एवं अपना पूरा पता, फोन नम्बर के साथ हमें वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे जिससे आपको साधना सामग्री अधिकतम 5 दिनों में प्राप्त हो जायेगी।

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम	: नारायण साधना
बैंक का नाम	: स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड	: SBIN0000659
खाता नम्बर	: 37219989876

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/-

भुवनेश्वरी यंत्र + माला
405 + 45 (डाक खर्चा) = 450

हनुमान यंत्र + माला
405 + 45 (डाक खर्चा) = 450

1 वर्ष सदस्यता 405/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 2432209, 7960039

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34
फोन नं. : 011-27354368, 27352248

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2019-2021
Licensed to post without prepayment
License No. RJ/WR/WPP/14/2018-
Valid up to 31.12.2021

Printing Date : 15-16 July, 2020
Posting Date : 21-22 July, 2020
Posting Office At Jodhpur RMS

आप आने वाली इन विशिष्ट तिथियों पर निम्न विशेष शक्तिपात दीक्षाओं को पूज्य गुरुदेव से प्राप्त कर सकते हैं-

11.8.20	महाकाली जयंती	महाकाली दीक्षा
21.8.20	हरितालिका तीज	गृहस्थ सुख सौभाग्य दीक्षा
25.8.20	अष्टलक्ष्मी जयंती	अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा
30.8.20	भुवनेश्वरी जयंती	महाविद्या भुवनेश्वरी दीक्षा
01.9.20	अनंत चतुर्दशी	श्री विष्णु स्थापन दीक्षा
	श्राद्ध दिवसों में	सर्व पितृ मुक्ति दीक्षा

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002